FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 1 of 122

CLASS 12 · CBSE HINDI CORE (302)

Hindi Core Solved Board Papers

हिंदी आधार (302) – अध्यायवार और प्रश्न-पत्रवार हल सहित बोर्ड प्रश्न

2016–2026

- ✓ भाग क : हर प्रश्न अध्याय और लेखन-रूप के अनुसार, अंकों के क्रम में, पूर्ण उत्तर सहित
- ✓ भाग ख : पूर्ण बोर्ड प्रश्न-पत्र, हर पत्र के बाद उसके हल
- ✓ हर अध्याय के लिए वर्षवार अंक-भार तालिका और सबसे अधिक पूछे गए विषय
- ✓ अपठित गद्यांश-काव्यांश, पठित अंश और रचनात्मक लेख के आदर्श उत्तर
- ✓ अंक-योजना के बिंदुओं पर आधारित पूर्ण उत्तर

notesbazar.in

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 2 of 122

WHAT YOU GET

CBSE हिंदी आधार प्रश्न-पत्र 2016–2026. हर प्रश्न का हल. अध्यायवार.

129	2210	9	26	365
board papers	solved questions	years · 2016–26	chapters	MCQs solved

✗ प्रश्न अलग-अलग वर्षों में बिखरे	→ ✓ सब एक जगह, अध्यायवार
✗ पता नहीं पहले क्या पढ़ें	→ ✓ अंक-भार + सबसे अधिक पूछे गए विषय
✗ छोटे उत्तर, कम अंक	→ ✓ अंक-योजना के अनुसार पूर्ण उत्तर
✗ लेखन के आदर्श उत्तर नहीं	→ ✓ रचनात्मक लेख और पत्रकारिता के हल

PART A — A — Chapter-wise
- ✓ Weightage table
- ✓ Most-asked topics
- ✓ Every question + solution

PART B — B — Full papers
- ✓ Exactly as set by CBSE
- ✓ Solutions after each paper
- ✓ Timed 3-hour practice

2026 · 2/1/1	2026 · 2/1/2	2026 · 2/1/3	2026 · 2/7/1	2025 · 2/1/1
2025 · 2/4/1	2025 · 2/S/1	2024 · 2/1/1	2024 · 2/S/1	2023 · 2/1/1
2023 · 2/C/1	2022 · 2/1/1	2022 · 2/6/1	2019 · 2/1/1	2018 · 2/1
2017 · 2/1/1	2016 · 2/1/1			

Notes Bazar
Complete Notes · Solved PYQs
CLASS 6–12 · ALL SUBJECTS

100% QUESTIONS SOLVED

Made for board toppers



FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 3 of 122

How to use this book

भाग क में किसी अध्याय या लेखन-रूप के सभी बोर्ड प्रश्न एक साथ हैं । अध्याय पढ़ने के बाद बिना उत्तर देखे प्रश्न हल करें, फिर मिलान करें और गलत प्रश्नों को एक सप्ताह बाद दोहराएँ ।

हर प्रश्न के साथ लिखा है कि वह कहाँ पूछा गया, जैसे **CBSE 2026 · 2/1/1 · Q12** । अंक-भार तालिका देखकर तय करें कि पहले क्या दोहराना है ।

भाग ख में पूरे प्रश्न-पत्र हैं । परीक्षा से पहले घड़ी लगाकर 3 घंटे में एक पत्र हल करें और फिर दिए गए हलों से जाँचें ।

उत्तर बोर्ड की अंक-योजना के अनुसार लिखे गए हैं : हर अंक के लिए एक बिंदु, पाठ के उदाहरण या पंक्ति के साथ । शब्द-सीमा का ध्यान रखें ।

Contents

Part A · Chapter-wise questions with solutions

1. अपठित गद्यांश एवं काव्यांश 90 Qs
2. रचनात्मक लेख 79 Qs
3. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन 43 Qs
4. कहानी का नाट्य रूपांतरण 59 Qs
5. रेडियो नाटक 53 Qs
6. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 144 Qs
7. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप 270 Qs
8. विशेष लेखन : स्वरूप और प्रकार 80 Qs
9. आत्म-परिचय, एक गीत 56 Qs
10. पतंग 48 Qs
11. कविता के बहाने, बात सीधी थी पर 82 Qs
12. कैमरे में बंद अपाहिज 46 Qs
13. उषा 49 Qs
14. बादल राग 48 Qs
15. कवितावली, लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप 79 Qs
16. रुबाइयाँ, गज़ल 39 Qs
17. छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख 52 Qs
18. भक्तिन 91 Qs
19. बाज़ार दर्शन 83 Qs
20. काले मेघा पानी दे 72 Qs
21. पहलवान की ढोलक 84 Qs
22. शिरीष के फूल 72 Qs
23. श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज 101 Qs
24. सिल्वर वैडिंग 129 Qs
25. जूझ 126 Qs
26. अतीत में दबे पाँव 135 Qs

Part B · Full board papers, each followed by its solutions

1. CBSE 2026 · 2/1/1 solutions
2. CBSE 2026 · 2/1/2 solutions
3. CBSE 2026 · 2/1/3 solutions
4. CBSE 2026 · 2/7/1 solutions
5. CBSE 2025 · 2/1/1 solutions
6. CBSE 2025 · 2/4/1 solutions
7. CBSE 2025 · 2/S/1 solutions
8. CBSE 2024 · 2/1/1 solutions
9. CBSE 2024 · 2/S/1 solutions
10. CBSE 2023 · 2/1/1 solutions
11. CBSE 2023 · 2/C/1 solutions
12. CBSE 2022 · 2/1/1 solutions
13. CBSE 2022 · 2/6/1 solutions
14. CBSE 2019 · 2/1/1 solutions
15. CBSE 2018 · 2/1 solutions
16. CBSE 2017 · 2/1/1 solutions
17. CBSE 2016 · 2/1/1 solutions

2210 questions in all. प्रश्न CBSE कक्षा 12 हिंदी आधार (302) के 2016 से 2026 तक के सभी प्रश्न-पत्र-सेटों से लिए गए हैं जो हमें मिल सके : मुख्य परीक्षा की हर शृंखला (2016 और 2017 के दिल्ली, बाहरी और विदेश के पत्र भी) और 2022 से 2026 के कंपार्टमेंट पत्र । 2020 के पत्र CBSE की साइट पर उपलब्ध नहीं हैं और 2021 में बोर्ड परीक्षा नहीं हुई । उत्तर CBSE की अंक-योजना के बिंदुओं पर आधारित हैं; जिन पत्रों की अंक-योजना उपलब्ध नहीं है (2019 और कुछ कंपार्टमेंट पत्र), उनके उत्तर NCERT पाठ्यपुस्तकों के आधार पर लिखे गए हैं । जो पाठ और लेखन-रूप अब पाठ्यक्रम में नहीं हैं, वे भाग क से बाहर हैं और भाग ख में चिह्नित हैं, जहाँ उनके भी पूर्ण उत्तर हैं ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 4 of 122

CHAPTER 1

अपठित गद्यांश एवं काव्यांश

Board weightage 2016–2026

Year	2016	2017	2018	2019	2022	2023	2024	2025	2026
Questions per paper	2	2	2	3	–	3	2	2	2
Marks per paper	20	20	20	20	–	20	15	18	18

Most asked topics

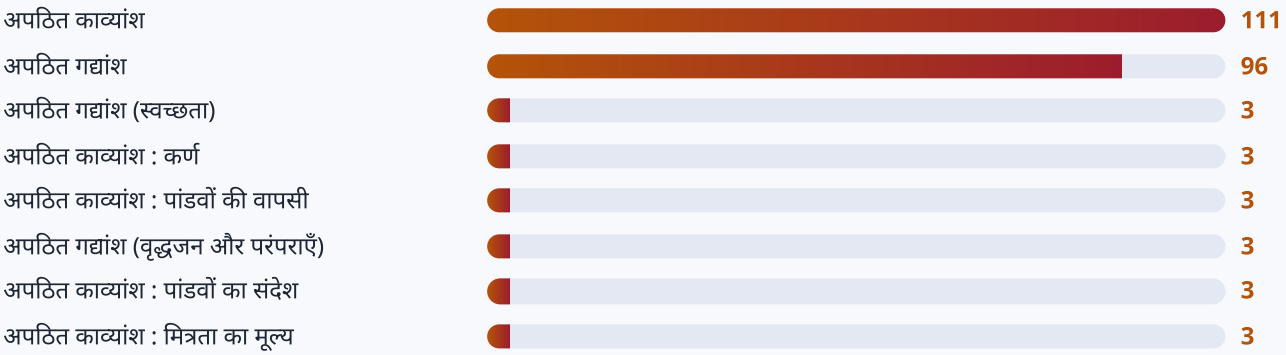

90 different questions from 111 papers. Repeated questions are shown once with every year they were asked.

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 5 of 122

4 अंक : लगभग 80 शब्द

CBSE 2019 · 2/1/1 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/1/2 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/1/3 · Q2(a) **asked 3 times** **4 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम !

कुछ कुंठित और कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त-तूणीर हुए
– उनको प्रणाम !

जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार
– उनको प्रणाम !

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे
– उनको प्रणाम !

कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल
– उनको प्रणाम !
(क) कवि असफल लोगों को ही क्यों प्रणाम कर रहा है ? (1)
(ख) छोटी सी नौका से सागर पार करने की कोशिश करने वालों का क्या महत्त्व माना है ? (1)
(ग) उच्च शिखर की ओर बढ़ते हुए हिम समाधि लेने का भावार्थ क्या है ? (1)
(घ) समाज किन लोगों को भी भुला देता है ? (1)

Solution

(क) कवि असफल लोगों को इसलिए प्रणाम करता है कि वे सफल भले न हुए हों, पर उन्होंने ऊँचे लक्ष्य के लिए साहस, त्याग और पूरे उत्साह से प्रयास किया; उनका संघर्ष और बलिदान प्रेरणा देने वाला है ।
(ख) साधन सीमित होने पर भी जिन्होंने छोटी-सी नाव से सागर पार करने का दुस्साहस किया, कवि उनके साहस, संकल्प और दृढ़ इच्छा-शक्ति को महान मानता है; भले ही उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई, वे आदर के पात्र हैं ।
(ग) ऊँचे लक्ष्य (शिखर) को पाने के प्रयास में बर्फ़ में दबकर अपने प्राण दे देना, अर्थात् महान उद्देश्य के लिए संघर्ष करते हुए जीवन का बलिदान कर देना ।
(घ) समाज उन वीरों और क्रांतिकारियों को भी भुला देता है जो देश के लिए फाँसी पर झूल गए ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 6 of 122

CBSE 2019 · 2/1/1 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/1/2 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/1/3 · Q2(b) **asked 3 times** **4 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
क्या कुटिल व्यंग्य ! दीनता वेदना से अधीर, आशा से जिनका नाम रात-दिन जपती है,
दिल्ली के वे देवता रोज कहते जाते, 'कुछ और धरो धीरज, किस्मत अब छपती है ।'

किस्मतें रोज छप रहीं, मगर जलधार कहाँ ? प्यासी हरियाली सूख रही है खेतों में,
निर्धन का धन पी रहे लोभ के प्रेत छिपे, पानी विलीन होता जाता है रेतों में ।

हिल रहा देश कुत्सा के जिन आघातों से, वे नाद तुम्हें ही नहीं सुनाई पड़ते हैं ?
निर्माणों के प्रहरियो ! तुम्हें ही चोरों के काले चेहरे क्या नहीं दिखाई पड़ते हैं ?

तो होश करो, दिल्ली के देवो, होश करो, सब दिन तो यह मोहिनी न चलने वाली है,
होती जाती है गर्म दिशाओं की साँसें, मिट्टी फिर कोई आग उगलने वाली है ।
(क) गरीबों के प्रति कुटिल व्यंग्य क्या है ? (1)
(ख) निर्धन की त्रासदी क्या है ? (1)
(ग) शासक वर्ग को 'दिल्ली के देवता' क्यों कहा गया है ? (1)
(घ) कवि क्या चेतावनी दे रहा है ? (1)

Solution

(क) जो गरीब आशा से जिन शासकों का नाम रात-दिन जपते हैं, वही 'दिल्ली के देवता' उनसे रोज़ कहते हैं कि "थोड़ा और धीरज रखो, तुम्हारी किस्मत अब छप रही है" – अर्थात् झूठे आश्वासन देकर उनकी बेबसी का मज़ाक उड़ाना ही कुटिल व्यंग्य है ।
(ख) निर्धन की त्रासदी यह है कि योजनाओं और वादों के रूप में किस्मतें तो छप रही हैं, पर राहत की जलधार कहीं नहीं पहुँचती; खेत प्यासे सूख रहे हैं और उसके धन को लोभ के प्रेत (भ्रष्ट लोग) पी जाते हैं ।
(ग) शासक वर्ग को 'देवता' इसलिए कहा गया है कि जनता उन्हें अपना भाग्य-विधाता मानकर उनसे आशा रखती है और उनका नाम जपती है; पर वे देवताओं की तरह ऊँचे आसन पर बैठे जनता की पुकार से अनजान हैं (यह व्यंग्य है) ।
(घ) कवि चेतावनी देता है कि शासक होश में आएँ; जनता को छलने वाली यह मोहिनी सदा नहीं चलेगी । गर्म दिशाओं की साँसें अर्थात् जनता का असंतोष बढ़ रहा है और शोषित जनता की मिट्टी (धरती) कभी भी क्रांति की आग उगल सकती है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 7 of 122

CBSE 2019 · 2/2/1 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/2/2 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/2/3 · Q2(a) **asked 3 times** **4 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
यादें होती हैं गहरी नदी में उठी भँवर की तरह
नसों में उतरती कड़वी दवा की तरह
या ख़ुद के भीतर छिपे बैठे साँप की तरह
जो औचक्के में देख लिया करता है
यादें होती हैं जानलेवा ख़ुशबू की तरह
प्राणों के स्थान पर बैठे जानी दुश्मन की तरह
शरीर में धँसे उस काँच की तरह
जो कभी नहीं दिखता
पर जब-तब अपनी सत्ता का
भरपूर एहसास दिलाता रहता है
यादों पर कुछ भी कहना
ख़ुद को कठघरे में खड़ा करना है
पर कहना मेरी मजबूरी है ।
(क) यादों को नदी में उठी भँवर की तरह क्यों कहा गया है ? (1)
(ख) कवि के पास ख़ुद को कठघरे में खड़ा करने की मजबूरी क्या है ? (1)
(ग) यादों को शरीर में धँसे काँच जैसा मानने के पीछे क्या तर्क हो सकता है ? (1)
(घ) यादों को जानी दुश्मन की तरह मानने का क्या आशय है ? (1)

Solution

(क) जैसे गहरी नदी में उठी भँवर आदमी को अपने भीतर खींचकर घुमाती और डुबो देती है, वैसे ही यादें मन को अपने चक्कर में खींचकर बेचैन कर देती हैं और उनसे निकलना कठिन होता है ।
(ख) यादों पर कुछ भी कहने का अर्थ है अपने अतीत और अपनी कमज़ोरियों को स्वीकारना, जो अपने आप को कठघरे में खड़ा करने जैसा है; फिर भी मन की पीड़ा इतनी तीव्र है कि कवि कहे बिना रह नहीं सकता, यही उसकी मजबूरी है ।
(ग) शरीर में धँसा काँच दिखाई नहीं देता, पर जब-तब चुभकर अपने होने का एहसास कराता है । यादें भी दिखती नहीं, पर समय-समय पर कसक देती रहती हैं ।
(घ) जिस प्रकार जानी दुश्मन प्राणों के पास बैठा चैन से जीने नहीं देता, उसी प्रकार यादें हमारे जीवन के सबसे निकट रहकर पीछा नहीं छोड़तीं और बार-बार कष्ट पहुँचाती हैं ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 8 of 122

CBSE 2019 · 2/2/1 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/2/2 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/2/3 · Q2(b) asked 3 times 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
गुलाब का फूल है हमारा पढ़ा-लिखा
मैंने उसे काफ़ी उलट-पुलट कर देखा है
मुझे तो वह ऐसा ही दिखा
सबसे बड़ा सबूत उसके गुलाब होने का यह है
की वह गाँव में जाकर बसने के लिए तैयार नहीं है
गाँव में उसकी प्रदर्शनी कौन कराएगा
वहाँ वह अपनी शोभा की प्रशंसा किससे कराएगा
वह फूलने के बाद किसी फ़सल में थोड़े ही बदल जाता है
मूरख किसान को फूलने के बाद
फ़सल देने वाला ही तो भाता है,
गाँव में इसलिए ठीक है अलसी और सरसों के फूल ।
बीच-बीच में यह प्रस्ताव कि गुलाब गाँव में चिकित्सा करे या पढ़ाए
पेश करने में कोई हर्ज़ नहीं है
मगर साफ़ समझ लेना चाहिए कि गुलाब का यह फ़र्ज़ नहीं है कि
गाँव जाकर खिले, अलसी और सरसों वगैरा से मिले
ढँक जाए वहाँ की धूल से
और वक्तन बवक्तन अपनी प्रदर्शनी न कराए
आमीन, गुलाब पर ऐसा वक्त कभी न आए ।
(क) गुलाब और अलसी-सरसों के फूलों से कवि का क्या अभिप्राय है ? (1)
(ख) पढ़े-लिखे गुलाब के गाँवों में जाकर बसने में क्या समस्याएँ हैं ? (1)
(ग) 'मूरख किसान' को क्या भाता है और क्यों ? (1)
(घ) 'आमीन, गुलाब पर ऐसा वक्त कभी न आए' से कवि का तात्पर्य क्या है ? (1)

Solution

(क) गुलाब से कवि का अभिप्राय शहरों में रहने वाले पढ़े-लिखे, सुविधाभोगी और दिखावा पसंद वर्ग से है; अलसी-सरसों के फूल गाँव के साधारण, श्रमजीवी और उपयोगी लोगों के प्रतीक हैं ।
(ख) गाँव में गुलाब (शिक्षित वर्ग) को अपनी प्रदर्शनी कराने वाला और अपनी शोभा की प्रशंसा करने वाला कोई नहीं मिलेगा, वहाँ की धूल में उसकी चमक ढँक जाएगी; यानी गाँव में सुविधाएँ और सम्मान की कमी उसके लिए समस्या है ।
(ग) 'मूरख किसान' को फूलने के बाद फ़सल देने वाला (अलसी-सरसों जैसा) पौधा भाता है, क्योंकि उसके लिए सुंदरता नहीं, उपयोगिता और पेट भरने वाली फ़सल महत्त्वपूर्ण है ।
(घ) कवि व्यंग्य में कहता है कि गुलाब (पढ़े-लिखे वर्ग) पर कभी ऐसा समय न आए कि उसे गाँव जाकर काम करना पड़े और वह धूल से ढँक जाए; इसमें शिक्षित वर्ग की गाँव के प्रति उदासीनता और स्वार्थपरता पर कटाक्ष है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 9 of 122

CBSE 2019 · 2/3/1 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/3/2 · Q2(a) **asked 2 times** **4 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

यह किसी ने नहीं बताया है
कि बाढ़ और वर्षा की दया पर टिकी
छोटी जोत की खेती से कैसे गुज़ारा होता था पुरखों का
क्या स्त्रियों और बेटियों को मिल पाता था भर-पेट खाना ?
बचपन में बीमार रहने वाले मेरे पिता
बहुत पढ़-लिख भी नहीं पाए थे
वे तो जनम से ही चुप्पा थे
हर समय अपने सीने में
नफ़रत और प्रतिहिंसा की आग धधकाए रहते थे
और जो कभी भुभुका उठती थी
तो पूरा घर झुलस जाता था
उनकी पीड़ा थी कोशी की तरह प्रचंड वेगवती
जिसे भाषा में बाँधने की कभी कोशिश नहीं की उन्होंने ।

(क) खेती को बाढ़ और वर्षा पर टिकी क्यों कहा गया ? (1)

(ख) कविता घर की महिलाओं और बेटियों को भर-पेट खाना मिलने न मिलने का क्या संकेत करती है ? (1)

(ग) आपके विचार से पिता के मन में घृणा और प्रतिहिंसा होने का क्या कारण हो सकता है ? (1)

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए :

'जो कभी भुभुका उठती थी
तो पूरा घर झुलस जाता था ।' (1)

Solution

(क) क्योंकि छोटी जोत की यह खेती सिंचाई के साधनों के अभाव में पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर थी; बाढ़ और वर्षा अनुकूल हो तो फ़सल होती थी, अन्यथा नष्ट हो जाती थी ।

(ख) यह संकेत करती है कि अभाव की स्थिति में परिवार की स्त्रियों और बेटियों के साथ भेदभाव होता था; पहले पुरुषों को भोजन मिलता था और स्त्रियों को प्रायः आधा-अधूरा या भूखा रहना पड़ता था ।

(ग) पिता बचपन से बीमार रहे, पढ़-लिख नहीं सके; ग़रीबी, अभाव, शोषण और अन्याय के अपमान को वे सहते रहे । इन्हीं कारणों से उनके मन में समाज और परिस्थितियों के प्रति घृणा और प्रतिहिंसा भर गई थी ।

(घ) पिता के मन में दबी नफ़रत और प्रतिहिंसा की आग जब कभी भड़क उठती थी, तब उसकी तपिश (क्रोध, कटु व्यवहार और भय) से पूरा घर आहत और दुखी हो जाता था ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 10 of 122

CBSE 2019 · 2/3/1 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/3/2 · Q2(b) **asked 2 times** **4 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मेरे देश
तेरा चप्पा-चप्पा मेरा शरीर है
तेरा जल मेरा मन है
तेरी वायु मेरी आत्मा है
इन सबसे मिलकर ही
तू बनता है मेरे देश,
मैं और तू– दो तो नहीं हैं
शरीर, आत्मा, मन
एक ही प्राणी के
स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं
मैं इन्हें बँटने नहीं दूँगा
मैं इन्हें लुटने नहीं दूँगा
मैं इन्हें मिटने नहीं दूँगा !

(क) 'मैं और तू– दो तो नहीं हैं' – किसे कहा गया है और क्यों ? (1)
(ख) कवि ने देश से अपना तादात्म्य कैसे जोड़ा है ? (1)
(ग) शरीर, आत्मा और मन का उल्लेख क्यों किया गया है ? (1)
(घ) कवि क्या संकल्प व्यक्त करता है ? (1)

Solution

(क) यह कवि ने अपने और अपने देश के लिए कहा है, क्योंकि देश का कण-कण कवि के शरीर, मन और आत्मा जैसा है; दोनों एक ही प्राणी के अंग हैं, अलग नहीं ।

(ख) कवि ने देश के चप्पे-चप्पे को अपना शरीर, देश के जल को अपना मन और देश की वायु को अपनी आत्मा कहकर देश से पूर्ण तादात्म्य जोड़ा है ।

(ग) शरीर, आत्मा और मन किसी भी प्राणी के स्थूल और सूक्ष्म अंग हैं; इनका उल्लेख यह दर्शाने के लिए है कि देश और कवि का संबंध भौतिक और आत्मिक – दोनों स्तरों पर अभिन्न है ।

(घ) कवि संकल्प करता है कि वह अपने देश को न बँटने देगा, न लुटने देगा और न मिटने देगा ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 11 of 122

CBSE 2019 · 2/3/3 · Q2(a) 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)

यह किसी ने नहीं बताया है
कि बाढ़ और वर्षा की दया पर टिकी
छोटी जोत की खेती से कैसे गुज़ारा होता था पुरखों का
क्या स्त्रियों और बेटियों को मिल पाता था भर-पेट खाना ?
बचपन में बीमार रहने वाले मेरे पिता
बहुत पढ़-लिख भी नहीं पाए थे
वे तो जन्म से ही चुप्पा थे
हर समय अपने सीने में
नफ़रत और प्रतिहिंसा की आग धधकाए रहते थे
और जो कभी भुभुका उठती थी
तो पूरा घर झुलस जाता था
उनकी पीड़ा थी कोशी की तरह प्रचंड वेगवती
जिसे भाषा में बाँधने की कभी कोशिश नहीं की उन्होंने ।

(क) खेती को बाढ़ और वर्षा पर टिकी क्यों कहा गया ?
(ख) कविता घर की महिलाओं और बेटियों को भर-पेट खाना मिलने न मिलने का क्या संकेत करती है ?
(ग) आपके विचार से पिता के मन में घृणा और प्रतिहिंसा होने का क्या कारण हो सकता है ?
(घ) भाव स्पष्ट कीजिए :
'जो कभी भुभुका उठती थी
तो पूरा घर झुलस जाता था ।'

Solution

(क) छोटी जोत की खेती में सिंचाई के अपने साधन नहीं थे । फ़सल पूरी तरह वर्षा पर निर्भर थी; ज़्यादा पानी से बाढ़ आती और कम से सूखा पड़ता । इसलिए खेती को बाढ़ और वर्षा की दया पर टिकी कहा गया है । (1)

(ख) कविता संकेत करती है कि गरीबी और अभाव के दिनों में घर की स्त्रियों और बेटियों के साथ भेदभाव होता था; पहले पुरुषों को खिलाया जाता था और स्त्रियों को अकसर भर-पेट खाना नहीं मिलता था । (1)

(ग) पिता का बचपन बीमारी और अभाव में बीता, वे पढ़-लिख नहीं पाए, गरीबी और विवशता ने उन्हें जीवन भर कष्ट दिया । समाज और परिस्थितियों के अन्याय के प्रति उनके मन में जमा गुस्सा ही नफ़रत और प्रतिहिंसा बन गया । (1)

(घ) पिता के मन में दबी पीड़ा और क्रोध की आग कभी-कभी भड़क उठती थी । तब उनके क्रोध से पूरे घर का वातावरण तनावपूर्ण और कष्टदायक हो जाता था, सब उससे प्रभावित होते थे । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 12 of 122

CBSE 2019 · 2/3/3 · Q2(b) 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)

मेरे देश
तेरा चप्पा-चप्पा मेरा शरीर है
तेरा जल मेरा मन है
तेरी वायु मेरी आत्मा है
इन सबसे मिलकर ही
तू बनता है मेरे देश,
मैं और तू– दो तो नहीं हैं
शरीर, आत्मा, मन
एक ही प्राणी के
स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं
मैं इन्हें बँटने नहीं दूँगा
मैं इन्हें लुटने नहीं दूँगा
मैं इन्हें मिटने नहीं दूँगा !

(क) 'मैं और तू– दो तो नहीं हैं' – किसे कहा गया है और क्यों ?
(ख) कवि ने देश से अपना तादात्म्य कैसे जोड़ा है ?
(ग) शरीर, आत्मा और मन का उल्लेख क्यों किया गया है ?
(घ) कवि क्या संकल्प व्यक्त करता है ?

Solution

(क) यह पंक्ति कवि ने अपने देश से कही है । कवि का मानना है कि देश और वह अभिन्न हैं, उनके बीच कोई दूरी या भेद नहीं है । (1)
(ख) कवि ने देश के चप्पे-चप्पे को अपना शरीर, देश के जल को अपना मन और वायु को अपनी आत्मा कहकर देश से अपना तादात्म्य जोड़ा है । (1)
(ग) शरीर, आत्मा और मन एक ही प्राणी के अलग-अलग किंतु अभिन्न अंग हैं; इनके उल्लेख से कवि दिखाता है कि वह और देश एक ही सत्ता के स्थूल और सूक्ष्म रूप हैं । (1)
(घ) कवि संकल्प करता है कि वह देश को बँटने, लुटने और मिटने नहीं देगा, अर्थात् उसकी एकता, संपदा और अस्तित्व की रक्षा करेगा । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 13 of 122

CBSE 2019 · 2/4/1 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/4/2 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/4/3 · Q2(a) asked 3 times 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)

लड़ने के लिए चाहिए
थोड़ी-सी सनक, थोड़ा-सा पागलपन
और एक आवाज़ को बुलंद करते हुए
मुफ़्त में मर जाने का हुनर
बहुत समझदार और सुलझे हुए लोग
नहीं लड़ सकते कोई लड़ाई
नहीं कर सकते कोई क्रांति
जब घर में लगी हो भीषण आग
आग की जद में हों बहनें और बेटियाँ
तो आग के सीने पर पाँव रखकर
बढ़कर आगे उन्हें बचा लेने के लिए
नहीं चाहिए कोई दर्शन या कोई महान विचार
चाहिए तो बस
थोड़ी-सी सनक, थोड़ा-सा पागलपन
और एक खिलखिलाहट को बचाने के लिए
झुलस जाने का हुनर ।

(क) लड़ने के लिए हमें क्या चाहिए ?
(ख) समझदार और सुलझे हुए लोग क्यों नहीं लड़ सकते ?
(ग) 'घर में भीषण आग लगने' से कवि का क्या तात्पर्य है ?
(घ) 'झुलस जाने का हुनर' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए ।

Solution

(क) लड़ने के लिए थोड़ी-सी सनक, थोड़ा-सा पागलपन और आवाज़ बुलंद करते हुए बिना स्वार्थ के मर मिटने का हुनर (साहस) चाहिए । (1)

(ख) समझदार और सुलझे हुए लोग हानि-लाभ का हिसाब लगाते रहते हैं और जोखिम उठाने से डरते हैं, इसलिए वे बलिदान भरी लड़ाई या क्रांति नहीं लड़ पाते । (1)

(ग) 'घर में भीषण आग लगने' से तात्पर्य समाज पर आए ऐसे संकट से है, जिसमें बहनें और बेटियाँ असुरक्षित हों; अन्याय, अत्याचार या विनाश की स्थिति । (1)

(घ) इसका भाव है कि किसी की खिलखिलाहट (खुशी और जीवन) को बचाने के लिए बिना डरे स्वयं कष्ट सहने और जल जाने तक का साहस होना चाहिए; यही सच्चा बलिदान और संघर्ष है । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 14 of 122

CBSE 2019 · 2/4/1 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/4/2 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/4/3 · Q2(b) asked 3 times 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)

जैसे खड़े होना, वैसे ही झुकना भी
एक स्वाभाविक क्रिया है
कितनी ही चीज़ें बिना झुके पहुँच से बाहर रहती हैं
कुछ चीज़ें हाथ से जानबूझकर इसलिए गिर जाती हैं
कि हम अगर झुकना या पूरी तरह झुकना भूल गए हों
तो न भूलें और याद हो तो फिर ठीक से याद रखें
किसी के पैर छूने के लिए हम झुकें न झुकें
मगर माँ-बाप, पत्नी-बच्चों, मौसी-मामा
आदि के समझाने पर हमें कई बार झुकना पड़ता है
ईश्वर के सामने तो उसके मानने वाले, खैर
रोज ही झुकते हैं बल्कि दिन में कई-कई बार
कुछ आदतन, कुछ इरादतन, कुछ चापलूसी में
इतने ज्यादा झुके रहते हैं कि सीधे खड़े होना भूल जाते हैं ।
कुछ के आगे झुक जाने का
और कुछ के आगे न झुक पाने का अफसोस
कई बार हमें ज़िन्दगी भर रहता है
मगर वक्त बीत जाने के बाद हम कुछ नहीं कर पाते
कुछ करते हैं तो हास्यास्पद बन जाते हैं

(क) स्वाभाविक क्रिया किसे माना गया है ?
(ख) कवि के विचार से कुछ चीज़ें जानबूझकर हाथ से क्यों गिर जाती हैं ?
(ग) झुकने का चापलूसी से क्या संबंध है ?
(घ) हमें अपने जीवन में किस बात का अफसोस रहता है ?

Solution

(क) खड़े होने की तरह झुकने को भी एक स्वाभाविक क्रिया माना गया है । (1)

(ख) कुछ चीज़ें हम जानबूझकर इसलिए गिरा देते हैं कि उन्हें उठाने के बहाने हमें झुकने का अवसर मिले और हम झुकना भूल न जाएँ । (1)

(ग) कुछ लोग स्वार्थ साधने के लिए चापलूसी में हर किसी के सामने झुकते रहते हैं; इस तरह झुकना कभी-कभी चापलूसी का रूप ले लेता है, जिसमें व्यक्ति इतना झुका रहता है कि सीधे खड़ा होना भूल जाता है । (1)

(घ) हमें अफसोस रहता है कि हम कुछ लोगों (जिनके आगे झुकना चाहिए था) के आगे झुक नहीं पाए और कुछ के आगे (जिनके सामने नहीं झुकना चाहिए था) झुक गए; समय बीतने पर इसे सुधारा नहीं जा सकता । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 15 of 122

CBSE 2019 · 2/5/1 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/5/2 · Q2(a) | CBSE 2019 · 2/5/3 · Q2(a) asked 3 times 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)

थकी दुपहरी में पीपल पर,
काग बोलता शून्य स्वरों में
फूल आख़िरी में बसंत के
गिरे ग्रीष्म के ऊष्म करों में
धीवर का सूना स्वर उठता
तपी रेत के दूर तटों पर
हल्की-गरम हवा रेतीली
झुक चलती सूने पेड़ों पर ।
अब अशोक के भी थाली में
ढेर-ढेर पत्ते उड़ते हैं,
ठिठका नभ डूबा है रज में
धूल भरी नंगी सड़कों पर ।
वन खेतों पर है सूनापन,
खालीपन नि:शब्द धरों में
थकी दुपहरी में पीपल पर
काग बोलता शून्य स्वरों में ।
यह जीवन का एकाकीपन –
गरमी के सुनसान दिनों सा,
अन्तहीन दुपहरी डूबा
मन निश्चल है शुष्क वनों सा ।

(क) गरमी की दोपहर में कौवे का बोलना भी शून्य स्वर क्यों लगता है ?
(ख) ग्रीष्म की दोपहरी में प्रकृति की दो विशेषताएँ काव्यांश के आधार पर लिखिए ।
(ग) जीवन की तुलना गरमी के दिनों से क्यों की गई है ?
(घ) 'मन निश्चल है शुष्क वनों सा' – पंक्ति का भाव लिखिए ।

Solution

(क) गरमी की थकी दोपहर में चारों ओर सन्नाटा और सूनापन छाया रहता है; ऐसे में कौवे की आवाज़ भी उस निर्जन वातावरण में गूँजकर अकेलेपन और नीरसता को ही बढ़ाती है, इसलिए वह शून्य स्वर लगती है । (1)

(ख) (1) तपी हुई रेत पर हल्की-गरम रेतीली हवा चलती है और पेड़ सूने (पत्तों से रहित) दिखाई देते हैं । (2) धूल भरी सड़कें, आकाश धूल में डूबा हुआ और वन-खेतों में सूनापन छाया रहता है । (1)

(ग) गरमी के दिन सुनसान, नीरस और अंतहीन लगते हैं, उसी प्रकार जीवन का एकाकीपन भी सूनापन और ऊब से भरा, कभी न खत्म होने वाला लगता है; इसलिए दोनों की तुलना की गई है । (1)

(घ) इस पंक्ति का भाव है कि अकेलेपन और निराशा के कारण कवि का मन सूखे वनों की तरह नीरस, उमंगहीन और स्थिर (शांत, निष्क्रिय) हो गया है । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 16 of 122

CBSE 2019 · 2/5/1 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/5/2 · Q2(b) | CBSE 2019 · 2/5/3 · Q2(b) asked 3 times 4 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)

जो हवा में है, लहर में है
क्यों नहीं वह बात
मुझमें है ?
शाम कंधों पर लिए अपने
ज़िंदगी के रू-ब-रू चलना
रोशनी का हमसफ़र होना
उम्र की कन्दील का जलना
आग जो
जलते सफ़र में है
क्यों नहीं वह बात
मुझमें है ?
एक नन्हीं जान चिड़िया का
डाल से उड़कर हवा होना
सात रंगों के लिए दुनिया
वापसी में नींद भर सोना
जो खुला आकाश स्वर में है
क्यों नहीं वह बात
मुझमें है ?

(क) कन्दील से किसकी तुलना की गई है और क्यों ?
(ख) कवि हवा और लहर का कैसा स्वभाव अपने आप में नहीं पाता ?
(ग) 'एक नन्हीं जान चिड़िया का
डाल से उड़कर हवा होना' – पंक्ति का आशय बताइए ।
(घ) कवि को अपने जीवन में क्या-क्या अभाव प्रतीत हो रहे हैं ?

Solution

(क) कन्दील से उम्र (जीवन) की तुलना की गई है, क्योंकि जैसे कन्दील जलकर रोशनी देती है और धीरे-धीरे समाप्त होती जाती है, वैसे ही जीवन जलता हुआ आगे बढ़ता और समाप्त होता जाता है । (1)

(ख) कवि हवा और लहर की स्वच्छंदता, गति, उमंग और बंधनमुक्त सहजता को अपने भीतर नहीं पाता । (1)

(ग) इस पंक्ति का आशय है कि नन्हीं चिड़िया निर्भय होकर डाल से उड़ती है और हवा की तरह हल्की और स्वतंत्र हो जाती है, अर्थात् बंधनों से मुक्त, निश्चिंत उड़ान । (1)

(घ) कवि को हवा-लहर जैसी स्वच्छंदता, रोशनी का हमसफ़र होने का उत्साह, जलते सफ़र की आग (जुनून), चिड़िया जैसी बेफ़िक्र उड़ान, खुले आकाश जैसी विशालता और निश्चिंत नींद जैसे अभाव प्रतीत हो रहे हैं । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 17 of 122

5 अंक : पठित अंश / दीर्घ उत्तरीय

CBSE 2024 · 2/1/1 · Q2 | CBSE 2024 · 2/1/2 · Q1 | CBSE 2024 · 2/1/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (5×1=5)

सामने कुहरा घना है
और मैं सूरज नहीं हूँ
क्या इसी अहसास में जिऊँ
या जैसा भी हूँ नन्हा-सा
एक दिया तो हूँ
क्यों न उसी की उजास में जिऊँ
हर आने वाला क्षण
मुझे यही कहता है –
अरे भई, सूरज तो नहीं हो तुम
और मैं कहता हूँ –
न सही सूरज
एक नन्हा दिया तो हूँ
जितनी भी है लौ मुझमें
उसे लेकर जिया तो हूँ ।
कम-से-कम मैं उनमें तो नहीं
जो चाँद दिल के बुझाए बैठे हैं
रात को अमावस बनाए बैठे हैं
उड़ते फिर रहे थे जो जुगनू आँगन में
उन्हें भी मुट्ठियों में दबाए बैठे हैं ।

(i) सामने कुहरा घना है – पंक्ति में 'कुहरा' किस ओर संकेत करता है ? (A) अँधेरा (B) धुंध (C) हताशा-निराशा (D) अंधकार (1)

(ii) 'जैसा भी हूँ नन्हा-सा एक दिया तो हूँ' – कथन में निहित भाव है : (A) आत्मविश्वास का (B) निराशा का (C) हताशा का (D) दृढ़ता का (1)

(iii) 'जो चाँद दिल के बुझाए बैठे हैं' – पंक्ति द्वारा कवि ने किन्हें संबोधित किया है ? (A) आत्मकेंद्रित व्यक्तियों को (B) उत्साहहीन व्यक्तियों को (C) अहंकारी व्यक्तियों को (D) स्वाभिमानी व्यक्तियों को (1)

(iv) स्तंभ-I में दिए गए पदों को स्तंभ-II में दिए गए प्रतीकार्थों से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-*I*		स्तंभ-*II*
1.	सूरज	(i)	शक्तियों को नियंत्रण में करना
2.	अमावस	(ii)	घनघोर निराशा
3.	जुगनू दबाना	(iii)	सर्वशक्ति संपन्नता

विकल्प : (A) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii) (B) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) (C) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) (D) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i) (1)

(v) यह कविता क्या संदेश देती है ? (A) चलते रहने का (B) प्रकाश फैलाने का (C) शक्ति भर जीने का (D) शांत रहने का (1)

Solution

(i) (C) हताशा-निराशा – घना कुहरा जीवन में छाई निराशा और विपरीत परिस्थितियों का प्रतीक है ।

(ii) (A) आत्मविश्वास का – कवि सूरज न होकर भी अपने छोटे-से दीये होने को पर्याप्त मानता है ।

(iii) (B) उत्साहहीन व्यक्तियों को – जिन्होंने अपने मन का उत्साह (चाँद) बुझा लिया है, कवि उन्हें संबोधित करता है (अंक-योजना के अनुसार) ।

(iv) (C) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) – सूरज सर्वशक्ति संपन्नता, अमावस घनघोर निराशा और जुगनू दबाना शक्तियों को नियंत्रण में करना है

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 18 of 122

।

(v) (C) शक्ति भर जीने का – जितनी भी लौ है, उसी के सहारे पूरी शक्ति से जीने की प्रेरणा कविता देती है ।

CBSE 2024 · 2/2/1 · Q2 | CBSE 2024 · 2/2/2 · Q1 | CBSE 2024 · 2/2/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (5×1=5)

ग्राम, नगर या कुछ लोगों का नाम नहीं होता है देश
संसद, सड़कों, आयोगों का नाम नहीं होता है देश
देश नहीं होता है केवल सीमाओं से घिरा मकान
देश नहीं होता है कोई सजी हुई ऊँची दुकान
देश नहीं क्लब, जिसमें बैठ करते रहें सदा हम मौज
देश नहीं केवल बंदूकें, देश नहीं होता है फ़ौज
जहाँ प्रेम के दीपक जलते, वहीं हुआ करता है देश
जहाँ इरादे नहीं बदलते, वहीं हुआ करता है देश
सज्जन सीना ताने चलते, वहीं हुआ करता है देश
हर दिल में अरमान मचलते, वहीं हुआ करता है देश
वही होता जो सचमुच आगे बढ़ता क़दम-क़दम
धर्म, जाति, भाषाएँ जिसका ऊँचा रखती हैं परचम
पहले हम खुद को पहचानें, फिर पहचानें अपना देश
एक दमकता सत्य बनेगा, नहीं रहेगा सपना देश

(i) कवि के अनुसार देश नाम है : (A) ग्राम, नगर या कुछेक लोगों का (B) सीमाओं और सरहदों से घिरे भूखंड का (C) परस्पर सौहार्द, अटल संकल्प, सहृदयता एवं उत्तरोत्तर उन्नति का (D) फ़ौज एवं शस्त्रों के ज़खीरों का

(ii) स्तंभ-I में दिए गए पदों को स्तंभ-II में दिए गए प्रतीकार्थों से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	संसद	(i)	आवागमन की सुविधा के लिए बना समतल मार्ग
2.	सड़क	(ii)	सर्वोच्च विधायी निकाय
3.	आयोगों	(iii)	विशेष कार्य के निमित्त सरकार द्वारा गठित संगठन

विकल्प : (A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii) (B) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) (C) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii) (D) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(iii) देश का मस्तक ऊँचा रखने में किस-किस का महत्त्वपूर्ण योगदान है ? (A) सुसज्जित ऊँची दुकानों का (B) दीवारों से घिरे विशाल मकानों का (C) दिवास्वप्नों का (D) विविध धर्म, जाति एवं भाषा के एकत्व का

(iv) 'पहले हम खुद को पहचानें, फिर पहचानें अपना देश' पंक्ति का क्या तात्पर्य है ? (A) निज दुर्बलताओं को पहचान कर सबलताओं में बदलना (B) अपनी उन्नति के विषय में सोचना (C) निज लाभ के लिए प्रयत्नशील रहना (D) अपने परिवार के हित के लिए प्रयासरत रहना

(v) देश केवल सपना मात्र न रहकर दमकता सत्य कैसे बनेगा ? इस प्रश्न के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : लोगों के विचारों में रहकर
कथन II : विद्यार्थियों की पुस्तकों में रहकर
कथन III : युवाओं के कथनों में रहकर
कथन IV : नागरिकों के सदाचरण एवं सद्गुणों में रहकर

पद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? (A) केवल कथन II सही है । (B) केवल कथन IV सही है । (C) केवल कथन I सही है । (D) केवल कथन III सही है ।

Solution

(i) (C) परस्पर सौहार्द, अटल संकल्प, सहृदयता एवं उत्तरोत्तर उन्नति का – कवि के अनुसार जहाँ प्रेम के दीपक जलते हैं, इरादे अटल रहते हैं और हर दिल में अरमान मचलते हैं, वहीं देश होता है ।

(ii) (A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii) – संसद सर्वोच्च विधायी निकाय है, सड़क आवागमन के लिए बना समतल मार्ग है और आयोग विशेष

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 19 of 122

कार्य के लिए सरकार द्वारा गठित संगठन होते हैं ।
(iii) (D) विविध धर्म, जाति एवं भाषा के एकत्व का – "धर्म, जाति, भाषाएँ जिसका ऊँचा रखती हैं परचम" ।
(iv) (A) निज दुर्बलताओं को पहचान कर सबलताओं में बदलना – पहले स्वयं को जानना-सुधारना ही देश को जानने और बनाने की पहली शर्त है ।
(v) (B) केवल कथन IV सही है – नागरिकों के सदाचरण और सद्गुणों से ही देश सपना न रहकर दमकता सत्य बनेगा ।

CBSE 2024 · 2/3/1 · Q2 | CBSE 2024 · 2/3/2 · Q1 | CBSE 2024 · 2/3/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (5×1=5)

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने ?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने –
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने !

(i) 'मैं कब कहता हूँ' – पंक्ति में 'कब' क्या इंगित करता है ? (A) सदैव निराकांक्षी (B) सदैव आकांक्षी (C) सदैव अभिलाषी (D) सदैव अस्थिर
(ii) संसार के विषय में कवि का क्या विचार है ? (A) संसार उसकी गति से चले (B) संसार तीव्र गति से चले (C) संसार धीमी गति से चले (D) संसार अपनी गति से चले
(iii) "वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने" से कवि का तात्पर्य है : (A) जीवन से विपत्तियों का समाप्त हो जाना (B) काँटों का फूलों की शरण में चले जाना (C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना (D) काँटे का कोमल फूल के रूप में बदल जाना
(iv) कवि के अनुसार जीवन की सार्थकता क्या है ? (A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में (B) सुख एवं सुविधाजनक स्थिति में (C) परस्पर ईर्ष्या-द्वेष में (D) शक्ति प्रदर्शन एवं नेतृत्व में
(v) स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	जीवन-मरु	(i)	सुखद परिस्थितियाँ
2.	नंदन-कानन	(ii)	विपरीत परिस्थितियाँ
3.	गति-रोधक	(iii)	उत्तरोत्तर उन्नति में बाधक

विकल्प : (A) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii) (B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii) (C) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) (D) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

Solution

(i) (A) सदैव निराकांक्षी – 'मैं कब कहता हूँ' बार-बार दोहराकर कवि बताता है कि वह कुछ भी पाने की आकांक्षा नहीं रखता ।
(ii) (D) संसार अपनी गति से चले – कवि नहीं चाहता कि संसार उसकी गति के अनुकूल बने; संसार को अपनी गति से चलने देता है ।
(iii) (C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना – काँटा विपत्ति का और फूल सुख का प्रतीक है; कवि चाहता नहीं कि काँटा घटकर फूल बन जाए ।
(iv) (A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में – कवि तीखी चोट और बाधाओं (गति-रोधक शूल) का स्वागत करता है ।
(v) (B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii) – जीवन-मरु = विपरीत परिस्थितियाँ, नंदन-कानन = सुखद परिस्थितियाँ, गति-रोधक = उत्तरोत्तर उन्नति में बाधक ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 20 of 122

CBSE 2024 · 2/4/1 · Q2 | CBSE 2024 · 2/4/2 · Q1 | CBSE 2024 · 2/4/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

अकेलेपन से जो लोग दुखी हैं,
वृत्तियाँ उनकी
निश्चय ही, बहिर्मुखी हैं ।
सृष्टि से बाँधने वाला तार
उनका टूट गया है;
असली आनन्द का आधार
छूट गया है ।
उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?
जड़-कटे पौधों में जीवन की धार कहाँ ?
तब भी, जड़-कटे पौधों के ही समान
रोते हैं ये उखड़े हुए लोग बेचारे;
जीना चाहते हैं भीड़-भम्भड़ के सहारे ।
भीड़, मगर, टूटा हुआ तार
और तोड़ती है
कटे हुए पौधों की
जड़ नहीं जोड़ती है ।
बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं;
हम अपने को उतना ही और भूलते हैं ।
जड़ जमाना चाहते हो
तो एकान्त में जाओ;
अगम-अज्ञात में अपनी सोरें फैलाओ ।
अकेलापन है राह
अपने आपको पाने की;
जहाँ से तुम निकल चुके हो,
उस घर में वापस जाने की ।

(i) वृत्तियाँ उनकी, निश्चय ही बहिर्मुखी हैं – पंक्ति के संदर्भ में 'वृत्ति' का अर्थ है – (A) व्यापार (B) स्वभाव (C) कर्त्तव्य (D) वृत्तांत

(ii) 'उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ ?' – पंक्ति से अभिप्राय है – (A) मूल से अलग होने पर नदियों में प्रवाह नहीं रहता । (B) मूल से अलग होने पर नदियों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है । (C) उद्गम स्थल से अलग होने पर नदियों में सौंदर्य नहीं रहता । (D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता ।

(iii) भीड़ का क्या स्वभाव है ? (A) लोगों की आलोचना करना (B) पौधों को जड़ से काटना (C) दुखी को और दुखी करना (D) दूसरों का उपहास करना

(iv) 'बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं' – पंक्ति में 'बाहरी तरंग' से आशय है – (A) सांसारिक माया (B) सागर की लहरें (C) दूसरों का सहारा (D) भौतिक साधन

(v) 'जड़ जमाना चाहते हो, तो एकान्त में जाओ' – इन पंक्तियों में 'जड़ जमाना' से अभिप्राय है – (A) अपने आप को पहचानना (B) अपने पाँव जमाना (C) अपना वर्चस्व स्थापित करना (D) बस जाना

Solution

(i) **(B) स्वभाव** – वृत्ति का अर्थ मन का स्वभाव/प्रवृत्ति है ।

(ii) **(D) मूल से अलग होने पर जीवन का सौंदर्य नहीं रहता ।** (उत्तर CBSE अंक-योजना के अनुसार)

(iii) **(C) दुखी को और दुखी करना** – भीड़ टूटे तार को और तोड़ती है, जड़ नहीं जोड़ती ।

(iv) **(A) सांसारिक माया** – बाहरी तरंगें = बाहरी दिखावा/सांसारिक आकर्षण, जिनमें फँसकर हम अपने को भूलते हैं ।

(v) **(A) अपने आप को पहचानना** – कवि के अनुसार एकांत में जाकर ही मनुष्य अपने मूल से जुड़ता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 21 of 122

CBSE 2024 · 2/5/1 · Q2 | CBSE 2024 · 2/5/2 · Q1 | CBSE 2024 · 2/5/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

शब्द तो आए बहुत बाद में
संख्याएँ हमारे साथ जन्म से ही हैं
गर्भ में जब
निर्माण हो रहा था हमारी हड्डियों का
रक्तकणों और कोशिकाओं का
साथ-साथ संख्याएँ भी निर्मित होती जा रही थीं

एक हमारी देह की इकाई की वो संख्या है
जिसमें समाहित हैं सारी संख्याएँ
दो आँखों में स्थित है दो
तीन है उँगलियों के तीन जड़ों में,
हृदय के हिस्से हैं चार
और पाँच का निवास
पाँच उँगलियों में है
आगे की सारी संख्याओं को
देह में तलाशना बहुत मज़ेदार खेल है

नौ को तो अमर कर गए कबीर
कि नौ द्वारे का पिंजरा ता में पंछी पौन.....
मुझे तो बहुत चकित करती है यह बात
कि देह की संख्याएँ आठ की संख्या निर्धारित करती है
क्योंकि आठ तरह से ही मुड़ती है यह देह
इसीलिए तो कृष्ण कहलाते हैं अष्टावक्र
सात रंग दिखते हैं आँखों को
और जीभ छह तरह के स्वादों को पहचानती है
इसीलिए तो भोजन को कहा गया षट्रस

देखिए एक से बना कैसा प्यारा शब्द
एका
एक जो दूसरे के बिना रह नहीं सकता
जिसके बिना संभव नहीं थी
इस दुनिया की शुरुआत
मैंने तो शुरू में ही कही थी यह बात
कि संख्याएँ शब्दों की पूर्वज हैं
शब्द तो आए बहुत बाद में
और आते ही चले जा रहे हैं
जबकि संख्याएँ सबकी सब आ चुकी हैं

क्या कोई नई संख्या बता सकते हैं आप ।

(i) पद्यांश के आधार पर संख्याओं की क्या विशेषता है ?

(A) हमारी देह का निर्माण संख्या के आधार पर हुआ है ।
(B) संख्याओं का जन्म हमारे साथ ही हुआ है ।
(C) संख्याओं का जन्म मनुष्य से पूर्व हुआ है ।
(D) पूरे विश्व में संख्याएँ एक समान लिखी जाती हैं ।

(ii) 'एक हमारी देह की इकाई की वो संख्या है
जिसमें समाहित हैं सारी संख्याएँ' – का अर्थ है :

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 22 of 122

(A) एक ही परम पिता में संपूर्ण ब्रह्मांड समाहित है ।
(B) शरीर संख्याओं के योग से बना है ।
(C) सारे अंगों का पोषण शरीर से होता है ।
(D) हमारे शरीर में सारी संख्याएँ समाई हुई हैं ।

(iii) कवि को कौन-सी बात आश्चर्यचकित करती है ?

(A) श्रीकृष्ण को अष्टावक्र क्यों कहते हैं ?
(B) देह आठ तरह से क्यों मुड़ती है ?
(C) देह की संख्याएँ आठ की संख्या कैसे निर्धारित करती है ?
(D) संख्या और देह का परस्पर क्या संबंध है ?

(iv) 'नौ द्वारे का पिंजरा ता में पंछी पौन' – पंक्ति के संदर्भ में 'पिंजरा' शब्द से आशय है –

(A) जीवन
(B) संसार
(C) आत्मा
(D) शरीर

(v) संख्याओं को शब्दों का पूर्वज क्यों कहा गया है ?

(A) मनुष्य के साथ जन्म होने के कारण
(B) शब्दों को जन्म देने के कारण
(C) संख्याओं का जन्म शब्दों से पहले होने के कारण
(D) सभी संख्याओं का जन्म हो चुकने के कारण

Solution

(i) **(B) संख्याओं का जन्म हमारे साथ ही हुआ है ।** – कवि कहता है, "संख्याएँ हमारे साथ जन्म से ही हैं" ।

(ii) **(D) हमारे शरीर में सारी संख्याएँ समाई हुई हैं ।** – देह की इकाई 'एक' में सारी संख्याएँ समाहित बताई गई हैं; आगे शरीर के अंगों में दो, तीन, चार, पाँच आदि मिलती हैं ।

(iii) **(C) देह की संख्याएँ आठ की संख्या कैसे निर्धारित करती है ?** – कवि कहता है, "मुझे तो बहुत चकित करती है यह बात कि देह की संख्याएँ आठ की संख्या निर्धारित करती है" ।

(iv) **(D) शरीर** – कबीर के पद में 'नौ द्वारे का पिंजरा' नौ द्वारों वाले मानव शरीर के लिए है (दो आँख, दो कान, दो नासिका-छिद्र, मुख और दो उत्सर्ग-द्वार) ।

(v) **(C) संख्याओं का जन्म शब्दों से पहले होने के कारण** – "संख्याएँ हमारे साथ जन्म से ही हैं, शब्द तो आए बहुत बाद में" ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 23 of 122

CBSE 2024 · 2/S/1 · Q2 | CBSE 2024 · 2/S/2 · Q1 | CBSE 2024 · 2/S/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
उठी ऐसी घटा नभ में
छिपे सब चाँद और तारे,
उठा तूफान वह नभ में
गए बुझ दीप भी सारे,
मगर इस रात में भी लौ लगाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
गगन में गर्व से उठ-उठ,
गगन में गर्व से घिर-घिर
गरज कहती घटाएँ हैं,
नहीं होगा उजाला फिर,
मगर चिर ज्योति में निष्ठा जमाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
तिमिर के राज का ऐसा
कठिन आतंक छाया है,
उठा जो शीश सकते थे
उन्होंने सिर झुकाया है,
मगर विद्रोह की ज्वाला जलाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
प्रलय का सब समाँ बाँधे
प्रलय की रात है छाई,
विनाशक शक्तियों की इस
तिमिर के बीच बन आई,
मगर निर्माण में आशा दृढ़ाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
प्रभंजन, मेघ दामिनी ने
न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा,
धरा के और नभ के बीच
कुछ साबित नहीं छोड़ा,
मगर विश्वास को अपने बचाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?

(i) प्रस्तुत काव्यांश में 'दीपक' प्रतीकार्थ है :

(A) ज्ञान (B) ज्योति
(C) आशा (D) शक्ति

(ii) "उठी ऐसी घटा नभ में छिपे सब चाँद और तारे" – पंक्ति में 'चाँद और तारों का छिपना' से अभिप्राय है :

(A) कोई मार्ग समझ में न आना (B) विपरीत परिस्थितियों का घिर आना
(C) प्रकाश के साधनों का लुप्त हो जाना (D) सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना

(iii) "तिमिर के राज का ऐसा कठिन आतंक छाया है" – पंक्ति में 'तिमिर के राज' का आशय है :

(A) अँधेरे का साम्राज्य (B) प्राकृतिक आपदाएँ
(C) आततायी शासक (D) सत्ताधारी वर्ग

(iv) विनाशक शक्तियाँ जब सक्रिय हो जाती हैं तब :
कथन I : चारों ओर आतंक का राज रहता है ।
कथन II : भय का वातावरण रहता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 24 of 122

कथन III : अमन-चैन का साम्राज्य रहता है ।

उपर्युक्त कथन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है ?

(A) केवल कथन I और II सही हैं ।
(B) केवल कथन I और III सही हैं ।
(C) केवल कथन II और III सही हैं ।
(D) कथन I, II और III सही हैं ।

(v) स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	तिमिर	(i)	बिजली
2.	समाँ	(ii)	धरती
3.	दामिनी	(iii)	दृश्य
4.	धरा	(iv)	अँधेरा

विकल्प :

(A) 1-(ii), 2-(iii), 3-(iv), 4-(i)
(B) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii), 4-(iv)
(C) 1-(i), 2-(ii), 3-(iv), 4-(iii)
(D) 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)

Solution

(इस पेपर की CBSE अंक-योजना उपलब्ध नहीं है; उत्तर काव्यांश के आधार पर दिए गए हैं ।)

(i) **(C) आशा** – घोर निराशा के अँधेरे में भी लौ जलाए रखने वाला दीपक आशा और अडिग विश्वास का प्रतीक है ।

(ii) **(C) प्रकाश के साधनों का लुप्त हो जाना** – चाँद-तारे प्रकाश के साधन हैं, जो घटा में छिप गए ।

(iii) **(C) आततायी शासक** – तिमिर (अँधेरे) के राज का 'कठिन आतंक' ऐसा है कि जो सिर उठा सकते थे उन्होंने भी सिर झुका लिया, अर्थात् यहाँ अँधेरा अत्याचारी शासन का प्रतीक है । (नोट : शब्दार्थ के स्तर पर (A) 'अँधेरे का साम्राज्य' भी संभव है; अंक-योजना उपलब्ध न होने से प्रतीकार्थ के आधार पर (C) लिया गया है ।)

(iv) **(A) केवल कथन I और II सही हैं ।** – विनाश की स्थिति में आतंक और भय होता है, अमन-चैन नहीं ।

(v) **(D) 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)** – तिमिर = अँधेरा, समाँ = दृश्य, दामिनी = बिजली, धरा = धरती ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 25 of 122

CBSE 2023 · 2/1/1 · Q2(a) | CBSE 2023 · 2/1/2 · Q1(a) | CBSE 2023 · 2/1/3 · Q3(a) asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 1

(क) वंदनीय तू कर्ण, देखकर तेज तिग्म अति तेरा,
काँप उठा था आते ही देवत्वपूर्ण मन मेरा ।
किन्तु, अभी तो तुझे देख मन और डरा जाता है,
हृदय सिमटता हुआ आप ही आप भरा जाता है ।
दीख रहा तू मुझे ज्योति के उज्ज्वल शैल अचल-सा
कोटि-कोटि जन्मों के संचित महापुण्य के फल-सा
त्रिभुवन में जिन अमित योगियों का प्रकाश जगता है
उनके पूँजीभूत रूप-सा तू मुझको लगता है ।
खड़े दीखते जगतनियंता पीछे तुझे गगन में
बड़े प्रेम से लिए तुझे ज्योतिर्मय आलिंगन में
दान, धर्म, अगणित व्रत-साधन, योग, यज्ञ, तप तेरे
सब प्रकाश बन खड़े हुए हैं तुझे चतुर्दिक घेरे
मही मग्न हो तुझे अंक में लेकर इठलाती है
मस्तक सूँघ स्वत्व अपना यह कहकर जतलाती है
इसने मेरे अमित मलिन पुत्रों का दुख मेटा है,
सूर्यपुत्र यह नहीं, कर्ण मुझ दुखिया का बेटा है ।

(i) 'हृदय सिमटता हुआ आप ही आप भरा जाता है ।' – पंक्ति में 'हृदय सिमटने' का क्या आशय है ? (a) आनंदित होना (b) संकुचित होना (c) दुखी होना (d) प्रायश्चित होना

(ii) काव्यांश में 'जगतनियंता' से किसे संबोधित किया गया है ? (a) चन्द्रमा को (b) ब्रह्मा को (c) कृष्ण को (d) सूर्य को

(iii) दान, धर्म, व्रत तथा योग किस रूप में कर्ण को चारों ओर से सुरक्षित किए हुए है ? (a) भक्ति रूप में (b) प्रकाश रूप में (c) ऊर्जा रूप में (d) धर्म रूप में

(iv) 'मही' का अर्थ है : (a) धरती (b) आकाश (c) आग (d) गोद

(v) सूर्यपुत्र यह नहीं, कर्ण मुझ दुखिया का बेटा है – काव्य-पंक्ति में 'मुझ' का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? (a) कुंती (b) राधा (c) पृथ्वी (d) अधिरथ

Solution

(i) (b) संकुचित होना – कर्ण का तेज देखकर कवि का हृदय संकोच और विस्मय से भर जाता है ।
(ii) (d) सूर्य को – कर्ण के पीछे आकाश में खड़े जगत को चलाने वाले सूर्य हैं ।
(iii) (b) प्रकाश रूप में – दान, धर्म, व्रत, योग, यज्ञ और तप प्रकाश बनकर कर्ण को घेरे हुए हैं ।
(iv) (a) धरती – 'मही' का अर्थ पृथ्वी या धरती है ।
(v) (c) पृथ्वी – पंक्ति में धरती स्वयं बोल रही है कि कर्ण उसका पुत्र है, इसलिए 'मुझ' पृथ्वी के लिए आया है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 26 of 122

CBSE 2023 · 2/1/1 · Q2(b) | CBSE 2023 · 2/1/2 · Q1(b) | CBSE 2023 · 2/1/3 · Q3(b) asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 2

(ख) जो नर आत्म-दान से अपना जीवन-घट भरता है
वही मृत्यु के मुख में भी पड़कर न कभी मरता है ।
जहाँ कहीं है ज्योति जगत में, जहाँ कहीं उजियाला
वहाँ खड़ा है कोई अंतिम मोल चुकाने वाला ।।
दिया अस्थि देकर दधीचि ने, शिवि ने अंग कतर कर,
हरिश्चन्द्र ने कफ़न माँगते हुए सत्य पर अड़ कर ।
ईसा ने संसार-हेतु शूली पर प्राण गँवा कर
अंतिम मूल्य दिया गाँधी ने तीन गोलियाँ खाकर
हँसकर लिया मरण ओठों पर, जीवन का व्रत पाला,
अमर हुआ सुकरात जगत में पीकर विष का प्याला ।
मरकर भी मनसूर नियति की सह पाया ना ठिठोली,
उत्तर में सौ बार चीखकर बोटी-बोटी बोली ।
दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है
एक रोज तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है ।
बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते हैं
ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको, वे देकर भी मरते हैं ।

(i) संसार में अमर पद को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है : (a) आत्मदान करना (b) परोपकार करना (c) त्याग करना (d) आत्मोत्सर्ग करना

(ii) सत्य पर अडिग रहने वाले महापुरुषों में किसका नाम अमर है ? (a) राम (b) कृष्ण (c) शिवि (d) हरिश्चन्द्र

(iii) 'ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको, वे देकर भी मरते हैं' – काव्य-पंक्ति में 'ऋतु' शब्द का क्या अर्थ है ? (a) मौसम (b) परम्परा (c) समय (d) रीति

(iv) कवि के अनुसार संसार में कौन बच जाता है ? (a) शासक (b) अमीर (c) दानी (d) कृपण

(v) काव्यांश में कवि ने महापुरुषों का उल्लेख क्यों किया है ? (a) उनका परिचय देने के लिए (b) उनसे सीख लेने के लिए (c) त्याग और दान की महिमा जानने के लिए (d) धर्म की वास्तविकता को जानने के लिए

Solution

(i) (a) आत्मदान करना – कवि कहता है कि जो आत्म-दान से जीवन-घट भरता है, वह मृत्यु के मुख में पड़कर भी नहीं मरता ।

(ii) (d) हरिश्चन्द्र – हरिश्चन्द्र ने कफ़न माँगते हुए भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा ।

(iii) (c) समय – 'ऋतु' का अर्थ यहाँ उचित समय है; जो समय पर दान नहीं करते, उन्हें देना पड़ता है पर यश नहीं मिलता ।

(iv) (c) दानी – 'बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते हैं' ।

(v) (c) त्याग और दान की महिमा जानने के लिए – दधीचि, शिवि, ईसा, गाँधी आदि के उदाहरण त्याग की महिमा बताते हैं ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 27 of 122

CBSE 2023 · 2/2/1 · Q2(a) | CBSE 2023 · 2/2/2 · Q1(a) | CBSE 2023 · 2/2/3 · Q2(a) **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले सही विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश-एक

अलग नगर के कोलाहल से, अलग पुरी-पुरजन से
कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से ।
निज समाधि में निरत, सदा निज कर्मठता में चूर,
वन्यकुसुम-सा खिला कर्ण, जग की आँखों से दूर ।

नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुञ्ज-कानन में ।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल ।

जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है ?
युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है ?
पाकर समय एक दिन आखिर उठी जवानी जाग,
फूट पड़ी सबके समक्ष पौरुष की पहली आग ।

रंगभूमि में अर्जुन था सब समाँ अनोखा बाँधे
बढ़ा भीड़-भीतर से सहसा कर्ण शरासन साधे ।
कहता हुआ, 'तालियों से क्या रहा गर्व में फूल ?
अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल ।'

तूने जो जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ,
चाहे तो कुछ नयी कलाएँ भी सिखला सकता हूँ ।
आँख खोलकर देख, कर्ण के हाथों का व्यापार
फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार ।।

(i) काव्यांश में कठिन साधना में निरत किसे बताया गया है ? (a) कर्ण (b) अर्जुन (c) भीम (d) दुर्योधन

(ii) प्रकृति का रहस्य समझ से परे क्यों होता है ? (a) शक्ति और सामर्थ्य से अलग घटना होने से (b) प्रकृति में विद्यमान भिन्नताओं से (c) प्रकृति के रहस्यों से अनजान रहने से (d) मनुष्य का अपना सीमित सामर्थ्य होने से

(iii) जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है – पंक्ति का भाव है – (a) बादल सूर्य को ढक नहीं सकता । (b) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता । (c) बादल रूपी चादर सूर्य को ढक लेती है । (d) सूर्य शक्ति का प्रतीक है ।

(iv) कर्ण ने अर्जुन को क्यों ललकारा होगा ? (a) अपनी धनुर्विद्या दिखाने के लिए (b) अपनी योग्यता बताने के लिए (c) अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए (d) समाज को अपनी कला दिखाने के लिए

(v) कर्ण किस प्रकार के मनुष्य को धिक्कारता है ? (a) कायर मनुष्य को (b) वीरता दिखलाने वाले को (c) सस्ती लोकप्रियता वाले को (d) अपनी प्रशंसा में रत रहने वाले को

Solution

(i) **(a) कर्ण** – 'कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से' पंक्ति कर्ण के लिए है ।

(ii) **(c) प्रकृति के रहस्यों से अनजान रहने से** – प्रकृति कीमती लालों को गुदड़ी में छिपाकर रखती है; उसके रहस्य हम जानते नहीं, इसलिए वे समझ से परे हैं (अंक-योजना के अनुसार) ।

(iii) **(b) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता** – बादलों में छिपा सूर्य अंत में प्रकट होता है, वैसे ही कर्ण-जैसी प्रतिभा भी अधिक समय तक छिपी नहीं रहती ।

(iv) **(c) अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए** – कर्ण कहता है कि तूने जो किया, वह मैं भी दिखा सकता हूँ, बल्कि नई कलाएँ भी सिखा सकता हूँ ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 28 of 122

(v) **(c) सस्ती लोकप्रियता वाले को** – 'फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार' – कर्ण सस्ता यश पाकर फूलने वाले को धिक्कारता है ।

CBSE 2023 · 2/2/1 · Q2(b) | CBSE 2023 · 2/2/2 · Q1(b) | CBSE 2023 · 2/2/3 · Q2(b) **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले सही विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश-दो

हो गया पूर्ण अज्ञातवास,
पांडव लौटे वन से सहास,
पावक में कनक-सदृश तप कर
वीरत्व लिए कुछ और प्रखर
नस-नस में तेज-प्रवाह लिये,
कुछ और नया उत्साह लिये ।
सच है, विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं ।
मुख से न कभी उफ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं
उद्योग निरत नित रहते हैं
भूलों का मूल नसाने को
खुद बढ़ विपत्ति पर छाने को ।
है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके वीर नर के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़ ।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है ।

(i) 'अज्ञातवास' का अर्थ है ? (a) वन में बसना (b) गाँव में बसना (c) अनजान स्थान पर रहना (d) गुप्त रूप से रहना

(ii) पांडव वन से किस रूप में लौटे थे ? (a) कमजोर होकर (b) दृढ़ होकर (c) निर्विकार भाव से (d) बदले की भावना से

(iii) विपत्ति में किसे घबराहट होती है ? (a) कायर को (b) कमजोर को (c) साहसी को (d) वीर को

(iv) 'पर्वत के जाते पाँव उखड़' – पंक्ति का भाव है (a) उत्साह का संचार होना (b) कठिनाइयों का समाप्त होना (c) अवरोध का सामने आना (d) हिम्मत का समाप्त होना

(v) 'मानव जब जोर लगाता है' – पंक्ति में मनुष्य के किस प्रकार के गुण की ओर संकेत है ? (a) साहस (b) शक्ति (c) परिश्रम (d) समर्पण

Solution

(i) **(d) गुप्त रूप से रहना** – पांडवों को बारह वर्ष वनवास के बाद एक वर्ष पहचान छिपाकर, गुप्त रूप से रहना था; यही अज्ञातवास है ।

(ii) **(b) दृढ़ होकर** – वे आग में तपे सोने की तरह कुछ और प्रखर वीरत्व, तेज और नया उत्साह लेकर लौटे ।

(iii) **(a) कायर को** – 'विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है' ।

(iv) **(b) कठिनाइयों का समाप्त होना** – जब वीर नर पूरा बल लगाता है तो पर्वत जैसी बाधा के भी पाँव उखड़ जाते हैं, यानी

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 29 of 122

कठिनाइयाँ समाप्त हो जाती हैं ।
(v) **(c) परिश्रम** – जोर लगाने से पत्थर भी पानी बन जाता है; यहाँ परिश्रम की शक्ति की ओर संकेत है (अंक-योजना के अनुसार) ।

CBSE 2023 · 2/3/1 · Q2(a) | CBSE 2023 · 2/3/2 · Q1(a) | CBSE 2023 · 2/3/3 · Q3(a) **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश से संबंधित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 1

(क) वर्षों तक वन में घूम-घूम,
बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर,
पांडव आये कुछ और निखर ।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें, आगे क्या होता है ।
मैत्री की राह बताने को,
सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,
भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान हस्तिनापुर आये,
पांडव का संदेशा लाये ।
'दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम ।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे ।
दुर्योधन वह भी दे न सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उलटे हरि को बाँधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला ।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है ।'

(i) कठिनाइयों और संघर्षों को सहन कर पांडवों में किस प्रकार का बदलाव आया ? (a) मनोबल टूट गया (b) व्यक्तित्व निखर गया (c) हिम्मत टूट गई (d) मजबूत हो गए
(ii) भगवान हस्तिनापुर क्यों आये थे ? (a) युद्ध टालने के लिए (b) सबकी कुशल-क्षेम जानने (c) पांडवों का संदेश लेकर (d) दुर्योधन से बात करने
(iii) 'तो दे दो केवल पाँच ग्राम' — पंक्ति में निहित जीवन मूल्य है : (a) संतोष (b) त्याग (c) प्रेम (d) करुणा
(iv) 'परिजन पर असि न उठायेंगे' — पंक्ति में प्रयुक्त 'असि' का क्या अर्थ है ? (a) तीर-धनुष (b) गदा (c) तलवार (d) भाला
(v) विवेक के मर जाने से क्या होता है ? (a) मनुष्य का नाश होता है (b) मनुष्य भ्रमित हो जाता है (c) ग़लत कार्य करने की प्रेरणा (d) असामाजिक कार्य की ओर प्रेरित

Solution

(i) **(b) व्यक्तित्व निखर गया** – 'पांडव आये कुछ और निखर', यानी कठिनाइयों को सहकर उनका व्यक्तित्व और निखर गया ।
(ii) **(c) पांडवों का संदेश लेकर** – 'भगवान हस्तिनापुर आये, पांडव का संदेशा लाये' ।
(iii) **(a) संतोष** – पांडव राज्य के बदले केवल पाँच गाँव लेकर संतुष्ट रहने को तैयार थे; इसमें संतोष का मूल्य है ।
(iv) **(c) तलवार** – 'असि' का अर्थ तलवार है; पांडव अपने परिजनों पर तलवार नहीं उठाना चाहते थे ।
(v) **(a) मनुष्य का नाश होता है** – 'जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है', अर्थात् विवेक मरने पर मनुष्य का विनाश निश्चित है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 30 of 122

CBSE 2023 · 2/3/1 · Q2(b) | CBSE 2023 · 2/3/2 · Q1(b) | CBSE 2023 · 2/3/3 · Q3(b) **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश से संबंधित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 2

(ख) 'मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब उसे तोल सकता है धन ?
धरती की तो है क्या बिसात ?
आ जाय अगर बैकुंठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।
सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ,
उस दिन के लिए मचलता हूँ,
यदि चले वज्र दुर्योधन पर,
ले लूँ बढ़कर अपने ऊपर।
कटवा दूँ उसके लिए गला,
चाहिए मुझे क्या और भला ?
सम्राट बनेंगे धर्मराज,
या पाएगा कुरुराज ताज,
लड़ना भर मेरा काम रहा,
दुर्योधन का संग्राम रहा
मुझको न कहीं कुछ पाना है,
केवल ऋण मात्र चुकाना है।
कुरुराज्य चाहता मैं कब हूँ ?
साम्राज्य चाहता मैं कब हूँ ?
क्या नहीं आपने भी जाना ?
मुझको न आज तक पहचाना ?
जीवन का मूल्य समझता हूँ,
धन को मैं धूल समझता हूँ।
धनराशि जोगना लक्ष्य नहीं
साम्राज्य भोगना लक्ष्य नहीं'

(i) काव्यांश में 'अनमोल रतन' का क्या अर्थ है ? (a) जिसका मूल्य बहुत अधिक हो (b) जिसका मूल्य आँका न जा सके (c) जिसका मूल्य नापा न जा सके (d) जिसका मूल्य जाँचा न जा सके

(ii) किस पर स्वर्ग न्योछावर करने की बात की गई है ? (a) मित्रता पर (b) धरती पर (c) धन पर (d) राज्य पर

(iii) काव्यांश में वक्ता द्वारा युद्ध में सम्मिलित होने का कारण है : (a) साम्राज्य प्राप्ति (b) कर्तव्यपरायणता (c) ऋण चुकाना (d) वीरता-प्रदर्शन

(iv) 'सिर लिए स्कंध पर चलता हूँ' — पंक्ति में 'स्कंध' का क्या अर्थ है ? (a) हथेली (b) तलवार (c) कंधा (d) गला

(v) धन को धूल समझने के क्या कारण हो सकते हैं ? (a) जीवन का अस्थायित्व (b) अनुपयोगी होना (c) महत्त्वहीन होना (d) दूसरा लक्ष्य होना

Solution

(i) **(b) जिसका मूल्य आँका न जा सके** – 'अनमोल' वह है जिसका मूल्य तय ही नहीं किया जा सकता; मित्रता ऐसा रत्न है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार)।

(ii) **(a) मित्रता पर** – 'आ जाय अगर बैकुंठ हाथ, उसको भी न्योछावर कर दूँ' – मित्रता के लिए स्वर्ग भी न्योछावर करने की बात है।

(iii) **(c) ऋण चुकाना** – वक्ता (कर्ण) कहता है : 'मुझको न कहीं कुछ पाना है, केवल ऋण मात्र चुकाना है'।

(iv) **(c) कंधा** – 'स्कंध' का अर्थ कंधा है; 'सिर लिए स्कंध पर' का अर्थ है जान हथेली पर या सिर कंधे पर लिए तैयार रहना।

(v) **(a) जीवन का अस्थायित्व** – जीवन नश्वर है, इसलिए धन का कोई स्थायी मूल्य नहीं; वक्ता जीवन के मूल्य को समझता है और धन को धूल मानता है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार)।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 31 of 122

CBSE 2023 · 2/4/1 · Q2(a) | CBSE 2023 · 2/4/2 · Q1(a) | CBSE 2023 · 2/4/3 · Q2(a) asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किसी **एक** काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 1

(क) बढ़ी है इस बार गंगा खूब
दियारो पर गाँव कितने हो गए हैं डूब
किंतु हम तो शहर की इस छोर पर हैं
देखते हैं रात-दिन जल-प्रलय का ही दृश्य
पत्थरों से बँधी गहरी नींववाला
किराए का घर हमारा रहे यह आबाद
पुराना ही सही पर मजबूत
रही जिसको अनवरत झकझोर
क्षुब्ध गंगा की विकट हिलकोर
सामने ही पड़ोसी के —
नीम, सहजन, आँवला, अमरूद
हो रहे हैं आकंठ जल में मग्न
रह न पाए स्तंभ पुल के नग्न
दूधिया पानी बना उनका रजत परिधान
रेलगाड़ी के पसिंजर खड़े होकर
खिड़कियों से झाँकते हैं
देखते हैं बाढ़ का यह दृश्य
उधर झूँसी इधर दारागंज
बीच का विस्तार
बन गया है आज पारावार
भगवती भागीरथी
ग्रीष्म में यह हो गई थी प्रतनु-सलिला
विरहिणी की पीठ लुंठित एकवेणी-सदृश
जिसको देखते ही व्यथा से अवसन्न होते रहे मेरे नेत्र
रिक्त ही था वरुण की कल-केलि का यह क्षेत्र
काकु करती रही पुल की प्रतिच्छाया, मगर यह थी मौन
उस प्रतनुता से अरे इस बाढ़ की तुलना करेगा कौन ?

(i) 'रह न पाए स्तंभ पुल के नग्न' पंक्ति के आधार पर पुल के स्तंभों के नग्न न रह पाने का कारण है : (a) गंगा नदी का तेज बहाव (b) गंगा नदी का मटमैला पानी (c) गंगा नदी का बढ़ा जल-स्तर (d) गंगा नदी का रेतीला पानी

(ii) पुल के स्तंभों ने कैसा परिधान धारण किया हुआ है ? (a) गंगा-जल रूपी रजत परिधान (b) चाँदी-सा चमकता परिधान (c) मिट्टी-सा मटमैला परिधान (d) दूध-सा चमकता परिधान

(iii) गाँव में बाढ़ आने पर भी कवि के संतोष का क्या कारण हो सकता है ? (a) घर का नदी से दूर होना (b) घर का शहर के किनारे होना (c) घर का पुराना होना (d) घर का मजबूत होना

(iv) गंगा नदी की धारा ग्रीष्म-ऋतु में कैसी हो जाती है ? (a) मटमैली (b) पतली (c) सूखी (d) काली

(v) 'विरहिणी की पीठ लुंठित एकवेणी-सदृश' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? (a) श्लेष (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) उपमा

Solution

(i) **(c) गंगा नदी का बढ़ा जल-स्तर** – गंगा में बाढ़ से जल-स्तर बढ़ गया है, इसलिए पुल के स्तंभ पानी में डूब गए और नग्न नहीं रहे ।

(ii) **(a) गंगा-जल रूपी रजत परिधान** – 'दूधिया पानी बना उनका रजत परिधान' ।

(iii) **(d) घर का मजबूत होना** – कवि का घर पुराना है पर पत्थरों से बँधी गहरी नींव वाला मजबूत घर है, जो गंगा की झकझोर सह चुका है ।

(iv) **(b) पतली** – ग्रीष्म में गंगा 'प्रतनु-सलिला' (पतले जल वाली) हो गई थी ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 32 of 122

(v) **(d) उपमा** – गंगा की पतली धारा की तुलना विरहिणी की पीठ पर लटकी एक चोटी से की गई है; 'सदृश' वाचक शब्द है, अत: उपमा अलंकार (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

CBSE 2023 · 2/4/1 · Q2(b) | CBSE 2023 · 2/4/2 · Q1(b) | CBSE 2023 · 2/4/3 · Q2(b) **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किसी **एक** काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 2

(ख) अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी !
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।
मेरे लिए पिता ने सबसे धीर-वीर वर चाहा,
आर्यपुत्र को देख उन्होंने सभी प्रकार सराहा ।
फिर भी हठकर हाय ! वृथा ही उन्होंने थाहा,
किस योद्धा ने बढ़कर उनका शौर्य-सिंधु अवगाहा ?
क्यों कर सिद्ध करूँ अपने को मैं उन नर की नारी
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।
देख कराल काल-सा जिसको काँप उठे सब भय से
गिरे प्रतिद्वंद्वी नंदार्जुन, नागदत्त जिस हय से
वह तुरंग पालित-कुरंग-सा नत हो गया विनय से,
क्यों न गूँजती रंगभूमि फिर उनके जय जय जय से
निकला वहाँ कौन उन जैसा प्रबल-पराक्रमकारी
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।
सभी सुंदरी बालाओं में मुझे उन्होंने माना,
सबने मेरा भाग्य सराहा, सबने रूप बखाना,
खेद, किसी ने उन्हें न फिर भी ठीक-ठीक पहचाना,
भेद चुने जाने का अपने मैंने भी अब जाना ।
इस दिन के उपयुक्त पात्र की उन्हें खोज थी सारी,
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।

(i) नायिका के पिता द्वारा वर रूप में नायक का चयन उसके किन गुणों के आधार पर किया गया ? (a) धैर्य, शौर्य, बुद्धि और वीरता (b) शारीरिक सौष्ठव और बाहुबल (c) घुड़सवारी में कुशल होने की कला (d) कोमल, मधुर और विनम्र स्वभाव

(ii) उपर्युक्त पंक्तियों में आर्यपुत्र द्वारा दी जाने वाली कौन-सी परीक्षा की बात कही गई है ? (a) स्वयं को सबसे शक्तिशाली सिद्ध करने की परीक्षा (b) स्वयं को सबसे बुद्धिशाली सिद्ध करने की परीक्षा (c) स्वयं को वर हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा (d) स्वयं को सिंहासन हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा

(iii) 'इस दिन के उपयुक्त पात्र की उन्हें खोज थी सारी' – पंक्ति में प्रयुक्त 'उपयुक्त पात्र' से क्या अभिप्राय है ? (a) उपयोगी बर्तन (b) सुंदर राजकुमारी (c) बलिष्ठ अश्व (d) उपयुक्त व्यक्तित्व

(iv) 'देख कराल काल-सा जिसको काँप उठे सब भय से' – पंक्ति में 'जिसको' का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? (a) प्रतिद्वंद्वी राजकुमार (b) आर्यपुत्र (c) तुरंग (d) कुरंग

(v) 'वह तुरंग पालित-कुरंग-सा नत हो गया विनय से' – काव्य-पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? (a) अतिशयोक्ति (b) उपमा (c) उत्प्रेक्षा (d) मानवीकरण

Solution

(i) **(a) धैर्य, शौर्य, बुद्धि और वीरता** – 'पिता ने सबसे धीर-वीर वर चाहा' ।

(ii) **(c) स्वयं को वर हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा** – आर्यपुत्र पिता की शर्त के अनुसार वर के रूप में अपनी योग्यता सिद्ध कर चुके हैं ।

(iii) **(d) उपयुक्त व्यक्तित्व** – पिता को अपनी पुत्री के लिए योग्य, गुणवान व्यक्ति की खोज थी ।

(iv) **(c) तुरंग** – काल के समान भयंकर घोड़े (तुरंग) को देखकर सब काँप उठे, जिसने नंदार्जुन और नागदत्त को गिरा दिया था (उत्तर

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 33 of 122

अंक-योजना के अनुसार) ।

(v) **(b) उपमा** – तुरंग की तुलना पालतू हिरन (कुरंग) से 'सा' वाचक शब्द द्वारा की गई है, अत: उपमा अलंकार ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 34 of 122

CBSE 2023 · 2/5/1 · Q2(a) | CBSE 2023 · 2/5/2 · Q1(a) | CBSE 2023 · 2/5/3 · Q2(a) asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –

काव्यांश-एक

प्रतीक्षा की
बहुत जोही बाट
जेठ बीता, हुई वर्षा नहीं, नभ यों रहा खल्वाट
आज है आषाढ़ वदि षष्ठी
उठा था ज़ोर का तूफ़ान
उसके बाद
सघन काली घन घटा से
हो रहा आच्छन्न यह आकाश
आज होगी, सजनि, वर्षा—हो रहा विश्वास
हो रही है अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास
किंतु अपने देश में तो
सुमुखि, वर्षा हुई होगी एक क्या, कै बार
गा रहे होंगे मुदित हो लोग ख़ूब मलार
भर गई होगी अरे वह वाग्मती की धार
उगे होंगे पोखरों में कुमुद पद्म मखान
आँख मूँदे कर रहा मैं ध्यान
लिखूँ क्या प्रेयसि, यहाँ का हाल
सामने ही बह रही भागीरथी, बस यही है कल्याण
जिस किसी भाँति गर्मी से बचे हैं प्राण
आज उमड़ी घन घटा को देख
मन यही करता कि मैं भी, प्रियतमे, उसका करूँ आह्वान
– कालिदास समान
सामने सरपट पड़ा मैदान
है न हरियाली किसी भी ओर
तृण-लता तरुहीन
नग्न प्रांतर देख
उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द
हरा धुँधला या कि नीला –
आ रहा चश्मा न कोई काम
किंतु मुझको हो रहा विश्वास
यहाँ भी बादल बरसने जा रहा है आज
अब न सिर में उठेगा फिर दर्द
गंगा नहाते वक़्त
आया ख़्याल
हिमालय में गल रही है बर्फ़ :
आज होगा ग्रीष्म ऋतु का अंत

(i) 'आज वर्षा होगी' कवि के इस अति विश्वास का आधार क्या है ? (a) जेठ मास का समाप्त होना (b) आषाढ़ मास का आगमन (c) धरती का प्रसन्न होना (d) आकाश में काले बादलों का घिर आना

(ii) 'उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द' – पंक्ति के संदर्भ में कवि के सिर में उठने वाले दर्द का कारण क्या है ? (a) उसके स्वास्थ्य का ठीक न होना (b) समय पर वर्षा न होना (c) हरियाली विहीन प्रांतर का होना (d) भागीरथी में पानी कम होना

(iii) 'हो रहा आच्छन्न यह आकाश' – पंक्ति में 'आच्छन्न' शब्द का अर्थ है – (a) दबा हुआ (b) ढका हुआ (c) फैला हुआ (d) बिखरा हुआ

(iv) शहरी मैदान को कवि ने 'नग्न' क्यों कहा है ? (a) तृण विहीन होने के कारण (b) लता विहीन होने के कारण (c) तरुहीन होने के

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 35 of 122

कारण (d) वनस्पतिहीन होने के कारण
(v) 'हो रही अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास' – काव्य पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? (a) अनुप्रास (b) रूपक (c) यमक (d) मानवीकरण

Solution

(i) **(d) आकाश में काले बादलों का घिर आना** – 'सघन काली घन घटा से हो रहा आच्छन्न यह आकाश, आज होगी वर्षा' – काले बादलों को देखकर कवि को वर्षा का विश्वास हुआ ।
(ii) **(c) हरियाली विहीन प्रांतर का होना** – सामने सरपट मैदान है, तृण-लता-तरु कुछ नहीं; इस नग्न प्रांतर को देखकर कवि के सिर में दर्द उठता है ।
(iii) **(b) ढका हुआ** – 'आच्छन्न' का अर्थ है ढका हुआ; आकाश बादलों से ढक गया है ।
(iv) **(d) वनस्पतिहीन होने के कारण** – मैदान पर घास, लता और पेड़, कोई भी वनस्पति नहीं है, इसलिए उसे 'नग्न' कहा गया है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।
(v) **(d) मानवीकरण** – पृथ्वी (अवनि) पर मनुष्य की तरह पुलकित होने और निःश्वास लेने का आरोप है, इसलिए मानवीकरण अलंकार है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 36 of 122

CBSE 2023 · 2/5/1 · Q2(b) | CBSE 2023 · 2/5/2 · Q1(b) | CBSE 2023 · 2/5/3 · Q2(b) **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी **एक** काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –

काव्यांश-दो

मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता
तो बस्ती-बस्ती में फिरता रहता
सुंदर नद-नालों का यार होता
मस्ती में अपनी झूमता रहता । मैं भी अगर .....
आदमी का गुण मुझ में न होता
ईर्ष्या की आग में न जलता होता
स्वार्थ के युद्ध में न मरता-मरता
बंब-मिसाइल की वर्षा न करता । मैं भी अगर .....
आँख में दौलत का काजल न पुतता
शान के लिए पराया माल न हड़पता
हर मानव मेरा हित-बंदु होता
रंग-रूप पर अपना गर्व न करता । मैं भी अगर .....
तब सारा जग मेरा अपना होता
पासपोर्ट-वीज़ा कोई न खोजता
स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता
विश्व-भर में मेरा अपना राज्य होता । मैं भी अगर .....
प्यार के गीत जन-जन को सुनाता
आवाज से अपनी सब को लुभाता
मानवता की वेदी पर सिर झुकाता
सागर-उर्मिल का झूला झुलाता
मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता ।।

(i) पंछी के रूप में कवि की क्या अभिलाषा है ? (a) समस्त विश्व पर राज्य करने की (b) समस्त विश्व का भ्रमण करने की (c) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की (d) समस्त वन-प्रदेश में स्वतंत्र घूमने की

(ii) 'आदमी का गुण मुझमें न होता' – पंक्ति में निहितार्थ 'गुण' से कवि का अभिप्राय है (a) आदमी में विद्यमान अवगुण (b) आदमी में विद्यमान अच्छाइयाँ (c) आदमी में विद्यमान मानवता की भावना (d) आदमी में विद्यमान परोपकार की भावना

(iii) प्रस्तुत काव्यांश में कवि समर्थक है – (a) भ्रमण, हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार का (b) भ्रमण, अहिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का (c) शांति, हिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का (d) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

(iv) 'स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता' पंक्ति में आए 'स्वच्छन्द' शब्द का पर्यायवाची नहीं है – (a) आज़ाद (b) निरंकुश (c) मुक्त (d) नियंत्रित

(v) 'सागर-उर्मिल का झूला झुलाता है' – पंक्ति के रेखांकित अंश में कौन-सा अलंकार है ? (a) रूपक (b) उत्प्रेक्षा (c) मानवीकरण (d) अतिशयोक्ति

Solution

(i) **(c) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की** – कवि पंछी बनकर प्यार के गीत जन-जन को सुनाना और सारे जग को अपना बनाना चाहता है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

(ii) **(a) आदमी में विद्यमान अवगुण** – कवि ईर्ष्या, स्वार्थ, युद्ध और घमंड जैसे आदमी के अवगुण पंछी में न होने की बात कहता है, इसलिए 'गुण' का अर्थ यहाँ अवगुण है ।

(iii) **(d) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का** – कवि बंब-मिसाइल, ईर्ष्या और शानो-शौकत का विरोधी तथा शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का समर्थक है ।

(iv) **(d) नियंत्रित** – 'स्वच्छन्द' का अर्थ है आज़ाद, निरंकुश, मुक्त; 'नियंत्रित' इसका विलोम है, पर्यायवाची नहीं ।

(v) **(a) रूपक** – सागर की लहरों (उर्मि) पर झूले का आरोप है, उपमेय-उपमान में अभेद है, इसलिए रूपक अलंकार है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 37 of 122

CBSE 2023 · 2/C/1 · Q2(a) | CBSE 2023 · 2/C/2 · Q1(a) | CBSE 2023 · 2/C/3 · Q2(a) asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी **एक** पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 1

(क) मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ
अजीब है ज़िंदगी !
बेवकूफ़ बनने की ख़ातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण मन हुआ जाता है,
कि जगत स्वायत्त हुआ जाता है ।

(i) 'मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है' पंक्ति में 'महाकाव्य पीड़ा' से क्या अभिप्राय है ? (a) प्रत्येक व्यक्ति के मन में महाकाव्य की तरह असीम पीड़ा लिखी है । (b) प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महाकाव्य की तरह असीम अनुभव छिपे हैं । (c) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है । (d) प्रत्येक व्यक्ति के मन में पीड़ा तो है, किन्तु सब पर महाकाव्य की रचना नहीं हो सकती है ।

(ii) 'पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ' पंक्ति का क्या आशय है ? (a) कवि सबके नज़दीक रहना चाहता है । (b) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है । (c) कवि सबके अनुभवों का लाभ उठाना चाहता है । (d) कवि सभी रास्तों से गुज़रना चाहता है ।

(iii) जो दूसरों के दुख को अपना दुख मानकर चलते हैं, समाज उनके बारे में क्या सोचता है ? (a) उन्हें समझदार समझता है । (b) उन्हें बेवकूफ समझता है । (c) उनके बारे में सोचता ही नहीं है । (d) उन्हें चालाक समझता है ।

(iv) जब लोग कवि को भावनात्मक रूप से ठगते हैं तो कवि को कैसा महसूस होता है ? (a) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है । (b) कवि को असीम दुख की प्राप्ति होती है । (c) कवि की भावनाओं को ठेस पहुँचती है । (d) कवि के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

(v) उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के विषय में पता चलता है कि वह : (a) भावुकता से परिपूर्ण है । (b) विनम्रता से परिपूर्ण है । (c) व्यावहारिकता से परिपूर्ण है । (d) कोमलता से परिपूर्ण है ।

Solution

(i) **(c) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है ।** – कवि को हर वाणी के पीछे पीड़ा की इतनी गहराई दिखती है कि उस पर पूरा महाकाव्य रचा जा सके ।

(ii) **(b) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है ।** – वह क्षण-भर के लिए सबके दुख-दर्द और अनुभवों से गुज़रकर उन्हें समझना चाहता है ।

(iii) **(b) उन्हें बेवकूफ समझता है ।** – कवि स्वयं को 'बेवकूफ़ बनने की ख़ातिर' सबके पास लिए फिरता और ठगा जाता है; भावनाओं के कारण ठगे जाने वाले को दुनिया बेवकूफ़ ही कहती है ।

(iv) **(a) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है ।** – 'और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है कि मैं ठगा जाता हूँ' ।

(v) **(a) भावुकता से परिपूर्ण है ।** – कवि सबकी पीड़ा से द्रवित होता और ठगे जाने पर भी भावुक बना रहता है, इसलिए वह भावुकता से परिपूर्ण है (यह काव्यांश के आधार पर हल किया गया, अंक-योजना उपलब्ध नहीं) ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 38 of 122

CBSE 2023 · 2/C/1 · Q2(b) | CBSE 2023 · 2/C/2 · Q1(b) | CBSE 2023 · 2/C/3 · Q2(b) asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी **एक** पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

काव्यांश – 2

(ख) बरसती साँझ है
स्थगित मेघों ने डाल दिया है
आसमान में डेरा
पहले गरजे भयंकर
चिंघाड़ उठे हों
हाथियों के झुंड जैसे क्षितिज में
लंबे सफेद दाँतों-सी कड़कदार बिजली
काली विशाल देह
धूमिल अँधेरे का विस्तार
ऋतु चक्र में परिवर्तन की इस बेला में
सावन के आवारा मेघ
भटकते हुए आए हैं
पृथ्वी का पता पूछते
बरसो हे मेघ
जल्दी बरसकर खाली करो
शरद के लिए आसमानी सिंहासन
कि शरद अब आता होगा
आती होगी उसकी टपकाती देह
भरी-भरी हरी पृथ्वी
अब ठंडी चाँदनी से नहाएगी
धान को अभी पकना है
सुनहरा होना है
किसानों के बैरी न बनो मेघ
बरसो, बरसकर खाली करो गगन
हे अक्टूबर के अनाहूत मेघ !

(i) उपर्युक्त काव्यांश में कवि ने आसमान में गरजते बादलों की तुलना किससे की है ? (a) लंबे सफेद दाँतों से (b) हाथियों के झुंड से (c) काली विशाल देह से (d) धूमिल अँधेरे से

(ii) 'सावन के आवारा मेघ आसमान में कब आए हैं ?' इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उचित विकल्प चुनकर लिखिए ।

कथन :

I. सावन मास के प्रारंभ होने पर
II. सावन मास के अंत होने पर
III. वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद ऋतु के प्रारंभ होने पर
IV. ऋतु-चक्र में परिवर्तन की संधि-बेला पर

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? (a) केवल IV (b) I और II (c) III और IV (d) II, III और IV

(iii) 'जल्दी बरसकर खाली करो
शरद के लिए आसमानी सिंहासन' — इन काव्य-पंक्तियों में 'आसमानी सिंहासन' से क्या अभिप्राय है ? (a) आसमानी रंग का सिंहासन (b) आसमान के समान सिंहासन (c) आसमान रूपी सिंहासन (d) आसमान से बना सिंहासन

(iv) 'आती होगी उसकी टपकाती देह' – काव्य-पंक्ति के संदर्भ में लिखिए की शरद की देह क्या टपकाती आएगी ? (a) ठंडी चाँदनी (b) बारिश की बूँदें (c) ओस की बूँदें (d) चाँदनी-सी ओस

(v) कवि सावन के बादलों से आकाश खाली करने के लिए क्यों कह रहा है ? (a) लगातार होने वाली बारिश से थकने के कारण (b)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 39 of 122

बादलों को अनिमंत्रित अतिथि मानने के कारण (c) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए (d) खेतों में खड़ी फ़सल के पकने के लिए

Solution

(i) **(b) हाथियों के झुंड से** – 'पहले गरजे भयंकर, चिंघाड़ उठे हों हाथियों के झुंड जैसे क्षितिज में' ।
(ii) **(c) III और IV** – काव्यांश में बादल ऋतु-चक्र के परिवर्तन (संधि) की बेला में आए हैं (IV) और शरद के आने की तैयारी है, यानी वर्षा की समाप्ति तथा शरद का प्रारंभ (III) ।
(iii) **(c) आसमान रूपी सिंहासन** – आसमान को ही शरद के बैठने के सिंहासन के रूप में कल्पित किया गया है (रूपक), इसलिए 'आसमान रूपी सिंहासन' ।
(iv) **(c) ओस की बूँदें** – शरद की देह की टपकाती नमी ओस की बूँदें ही हैं, जो उसके आगमन के साथ पृथ्वी को भिगोती हैं ।
(v) **(c) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए** – कवि कहता है कि आसमानी सिंहासन शरद के लिए खाली करो, क्योंकि शरद अब आता होगा (यह प्रश्न काव्यांश के आधार पर हल किया गया, अंक-योजना उपलब्ध नहीं; (d) भी कवि की चिंता है, पर आकाश खाली करने का सीधा कारण शरद का स्वागत है) ।

CBSE 2018 · 2/1 · Q2 | CBSE 2018 · 2/2 · Q1 | CBSE 2018 · 2/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20 – 30 शब्दों में लिखिए :
सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है ।

प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है ।

सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है ।
(क) क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है ? (1)
(ख) प्रतिशोध किसे कहते हैं ? वह कब आवश्यक होता है ? (1)
(ग) सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया ? (1)
(घ) कैसा युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है ? (1)
(ङ) भाव स्पष्ट कीजिए – 'पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है ।' (1)

Solution

(क) जब कोई असहाय और विवश होकर क्षमा करता है तब क्षमा कलंक है; जब क्षमता (शक्ति) होते हुए भी क्षमा किया जाए तब वह शूरवीरों का शृंगार है ।
(ख) बदला लेना (अपने साथ हुए अन्याय का उत्तर देना) प्रतिशोध है; आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए, अन्याय और अपमान का सामना करने के लिए वह आवश्यक होता है ।
(ग) विजयी होकर सहिष्णुता और क्षमा दिखाना विभूषण (शोभा) है, जबकि पराजित जाति का चुपचाप अपमान सहना अभिशाप है ।
(घ) लोभ और स्वार्थवश, दूसरों का धन हड़पने के उद्देश्य से लड़ा गया युद्ध क्षात्र धर्म के विरुद्ध माना गया है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 40 of 122

(ङ) जब वीरता, पराक्रम और नीति के साथ अन्याय के विरुद्ध पौरुष जाग उठता है, तब वही युद्ध धर्मयुद्ध कहलाता है; अर्थात् न्याय के लिए संघर्ष ही सच्चा धर्म है ।

CBSE 2017 · 2/1/1 · Q2 | CBSE 2017 · 2/1/2 · Q1 | CBSE 2017 · 2/1/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
आज खोले वक्ष
उन्नत शीश, रक्तिम नेत्र
तुझको दे रहा हूँ, ले, चुनौती
गगनभेदी घोष में
दृढ़ बाहुदंडों को उठाए !

क्योंकि मैंने आज पाया है स्वयं का ज्ञान
क्योंकि मैं पहचान पाया हूँ कि मैं हूँ मुक्त, बंधनहीन
और तू है मात्र भ्रम, मन-जात, मिथ्या वंचना,
इसलिए इस ज्ञान के आलोक के पल में
मिल गया है आज मुझको सत्य का आभास
और ओ मेरी नियति !
मैं छोड़कर पूजा
– क्योंकि पूजा है पराजय का विनत स्वीकार –
बाँधकर मुट्ठी तुझे ललकारता हूँ,
सुन रही है तू ?
मैं खड़ा तुझको यहाँ ललकारता हूँ !
(क) कवि की चुनौती देने की मुद्रा कैसी है ? (1)
(ख) चुनौती किसे दी जा रही है ? उसे कवि क्या मानता है ? (1)
(ग) कवि को मिला ज्ञान और उसकी पहचान क्या है ? (1)
(घ) कवि पूजा को क्या मानता है और क्यों ? (1)
(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए । (1)

Solution

(क) कवि की मुद्रा ललकारने वाली, चुनौतीपूर्ण है – वह वक्ष खोले, उन्नत शीश और रक्तिम नेत्रों के साथ दृढ़ बाहुदंडों को उठाए गगनभेदी घोष में चुनौती दे रहा है । (1)
(ख) चुनौती नियति (भाग्य) को दी जा रही है । कवि उसे मात्र भ्रम, मन-जात (मन की उपज) और मिथ्या वंचना (झूठा छल) मानता है । (½+½)
(ग) कवि को स्वयं का ज्ञान मिला है; उसकी पहचान है कि वह मुक्त और बंधनहीन है । (½+½)
(घ) कवि पूजा को पराजय का विनत स्वीकार मानता है, क्योंकि पूजा में व्यक्ति झुककर अपनी हार मान लेता है और नियति के आगे समर्पण करता है । (½+½)
(ङ) केंद्रीय भाव है – पुरुषार्थ पर भरोसा रखना, भाग्यवादी न होना और नियति या भाग्य की उपेक्षा करके उसे चुनौती देना । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 41 of 122

CBSE 2017 · 2/1 · Q2 | CBSE 2017 · 2/2 · Q1 | CBSE 2017 · 2/3 · Q2 asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मन-दीपक निष्कंप जलो रे !
सागर की उत्ताल तरंगें,
आसमान को छू-छू जाएँ
डोल उठे डगमग भूमंडल
अग्निमुखी ज्वाला बरसाए
धूमकेतु बिजली की द्युति से,
धरती का अंतर हिल जाए
फिर भी तुम ज़हरीले फन को
कालजयी बन उसे दलो रे !
कदम-कदम पर पत्थर, काँटे
पैरों को छलनी कर जाएँ
श्रांत-क्लांत करने को आतुर
क्षण-क्षण में जग की बाधाएँ
मरण गीत आकर गा जाएँ
दिवस-रात, आपद-विपदाएँ
फिर भी तुम हिमपात तपन में
बिना आह चुपचाप जलो रे !

(क) कविता किसे संबोधित है और उसे क्या करने को कहा गया है ? (1)
(ख) कालजयी बनकर कैसी बाधाओं का दलन करने को कहा गया है ? (1)
(ग) पत्थर, काँटे किसके प्रतीक हैं ? वे क्या कर सकते हैं ? (1)
(घ) धरती का अंतर कैसे, क्यों हिल जाता है ? (1)
(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए : 'मन-दीपक निष्कंप जलो रे !' (1)

Solution

(क) कविता मन (साहसी कर्मवीरों, नवयुवकों के मन) को संबोधित है । उससे कहा गया है कि वह विपरीत परिस्थितियों पर विजय पाने के लिए निष्कंप (बिना डगमगाए) जलता रहे । (½+½)

(ख) जीवन की विभिन्न बाधाओं, प्रतिकूल परिस्थितियों और बुराइयों (ज़हरीले फन) का दलन करने को कहा गया है । (1)

(ग) पत्थर और काँटे जीवन की बाधाओं के प्रतीक हैं । वे पैरों को छलनी कर सकते हैं, अर्थात् राह में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं । (½+½)

(घ) धूमकेतु और बिजली की चमक जैसी विषम परिस्थितियों (प्राकृतिक उथल-पुथल) से धरती का अंतर हिल जाता है, क्योंकि वे बहुत विनाशकारी होती हैं । (1)

(ङ) आशय है कि मन की आशा और विश्वास को बनाए रखते हुए, बिना डरे और बिना विचलित हुए जीवन में आगे बढ़ना और कर्म करते रहना । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 42 of 122

CBSE 2017 · 2/2/1 · Q2 | CBSE 2017 · 2/2/2 · Q1 | CBSE 2017 · 2/2/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखंड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तंड है ।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति-कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन हो क्या भला ?
होता समुन्नति के अनंतर सोच अवनति का नहीं,
हाँ, सोच तो है जो किसी की फिर न हो उन्नति कहीं ।
चिंता नहीं जो व्योम-विस्तृत चंद्रिका का ह्रास हो,
चिंता तभी है जब न उसका फिर नवीन विकास हो ।।
हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी ।।
(क) उत्थान और पतन के नियम को कैसे समझाया गया है ? (1)
(ख) अवनति के बारे में कब पश्चात्ताप नहीं होता और क्यों ? (1)
(ग) कवि के विचार से शोचनीय स्थिति क्या है ? (1)
(घ) हमें मिलकर क्या विचार करने की आवश्यकता है और क्यों ? (1)
(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए : 'उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन हो क्या भला ?' (1)

Solution

(क) उत्थान और पतन प्रकृति का अखंड (अटूट) नियम है – जो ऊपर चढ़ता है उसका पराभव (पतन) भी होता है, जैसे आकाश में चढ़ता सूर्य ही गिरता (अस्त होता) है; और जिसका पतन होता है वह फिर उत्थान के लिए प्रयत्नशील होता है । (1)
(ख) जब हम निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं और पतन के बाद पुनः उत्थान को प्राप्त करते हैं, तब अवनति का पश्चात्ताप नहीं होता, क्योंकि नवीन विकास सुनिश्चित हो जाता है । (1)
(ग) कवि के विचार से शोचनीय स्थिति यह है कि पतन के बाद उन्नति के लिए प्रयत्नशील न होना (दुबारा उन्नति न होना) । (1)
(घ) हमें अपने वैभवशाली अतीत को याद करके यह विचार करना चाहिए कि हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे – ताकि पुनः उन्नति प्राप्त कर सकें । (1)
(ङ) जो कर्मशील होता है, उत्थान (सफलता) और पतन (असफलता) उसी को मिलते हैं; जिसने कभी उन्नति की ही नहीं, उसे पतन का अनुभव भी नहीं होता । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 43 of 122

CBSE 2016 · 2/1/1 · Q2 | CBSE 2016 · 2/1/2 · Q1 | CBSE 2016 · 2/1/3 · Q2 **asked 3 times** **5 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
साकार दिव्य गौरव विराट, पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल !
मेरी जननी के हिमकिरीट, मेरे भारत के दिव्य भाल !
मेरे नगपति, मेरे विशाल !
युग-युग अजेय, निर्बंध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत नित महान
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान !
ले अँगड़ाई, हिल उठे धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलराट् हुंकार भरे
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी, आज तप का न काल
नव युग शंखध्वनि जगा रही
तू जाग-जाग मेरे विशाल !
(क) 'मेरी जननी' से क्या तात्पर्य है ? उसका किरीट किसे माना है ? (1)
(ख) विशाल नगपति के लिए प्रयुक्त किन्हीं दो विशेषणों को स्पष्ट कीजिए । (1)
(ग) हिमालय से अँगड़ाई लेने का अनुरोध क्यों किया जा रहा है ? (1)
(घ) 'शैलराट्' नाम की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए । (1)
(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए । (1)

Solution

(क) 'मेरी जननी' से तात्पर्य भारत-भूमि (भारत माता) से है; उसका किरीट (मुकुट) हिमालय को माना गया है । (1)
(ख) 'अजेय' – जिसे कोई जीत न सके; 'निर्बंध' – जिस पर किसी का अंकुश या बंधन न हो; 'गर्वोन्नत' – गर्व से माथा ऊँचा किए हुए । (कोई दो) (1)
(ग) परिवर्तन (क्रांति) के लिए – कवि चाहता है कि हिमालय जागकर क्रांति की कामना को शक्ति दे । (1)
(घ) हिमालय विशाल, ऊँचा और बड़ा है तथा सब पर्वतों का राजा है, इसीलिए उसे 'शैलराट्' (पर्वतों का राजा) कहना सार्थक है । (1)
(ङ) कवि हिमालय (देश के जनमानस) से अपनी शक्ति पहचानकर जाग उठने और क्रांति का आह्वान करने की प्रेरणा देता है । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 44 of 122

CBSE 2016 · 2/1 · Q2 | CBSE 2016 · 2/2 · Q1 | CBSE 2016 · 2/3 · Q2 asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
सूख गई है झील रसवंती
मिट्टी ही बची है नरम, साँवली, सहस्रों दुख-दरारवाली
अब वे दिन याद आते हैं
इस किनारे से उस किनारे तक अछोर पानी और हवा
पुराने महलों से बातें करता, ढलता
पश्चिम का वर्षा सूर्य
झील तट के कंकाल पेड़ों पर
पछतावा करती बैठी होंगी चिड़ियाँ
स्त्रियाँ खिन्नमन घाटों से लौट रही होंगी ।
आगे देखने वाले भद्रजन झील की मिट्टी बेचने आएँगे
आएँगे उनके देशी-विदेशी परिजन
शोकाकुल झील-तट वासियों को धीरज देने ।
सुना है यहाँ गांधी की प्रार्थना सभा होगी
आएँगी सुब्बालक्ष्मी मीरा का पद गाने –
'हरि तुम हरो जन की पीर ।'
(क) रसवंती कौन है ? क्यों सूख गई है ? (1)
(ख) पहले उसका सौंदर्य कैसा रहा होगा ? (1)
(ग) पेड़ों को 'कंकाल' क्यों कहा ? चिड़ियों को क्या पछतावा है ? (1)
(घ) भद्रजन कौन हैं ? वे सूखी झील से भी कैसे लाभ कमा लेते हैं ? (1)
(ङ) भाव स्पष्ट कीजिए : "स्त्रियाँ खिन्नमन घाटों से लौट रही होंगी ।" (1)

Solution

(क) रसवंती झील है । वह जल के अभाव में सूख गई है । (1)
(ख) पहले वह हरे-भरे पेड़-पौधों और घाटों वाली, पक्षियों के कलरव से गुंजित तथा स्त्री-पुरुषों के आवागमन से गुलज़ार, अछोर पानी और हवा वाली सुंदर झील रही होगी । (कोई दो बिंदु) (1)
(ग) पानी के अभाव में पेड़-पौधे सूख गए हैं, इसलिए उन्हें कंकाल कहा गया है । चिड़ियों को पछतावा है कि अब पेड़ों पर हरियाली और बसेरा नहीं रहा, उन्हें बैठने के लिए हरे-भरे पेड़ नहीं दिख पाते । (½+½)
(घ) भद्रजन शहरी नागरिक और व्यापारी हैं । वे झील की मिट्टी आदि संसाधनों को बेचकर धनार्जन करते हैं । (½+½)
(ङ) जल के अभाव में जल से होने वाली दैनिक आवश्यकताओं (पानी भरने आदि) की पूर्ति न हो पाने के कारण स्त्रियाँ निराश और उदास मन से खाली लौट रही होंगी । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 45 of 122

CBSE 2016 · 2/2/1 · Q2 | CBSE 2016 · 2/2/2 · Q1 | CBSE 2016 · 2/2/3 · Q2 asked 3 times 5 marks

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार ।

आज सिंधु ने विष उगला है
लहरों का यौवन मचला है
आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार ।

यह असीम निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार ।

लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड़ में साहस तोलो
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफ़ानों का प्यार ।

सागर की अपनी क्षमता है
पर नाविक भी कब थकता है
जब तक साँसों में स्पंदन है
उसका हाथ नहीं रुकता है
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार
तूफ़ानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार ।
(क) कवि नाविक से क्या अनुरोध कर रहा है और क्यों ? (1)
(ख) कवि के अनुसार समुद्र को क्या पहचान लेना चाहिए ? (1)
(ग) नाविक के स्वभाव और संघर्ष को स्पष्ट कीजिए । (1)
(घ) आशय स्पष्ट कीजिए – 'कभी-कभी मिलता जीवन में तूफ़ानों का प्यार' (1)
(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है ? (1)

Solution

(क) कवि नाविक से अनुरोध कर रहा है कि वह तूफ़ानों की ओर अपनी पतवार घुमा दे, यानी कठिनाइयों में डटा रहे और उनसे पलायन न करे; क्योंकि परिस्थितियाँ विपरीत हैं । (1)
(ख) समुद्र को पहचान लेना चाहिए कि वह असीम होकर भी अपनी सीमा जाने, क्योंकि मिट्टी के पुतले मनुष्य ने कभी हार नहीं मानी । (1)
(ग) नाविक कभी थकता नहीं; जब तक उसकी साँसों में स्पंदन है, तब तक उसका हाथ नहीं रुकता और वह अपना कार्य करता रहता है – इसी बल पर वह सातों सागर पार कर लेता है । (1)
(घ) जीवन में कभी-कभी ही हमें चुनौतियों का सामना करके मानव-शक्ति का परिचय देने का अवसर मिलता है, इसलिए तूफ़ान (चुनौती) भी प्रिय हैं । (1)
(ङ) केंद्रीय भाव है – संघर्ष ही जीवन है; चुनौतियों से डरे बिना उनका डटकर सामना करना चाहिए । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 46 of 122

8 अंक : अपठित काव्यांश

CBSE 2026 · 2/1/1 · Q2 | CBSE 2026 · 2/1/2 · Q1 | CBSE 2026 · 2/1/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को ।

(i) काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? (A) चाँदी की साड़ी के रूप में (B) फूली सरसों के रूप में (C) मैके में आई बेटी के रूप में (D) हमजोली सखी के रूप में (1)

(ii) फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? (A) धूप (B) हवा (C) बेटी (D) चाँदनी (1)

(iii) खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – (A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की (C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की (D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की (1)

(iv) ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? (1)

(v) नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए । (2)

(vi) काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए । (2)

Solution

(i) **(C) मैके में आई बेटी के रूप में ।** – 'मैके में आई बेटी की तरह मगन है' पंक्ति में धूप को मायके आई प्रसन्न बेटी जैसा चित्रित किया गया है ।

(ii) **(A) धूप ।** – चाँदी की साड़ी पहने धूप ही फूली सरसों से लिपट गई है, जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हों ।

(iii) **(B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की ।** – अगली पंक्ति में 'दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के' कहा गया है; यही स्वर सारंगी की तरह लगते हैं ।

(iv) काल (समय) की तुलना **कौए** से की गई है; आधार है **काला वर्ण** (रंग की समानता) – कौआ ठूँठ पर गुमसुम बैठा जैसे दिन ढलते देख रहा हो ।

(v) नदी में पड़ता निर्मल आकाश का प्रतिबिंब ऐसा लगता है मानो शिव का नंदी नदी में पानी पी रहा हो; और आकाश धरती के ऊपर सुध-बुध खोकर (बिसुध) खड़ा है ।

(vi) दूर तक खेतों में लहलहाती पीली सरसों और उस पर चाँदी-सी चमकती धूप; खेतों पर उड़ते पक्षियों के झुंड का मधुर कलरव; रंग-बिरंगे फूलों की सुगंध से महकती दिशाएँ; कल-कल बहती नदी और उसमें झाँकता निर्मल आकाश – यह सब ग्रामीण प्रकृति को अत्यंत मनोहर बना देता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 47 of 122

CBSE 2026 · 2/2/1 · Q2 | CBSE 2026 · 2/2/2 · Q1 | CBSE 2026 · 2/2/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम
कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए !
- उनको प्रणाम !
जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उद्धि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार !
- उनको प्रणाम !
जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे !
- उनको प्रणाम !
एकाकी और अकिंचन हो
जो भू-परिक्रमा को निकले;
हो गए पंगु, प्रति-पद जिनके
इतने अदृष्ट के दाव चले !
- उनको प्रणाम !
कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल
- उनको प्रणाम !

(i) 'रिक्त तूणीर' होने का अभिप्राय है – (A) अनुभवहीन (B) विफल (C) कुंठित (D) साधनहीन

(ii) काव्यांश में 'हिम समाधि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ? (A) बर्फीले प्रदेश के कष्टों को झेलना (B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना (C) बर्फ जैसी श्वेत समाधि बनाना (D) बर्फ का ऊँचा शिखर चढ़ना

(iii) 'छोटी-सी नैया' और 'उदधि-पार' का प्रतीकार्थ है – (A) छोटी नाव, विशाल सागर (B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य (C) कम मेहनत, अधिक सफलता (D) छोटी नौका, बड़ा जहाज

(iv) कवि किन लोगों को प्रणाम कर रहा है ? (1)

(v) 'हो गए उसी में निराकार' कथन का क्या तात्पर्य है ? काव्यांश के आधार पर लिखिए । (2)

(vi) कवि के अनुसार प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करने के बाद भी दुनिया उन लोगों को क्यों भूल गई ? (2)

Solution

(i) **(D) साधनहीन** – तूणीर का अर्थ तरकश है; 'रिक्त तूणीर' यानी जिनके तीर समाप्त हो गए, अर्थात् जो वीर साधनहीन हो गए ।

(ii) **(B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना** – ऊँचे शिखर की ओर बढ़ने वाले कुछ साहसी पर्वतारोही बर्फ में दबकर प्राण गँवा बैठे ।

(iii) **(B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य** – छोटी-सी नैया सीमित साधनों का और उदधि-पार विशाल लक्ष्य का प्रतीक है ।

(iv) (कोई एक बिंदु) साहस के साथ अथक परिश्रम करने वालों को; कष्ट झेलने वालों को; अथक प्रयत्नों के बावजूद अपने स्वप्न पूरे न कर पाने वालों को; लक्ष्य-प्राप्ति के लिए किए गए संघर्षों में अपना जीवन समर्पित करने वालों को ।

(v) जो लोग छोटी-सी नाव जैसे सीमित साधनों के साथ विशाल सागर रूपी महान लक्ष्य को पाने चले थे, उनकी इच्छा मन की मन में ही रह गई । संसार रूपी सागर की उत्ताल तरंगों के थपेड़ों से संघर्ष करते हुए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया और उसी में विलीन हो गए । (1 + 1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 48 of 122

(vi) (कोई दो बिंदु) दुनिया भौतिक उन्नति को महत्त्व देती है; वह लक्ष्य तक पहुँचने वालों को महत्त्व देती है और असफल रहने वालों के प्रयत्नों को अस्वीकार कर देती है; स्वार्थ (स्व-लाभ) की भावना से आत्मकेंद्रित होने के कारण वह भूल जाती है; वह नींव की ईंट को महत्त्व न देकर कँगूरे को महत्त्व देती है । (1 + 1)

CBSE 2026 · 2/3/1 · Q2 | CBSE 2026 · 2/3/2 · Q1 | CBSE 2026 · 2/3/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

फूल से बोली कली क्यों व्यस्त मुरझाने में है
फ़ायदा क्या गंध औ मकरंद बिखराने में है
तूने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी
अपनी मनमोहक पँखुरियों की छटा क्यों खोल दी
तू स्वयं को बाँटता है जिस घड़ी से तू खिला
किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला
मुझको देखो मेरी सब खुशबू मुझ ही में बंद है
मेरी सुंदरता है अक्षय अनछुआ मकरंद है
मैं पली काँटों में जब थी दुनिया तब सोती रहीं
मेरी ही क्या ये कभी किसी की भी कभी होती नहीं
ऐसी दुनिया के लिए सौरभ लुटाऊँ किसलिए
स्वार्थी समुदाय का मेला लगाऊँ किसलिए
फूल उस नादान की वाचालता पर चुप रहा
फिर स्वयं को देखकर भोली कली से ये कहा
ज़िंदगी सिद्धांत की सीमाओं में बँटती नहीं
ये वो पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है घटती नहीं

(i) फूल और कली के संवाद के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है : (A) जीवन की सार्थकता को (B) जीवन की क्षणभंगुरता को (C) जीवन की नश्वरता को (D) जीवन के दृष्टिकोण को

(ii) काव्यांश के अनुसार कौन-सी पूँजी बाँटने से बढ़ती है ? (A) ज्ञान (B) ज़िंदगी (C) संपदा (D) दुख

(iii) काव्यांश के संदर्भ में 'वाचालता' शब्द का अर्थ है : (A) चालाकी (B) समझदारी (C) बड़बोलापन (D) मूर्खता

(iv) कली और फूल के व्यक्तित्व में क्या अंतर है ? (2)

(v) कली अपना सौंदर्य और महक किसी के साथ क्यों नहीं बाँटना चाहती ? (2)

(vi) कली अथवा फूल, आप किसके विचारों से सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए । (1)

Solution

(i) **(A) जीवन की सार्थकता को** – फूल और कली के संवाद से कवि ने बताया है कि दूसरों के लिए स्वयं को लुटाने में ही जीवन की सार्थकता है ।

(ii) **(B) ज़िंदगी** – अंतिम पंक्तियों में कहा गया है कि ज़िंदगी वह पूँजी है जो व्यय करने (बाँटने) से बढ़ती है, घटती नहीं ।

(iii) **(C) बड़बोलापन** – वाचालता का अर्थ बहुत बोलना, बड़बोलापन है ।

(iv) कली आत्मकेंद्रित है और फूल परोपकारी । कली अपनी पूँजी (सुंदरता, खुशबू) को स्वयं तक सीमित रखना चाहती है, जबकि फूल दूसरों के काम आने और सर्वस्व समर्पण की भावना में विश्वास रखता है । कली वाचाल है और फूल समझदार । (कोई दो बिंदु, 1 + 1)

(v) कली का मानना है कि संसार स्वार्थी है और किसी के काम नहीं आता । उसने काँटों की चुभन को अकेले ही झेला, जब दुनिया सोती रही; इसलिए वह अपना सौंदर्य और गंध ऐसी स्वार्थी दुनिया के लिए नहीं लुटाना चाहती । (1 + 1)

(vi) (उपयुक्त तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर स्वीकार्य) मैं फूल के विचारों से सहमत हूँ, क्योंकि जो दूसरों के लिए अपना सौंदर्य और सुगंध बाँटता है, उसका जीवन सार्थक होता है; बाँटने से खुशी और अपनापन घटते नहीं, बढ़ते हैं । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 49 of 122

CBSE 2026 · 2/4/1 · Q2 | CBSE 2026 · 2/4/2 · Q1 | CBSE 2026 · 2/4/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सबकी पीड़ा के साथ व्यथा अपने मन की जो जोड़ सके,
मुड़ सके जहाँ तक समय, उसे निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके ।
युगपुरुष वही सारे समाज का विहित धर्मगुरु होता है,
सबके मन का जो अंधकार अपने प्रकाश से धोता है ।
थे जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व, लगता है वहीं खड़े हैं हम,
है वृथा वर्ग उन गुफावासियों से कुछ बहुत बड़े हैं हम ।
अनगढ़ पत्थर से लड़ो, लड़ो किटकिटा नखों से, दाँतों से
या लड़ो ऋक्ष के रोमगुच्छ-पूरित वज्रीकृत हाथों से ।
या चढ़ विमान पर नर्म मुट्ठियों से गोलों की वृष्टि करो
आ जाय लक्ष्य में जो कोई, निष्ठुर हो सबके प्राण हरो ।
ये तो साधन के भेद, किन्तु भावों में तत्त्व नया क्या है ?
क्या खुली प्रेम आँख अधिक ? भीतर कुछ बढ़ी दया क्या है ?
झर गई पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है,
बाहर-बाहर तन सँवर चुका, मन अभी सँवरना बाकी है ।

(i) कवि को ऐसा क्यों लगता है कि हम सहस्रों वर्ष पूर्व जहाँ थे, आज भी वहीं हैं ? (A) धरती के भीतर का रहस्य जानना अभी भी बाकी है । (B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है । (C) आज भी मनुष्य अपने नाखूनों का बढ़ना नहीं रोक पाया है । (D) आज भी मनुष्य नख-दंत अवलम्बी है ।

(ii) 'ये तो साधन के भेद' – पंक्ति में 'साधन' से आशय है : (A) जीवनयापन के साधन (B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र (C) जीविकोपार्जन के माध्यम (D) शत्रु को भयभीत करने के तरीके

(iii) 'बाहर-बाहर तन सँवर चुका' – से क्या अभिप्राय है ? (A) सौंदर्य प्रसाधनों से शारीरिक सुंदरता का बढ़ जाना (B) शरीर के अनावश्यक अंगों का झड़ जाना (C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना (D) मनुष्य और पशुओं के बीच अंतर दृष्टिगत होना

(iv) 'भावों में तत्त्व नया क्या है' – पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए । (1)

(v) 'मन अभी सँवरना बाकी है' – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? (2)

(vi) वज्रीकृत हाथों से या नर्म मुट्ठियों से लड़ना कवि की दृष्टि में एक समान क्यों है ? (2)

Solution

(i) **(B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है ।** – कवि के अनुसार तन के सँवरने पर भी मनुष्य के मन से पशुता (हिंसा) नहीं गई है, इसलिए वह आज भी वहीं खड़ा लगता है ।

(ii) **(B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र** – पत्थर, नख-दंत से लेकर विमान से गोले बरसाने तक युद्ध के साधन ही बदले हैं, भाव नहीं ।

(iii) **(C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना** – पूँछ और रोम झरने का अर्थ है कि आदिमानव की तुलना में आज की शारीरिक बनावट सुंदर हो गई है, पर मन अब भी नहीं सँवरा ।

(iv) आदिमानव की भाँति आज भी मानव में हिंसा की प्रधानता है; साधन बदल गए हैं पर भावों में कुछ नया नहीं, यानी दया और प्रेम नहीं बढ़ा । (1)

(v) (कोई दो बिंदु) जीवन-मूल्यों का विकास न हो पाना; दया, ममता और प्रेम का अभाव; स्वार्थ और हिंसा की प्रबलता । कवि का आशय है कि बाहर से तन सुंदर हो गया है, पर भीतर से मनुष्य की पशुता अभी गई नहीं । (1 + 1)

(vi) (कोई दो बिंदु) वज्रीकृत हाथ आदिमानव की हिंसक वृत्ति की ओर संकेत करते हैं और नर्म मुट्ठियाँ (विमान से गोले बरसाने वाला) आधुनिक मानव की हिंसक वृत्ति की ओर; युद्ध का साधन अथवा युद्ध करने वाला कोई भी हो, उससे मानवता का ही हनन होता है; दोनों ही स्थितियाँ मनुष्य की विनाशकारी प्रवृत्ति की परिचायक हैं । (1 + 1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 50 of 122

CBSE 2026 · 2/5/1 · Q2 | CBSE 2026 · 2/5/2 · Q1 | CBSE 2026 · 2/5/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

दुनिया का सबसे बड़ा अधम –
हाँ, हाँ, दुनिया का सबसे बड़ा अधम नर वही था
जिसकी ज़बान से यह निकला था पहले-पहल –
भूमि यह मेरी है *!*
"भूमि यह मेरी है *?*"
झूठा, मक्कार था *!*
असत्य, अन्याय का अवतार था *!*
दुनिया का सबसे बड़ा अधम *!!*
नीचे की धरती और ऊपर का आसमान,
पानी और पवन –
प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए,
इन पर है सबका अधिकार;
सबका समान अधिकार
हवा को क्या बाँटोगे *?*
पानी को बाँटोगे *?*
बाँटोगे नीले आसमान को *?*
बाँट भी सकोगे क्या *?*
धरती बेचारी बेबस थी –
पैरों के नीचे
अचल पड़ी थी, निरीह;
कह दिया –
"भूमि यह मेरी है" –
बाँट लिया टुकड़ों में,
एक मुट्ठी लोगों ने,
मानो माता के आँचल को दाँतों से चीरकर
बाँट लिया कुछ शैतान बच्चों ने;
टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़
रोती रही दुखिया बेचारी माँ *!*
दुनिया का सबसे बड़ा अधम *!*

(i) इस काव्यांश का केंद्रीय भाव है : (A) प्राकृतिक संसाधनों का सृजन (B) भूमि का वैज्ञानिक वितरण (C) भूमि पर सबका समान अधिकार (D) भूमि के इतिहास का वर्णन (1)

(ii) "प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए" इस पंक्ति से कवि का अभिप्राय है : (A) व्यक्तिगत अधिकार (B) जातीय विभाजन (C) धार्मिक आस्था (D) सामूहिक स्वामित्व (1)

(iii) "माता के आँचल को दाँतों से चीरना" इस पंक्ति का आज के संदर्भ में सटीक अर्थ क्या है ? (A) जैविक खेती को प्रोत्साहन (B) वनों की अंधाधुंध कटाई (C) हरित ऊर्जा का विकास (D) जल संरक्षण योजनाएँ (1)

(iv) यदि 'भूमि यह मेरी है' की भावना समाज में व्याप्त नहीं होगी तो दुनिया की संरचना कैसी होगी ? (1)

(v) 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' किसे कहा गया है और क्यों ? (2)

(vi) 'टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़' पंक्ति में किन लोगों पर व्यंग्य किया गया है और क्यों ? (2)

Solution

(i) **(C) भूमि पर सबका समान अधिकार** – पूरी कविता इसी भाव पर टिकी है कि धरती, पानी, हवा और आसमान प्रकृति की देन हैं और इन पर सबका समान अधिकार है ।

(ii) **(D) सामूहिक स्वामित्व** – प्रकृति के संसाधन किसी एक के नहीं, सभी जीवों के साझे हैं ।

(iii) **(B) वनों की अंधाधुंध कटाई** – धरती (माता) का आँचल चीरना यानी जंगल काटकर और ज़मीन के टुकड़े करके उसका शोषण करना, जो आज के संदर्भ में वनों की अंधाधुंध कटाई है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 51 of 122

(iv) (कोई एक बिंदु) भूमि पर सबका समान अधिकार होगा; लोगों में पारस्परिक सहयोग और सामूहिकता का भाव होगा; स्वार्थ नहीं होगा; संघर्ष और युद्ध नहीं होंगे ।
(v) **किसे** – उस मनुष्य को जिसने सबसे पहले भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर अपना एकाधिकार जताया और कहा 'भूमि यह मेरी है' । (1)
क्यों – प्राकृतिक संसाधन सार्वभौमिक संपत्ति हैं, उन पर एकाधिकार की भावना स्वार्थ है; इससे दूसरों के अधिकारों का हनन होता है और यह मानवीय मूल्यों के विरुद्ध है । (1)
(vi) **किन पर** – उन लोगों पर जो अन्याय और अत्याचार के समय मूक दर्शक बने रहे । (1)
क्यों – वे चुप रहकर निष्क्रिय बने रहे और विरोध नहीं किया, इससे अन्याय को बल मिला । (1)

CBSE 2026 · 2/7/1 · Q2 | CBSE 2026 · 2/7/2 · Q1 | CBSE 2026 · 2/7/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
जीवन एक संग्राम है, मत समझो यह विश्राम है,
हर दिन नई चुनौती है, हर पल एक इम्तहान है ।
सुख-दुख की इस बगिया में, फूलों के संग काँटे भी हैं,
जो साहस से चलना सीखे, वही असली विजेता है ।
आँधियाँ आएँगी राहों में, बाधाएँ मिलेंगी हर मोड़ पर,
मन को डगमगाने मत देना, विश्वास रखो अपने ज़ोर पर ।
हर असफलता एक सीख है, हर गिरना है एक सबक,
जो गिरकर फिर उठते हैं, वही होते हैं असल में मज़बूत ।
जीवन का यथार्थ यही है, संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म,
कभी मत रुकना इस राह में, चलो निरंतर, यही है कर्म ।
मंजिल मिलेगी निश्चित ही, अगर इरादे पक्के हों,
धैर्य और मेहनत का दीप जलाओ –
सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे ।
(i) जीवन को संग्राम क्यों कहा गया है ? (A) जीवन विश्राम का पर्याय है । (B) जीवन मुस्कान का अभिप्राय है । (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है । (D) जीवन सफलता का पर्याय है । (1)
(ii) 'सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे' से अभिप्राय है : (A) कामनाओं की पूर्ति (B) धन एवं वैभव की उपलब्धि (C) गंतव्य का मार्ग (D) लक्ष्यों की सिद्धि (1)
(iii) कविता के केंद्रीय भाव को दर्शाने वाला/वाले कथन है/हैं :
I. संघर्ष ही जीवन है ।
II. आनंद ही जीवन है ।
III. शांति ही जीवन है ।
विकल्प : (A) केवल I (B) केवल II (C) केवल III (D) I और II दोनों (1)
(iv) काव्यांश के अनुसार जीवन क्या है ? (1)
(v) कवि के अनुसार कौन-से व्यक्ति मज़बूत होते हैं ? (2)
(vi) कवि ने जीवन का यथार्थ किन्हें माना है ? (2)

Solution

(i) **(C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है ।** – हर दिन नई चुनौती है और उससे साहस से जूझना ही जीवन है, इसीलिए इसे संग्राम कहा गया ।
(ii) **(D) लक्ष्यों की सिद्धि** – धैर्य और मेहनत का दीप जलाने पर लक्ष्य अपने-आप सिद्ध होते हैं ।
(iii) **(A) केवल (I)** – पूरी कविता का भाव है कि संघर्ष ही जीवन का सबसे बड़ा धर्म है ।
(iv) जीवन एक संग्राम है, जो सुख-दुख रूपी किनारों के मध्य निरंतर गतिमान है ।
(v) (कोई दो बिंदु) जो स्वयं पर विश्वास रखते हैं; जो असफलताओं से सीख ग्रहण करते हैं; जो गिरकर उठने का साहस रखते हैं । (1 + 1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 52 of 122

(vi) (कोई दो बिंदु) विपरीत परिस्थितियों का सामना करना; संघर्ष करते हुए निरंतर कर्मरत रहना; विपरीत परिस्थितियों में भी लक्ष्य-संधान की ओर अग्रसर रहना; दृढ़ संकल्प, धैर्य तथा परिश्रम के आलोक से मंज़िल तक पहुँचना । (1 + 1)

CBSE 2025 · 2/1/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/1/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/1/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

है दीप एक पर मोल सूर्य से भी भारी
है व्यक्ति एक वर्तिका, दीप धरती सारी
देखो न दुखी हो व्यक्ति, उठे इंसानी लौ,
वनखंड जलाती सिर्फ़ एक ही चिनगारी ।
है झंझापथ, पद आहत, दीपक मद्धिम है
संघर्ष, रातकाली, मंज़िल पर रिमझिम है
लेकिन पुकारता आ पहुँचा युग इंसानी
दो कदम रह गया स्वर्ग चढ़ाई अन्तिम है ।
दीपक, तेरे नीचे घिर रहा अँधेरा है
सोने की चमक तले अनीति का डेरा है
तू इंसानी जीवन की रात मिटा, वरना
इंसान स्वयं बनकर आ रहा सवेरा है ।

(i) 'है दीप एक ..... सूर्य से भी भारी' – पंक्ति का आशय है – (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है । (B) अकेला दीपक सूर्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश प्रदान करने में सक्षम है । (C) एक अकेला प्रकाश का स्रोत सूर्य से अधिक मूल्यवान है । (D) दीपक सूर्य की ऊर्जा से अधिक ऊर्जा अपने भीतर रखता है । (1)

(ii) 'इंसानी जीवन की रात मिटा' – से क्या अभिप्राय है ? (A) शोषित वर्ग के जीवन से रात्रि को दूर करना (B) शोषित वर्ग के घरों को प्रकाशित करना (C) इंसानों के जीवन से अंधकार को दूर करना (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना (1)

(iii) कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए : (क) मद्धिम दीपक, (ख) झंझापथ, (ग) आहत पद — (1) लक्ष्य प्राप्ति के सीमित साधन (2) विपरीत परिस्थितियाँ (3) घायल अंग । विकल्प : (A) क-2, ख-3, ग-1 (B) क-1, ख-2, ग-3 (C) क-3, ख-1, ग-2 (D) क-1, ख-3, ग-2 (1)

(iv) 'इंसान स्वयं सवेरे का रूप धारण कर आ रहा है' – पंक्ति के माध्यम से किसे क्या चेतावनी दी गई है ? (1)

(v) 'वनखंड जलाती है एक चिनगारी' – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ? (2)

(vi) 'इंसानी युग आने और स्वर्ग के दो कदम दूर रह जाने' – से क्या आशय है ? (2)

Solution

(i) (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है । – कवि के अनुसार एक व्यक्ति रूपी दीपक का मोल सूर्य से भी भारी है, अर्थात् अकेला शोषित व्यक्ति भी अपार शक्ति रखता है ।

(ii) (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना । – कवि दीपक (संपन्न-शोषक वर्ग) से कहता है कि वह इंसानी जीवन की रात मिटाए, यानी शोषितों के अभाव दूर कर उन्हें उनके अधिकार दे ।

(iii) (B) क-1, ख-2, ग-3 । – मद्धिम दीपक = लक्ष्य-प्राप्ति के सीमित साधन; झंझापथ = विपरीत परिस्थितियाँ; आहत पद = घायल अंग ।

(iv) **शोषक वर्ग** को चेतावनी दी गई है कि यदि उसने अत्याचार रूपी अंधकार का अंत नहीं किया तो शोषित इंसान स्वयं शक्ति रूपी सवेरा बनकर आएगा और अन्याय को मिटा देगा ।

(v) शोषित व्यक्ति की शक्ति और सामर्थ्य को कम नहीं आँकना चाहिए । जिस प्रकार एक छोटी-सी चिनगारी पूरे वन-प्रदेश को जला देती है, उसी प्रकार विरोध का पहला स्वर शोषण के अंत की शुरुआत बन सकता है ।

(vi) मानव शोषण के अंत के बहुत निकट पहुँच चुका है । संघर्ष की अंतिम चढ़ाई बाकी है; जीवन की कठिनाइयों का अंत कर आदर्श, समतामूलक समाज (स्वर्ग) की स्थापना अब बहुत पास है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 53 of 122

CBSE 2025 · 2/2/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/2/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/2/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नक्शे में जंगल हैं पेड़ नही
नक्शे में नदियाँ हैं पानी नहीं
नक्शे में पहाड़ हैं पत्थर नहीं
नक्शे में देश है लोग नहीं
समझ ही गए होंगे आप कि हम सब
एक नक्शे में रहते हैं

हमारी पैंटों और चप्पलों से लेकर
वल्दियत और चोटों के निशान
नब्ज़ और स्मृतियाँ सहित नप चुके हैं
और नक्शे तैयार हैं

नक्शों में नदियाँ अब भी कितनी
साफ़ हैं और चमकदार
कहती हुई
'हमें तो अब यहीं अच्छा लगता है'

नक्शों में गतियाँ हैं, लक्ष्य हैं, दिशाएँ हैं
अतीत हैं, भविष्य हैं और सब तरह के रंग
क्या नहीं है
बाजरे की रोटियाँ और धनिये-पोदीने की चटनी तक
नक्शे में जा चुकी है
एक लंबे क्यू में खड़े बदहवास हम पूछते हैं
'भाई साहब,
कहीं' हम नक्शे से बाहर तो नहीं छूट जायेंगे ।

(i) 'पैंट और चप्पल' प्रतीकार्थ हैं – (A) शरीर के अधोभाग में धारण करने वाली चीजों के (B) दैनिक जीवन में काम आने वाली चीजों के (C) शरीर को आराम पहुँचाने वाली चीजों के (D) शरीर की सुंदरता को बढ़ाने वाली चीजों के (1)

(ii) 'वल्दियत' शब्द इशारा करता है (A) नक्शे में खींचे गए निशान की ओर (B) देश और समाज से मिली परंपराओं की ओर (C) पुरखों और परंपरा से मिली विरासत की ओर (D) वालिद से मिली संपत्ति और विरासत की ओर (1)

(iii) काव्यांश में प्रयुक्त 'बाजरे की रोटियाँ और धनिये-पोदीने की चटनी' प्रतीकार्थ है – (A) हमारे स्वाद का (B) ग्रामीण भोजन का (C) पारंपरिक भोजन का (D) सादे भोजन का (1)

(iv) 'नब्ज़ और स्मृतियाँ नप चुके हैं' – का क्या अभिप्राय है ? (1)

(v) 'नदियों को नक्शे में ही रहना अच्छा लगता है' – पंक्ति के माध्यम से क्या कटाक्ष किया गया है ? (2)

(vi) 'हम नक्शे से बाहर छूट तो नहीं जाएँगे' – पंक्ति में प्रयुक्त 'हम' कौन हैं और उनकी क्या चिंता है ? (2)

Solution

(i) **(B) दैनिक जीवन में काम आने वाली चीजों के** – पैंट और चप्पल रोज़मर्रा की वस्तुओं के प्रतीक हैं ।

(ii) **(C) पुरखों और परंपरा से मिली विरासत की ओर** – 'वल्दियत' का अर्थ पिता का नाम/पहचान है, जो पुरखों और परंपरा से मिली विरासत की ओर संकेत करता है ।

(iii) **(A) हमारे स्वाद का** – बाजरे की रोटी और धनिये-पोदीने की चटनी हमारे अपने स्वाद और जीवन-शैली की प्रतीक है, जो अब नक्शे में सिमट रही है ।

(iv) हमारी हर गतिविधि और हर अनुभव का लेखा-जोखा रखा जा चुका है, यानी सभी वस्तुएँ और उत्पाद (हमारी साँसें और यादें तक) नक्शे में समा चुके हैं ।

(v) कटाक्ष यह है कि प्रकृति और पर्यावरण की आज की स्थिति शोचनीय है । नदियाँ नक्शे में ही साफ़ और चमकदार दिखाई देती हैं, जबकि यथार्थ में वे प्रदूषित और सूखी हैं ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 54 of 122

(vi) **कौन** – 'हम' साधारण व्यक्ति हैं, जो लंबी कतार में बदहवास खड़े हैं । **चिंता** – उन्हें वर्तमान से असंतुष्टि है और भविष्य के प्रति असुरक्षा का भाव है कि कहीं वे विकास के नक्शे से बाहर न छूट जाएँ ।

CBSE 2025 · 2/4/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/4/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/4/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सिमटा पंख साँझ की लाली
जा बैठी अब तरु शिखरों पर
ताम्रपर्ण पीपल से, शतमुख
झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर !

ज्योति स्तंभ-सा धँस सरिता में
सूर्य क्षितिज पर होता ओझल,
बृहद् जिह्वा विश्लथ केंचुल-सा
लगता चितकबरा गंगाजल !

धूपछाँह के रंग की रेती
अनिल उर्मियों से सर्पांकित
नील लहरियों में लोड़ित
पीला जल रजत जलद से बिंबित !

सिकता, सलिल, समीर सदा से
स्नेह पाश में बँधे समुज्ज्वल,
अनिल पिघलकर सलिल, सलिल
ज्यों गति द्रव खो बन गया लवोपल

शंख घंट बजते मंदिर में
लहरों में होता लय कंपन,
दीप शिखा-सा ज्वलित कलश
नभ में उठकर करता नीरांजन !

(i) तरु शिखर पर जाकर कौन बैठ गया है ? (A) सूर्य रूपी पक्षी (B) संध्या रूपी पक्षी (C) थका-हारा पक्षी (D) समय रूपी पक्षी (1)
(ii) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : (1)

कॉलम-*I*	कॉलम-*II*
1. ज्योति-स्तंभ	(i) कलश
2. केंचुल-सा	(ii) गंगाजल
3. दीपशिखा	(iii) सूर्य

विकल्प : (A) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) (B) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) (C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i) (D) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)
(iii) स्नेह रूपी बंधन में कौन-कौन बँधे हैं ? (A) लहर, जलधार, रेत (B) लहर, रेत, अग्नि (C) हवा, रेत, पानी (D) हवा, लहर, अग्नि (1)
(iv) संध्या के समय गंगा नदी कैसी प्रतीत हो रही है ? (1)
(v) संध्याकालीन प्रकृति की सुंदरता का वर्णन कीजिए । (2)
(vi) संध्या के नदी तट के दृश्य का वर्णन कीजिए । (2)

Solution

(i) (B) संध्या रूपी पक्षी – कवि ने साँझ की लाली को ऐसे पक्षी के रूप में देखा है जो पंख समेटकर पेड़ों की चोटियों पर आ बैठा है ।
(ii) (A) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) – ज्योति-स्तंभ के समान धँसता हुआ सूर्य, केंचुल जैसा चितकबरा गंगाजल और दीप-शिखा जैसा जलता हुआ कलश ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 55 of 122

(iii) (C) हवा, रेत, पानी – 'सिकता' (रेत), 'सलिल' (पानी) और 'समीर' (हवा) सदा से स्नेह-पाश में बँधे हैं ।
(iv) संध्या के समय गंगा का जल ऐसा चितकबरा दिखाई दे रहा है, मानो कोई थका-हारा विशाल चितकबरा अजगर अपनी जीभ फैलाकर विश्राम कर रहा हो ।
(v) (कोई दो बिंदु – 1+1) (1) चारों ओर सूर्य की स्वर्णिम और अरुणिम आभा बिखरी दिखाई देती है । (2) पेड़ों की चोटियों से झरता सूर्य का सुनहरा प्रकाश चंचल सुनहरे झरनों-सा प्रतीत होता है । (3) दूर क्षितिज पर सूर्य ज्योति-स्तंभ की तरह नदी में धँसता हुआ-सा लगता है । (4) संध्या रूपी पक्षी पेड़ों की चोटियों पर विश्राम करता दिखाई देता है ।
(vi) (कोई दो बिंदु – 1+1) (1) नदी-तट की रेत धूप और छाँव के रंग जैसी दिखाई देती है । (2) नदी के किनारे मंदिर में पूजा-आरती शुरू हो जाती है और शंख-घंटे बजने लगते हैं । (3) मंदिर का कलश दीप-शिखा की तरह जगमगाता हुआ आकाश में उठकर मानो गंगा की आरती (नीरांजन) करता प्रतीत होता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 56 of 122

CBSE 2025 · 2/5/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/5/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/5/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जीवन का अभियान दान-बल से अजस्र चलता है,
उतनी बढ़ी ज्योति, स्नेह जितना अनल्प जलता है ।
और दान में रोकर या हँसकर हम जो देते हैं,
अहंकारवश उसे स्वत्व का त्याग मान लेते हैं ।
यह न स्वत्व का त्याग, दान तो जीवन का झरना है,
रखना उसको रोक, मृत्यु से पहले ही मरना है,
किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं ?
गिरने से उसको सँभाल, क्यों रोक नहीं लेते हैं ?
ऋतु के बाद फलों का रुकना डालों का सड़ना है,
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है ।
देते तरु इसलिए कि रेशों में मत कीट समाएँ
रहें डालियाँ स्वस्थ कि उनमें नये-नये फल आएँ
जो नर आत्मदान से अपना जीवन घट भरते हैं
वही मृत्यु के मुख में भी पड़कर न कभी मरते हैं
जहाँ कहीं है ज्योति जगत में, जहाँ कहीं उजियाला
वहाँ खड़ा है कोई अंतिम मोल चुकाने वाला ।

(i) दान को जीवन का झरना क्यों कहा गया है ?

(A) दान कभी व्यर्थ नहीं जाता
(B) दान देने से कीर्ति बनी रहती है
(C) दान को रोकने से मृत्यु से पहले ही मृत्यु हो जाती है
(D) दान देने से जीवन की निरंतरता बनी रहती है

(1)

(ii) 'अंतिम मोल चुकाने वाला' से अभिप्राय है :

(A) वस्तु की अंतिम कीमत अदा करने वाला
(B) स्वत्व का त्याग कर, परोपकार का दीया जलाने वाला
(C) स्वत्व की पूर्ति हेतु कोई भी कीमत अदा करने वाला
(D) कीमत के आधार पर लोगों की सहायता करने वाला

(1)

(iii) कविता के केंद्रीय भाव को दर्शाने वाला/वाले कथन है/हैं :

(I) दान से जीवन को गति मिलना
(II) परोपकार की प्रेरणा
(III) मृत्यु का वरण करना

विकल्प :

(A) केवल (I)
(B) केवल (II)
(C) (I) और (II) दोनों
(D) (I), (II) और (III) तीनों ही

(1)

(iv) कवि ने लोगों के द्वारा दान को क्या मान लेने की बात कही है ? (1)

(v) वृक्ष और फलों का उदाहरण यहाँ किस उद्देश्य से दिया गया है ? (2)

(vi) आत्मदान करने वाले लोग अमर क्यों हो जाते हैं ? (2)

Solution

(i) **(D) दान देने से जीवन की निरंतरता बनी रहती है** – जैसे झरना बहते रहने से जीवित रहता है, वैसे ही दान देते रहने से जीवन की गति और निरंतरता बनी रहती है; दान रोकना मृत्यु से पहले मरना है ।

(ii) **(B) स्वत्व का त्याग कर, परोपकार का दीया जलाने वाला** – जहाँ कहीं संसार में उजाला है, वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति खड़ा है जिसने अपना सब कुछ अर्पित करके दूसरों के लिए प्रकाश जलाया है ।

(iii) **(C) (I) और (II) दोनों** – कविता दान से जीवन के निरंतर चलते रहने और परोपकार की प्रेरणा देती है; मृत्यु का वरण करना कविता का भाव नहीं है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 57 of 122

(iv) कवि के अनुसार लोग अहंकारवश दान को अपने स्वत्व (अधिकार की वस्तु) का त्याग मान लेते हैं ।
(v) वृक्ष और फलों का उदाहरण देय वस्तु के प्रति मोह दिखाने की व्यर्थता बताने के लिए दिया गया है । जैसे ऋतु बीतने पर फलों को रोके रखने से डालियाँ सड़ने लगती हैं, वैसे ही दान न देने से मानव-जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाती है । वृक्ष फल देकर किसी पर कृपा नहीं करते, वे अपने को स्वस्थ रखते हैं ताकि नए फल आ सकें ।
(vi) (1) आत्मदान करने वाले लोग परोपकार के लिए अपना जीवन बिताते हैं, इसलिए संसार उन्हें सदा याद रखता है और वे मृत्यु के मुख में पड़कर भी नहीं मरते । (2) उनके त्याग से दूसरों के जीवन को गति और प्रकाश मिलता है, इसलिए उनका जीवन दूसरों में निरंतर चलता रहता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 58 of 122

CBSE 2025 · 2/6/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/6/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/6/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
तपने के बाद वे भट्टे की समाधि से निकलीं
और एक वास्तुविद के स्वप्न में
विलीन हो गईं
घर एक ईंटों भरी अवधारणा है
जी बिल्कुल ठीक सुना आपने
मकान नहीं घर
जैसे घर में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता
सभी लोग करते हैं सब तरह के काम
एकदम ईंटों की तरह
जो होती हैं एक-दूसरे की पर्यायवाची
एक-दूसरे की बिल्कुल जुड़वाँ
वैसे ईंटें मेरे पाठ्यक्रम में थीं
लेकिन जब वे घर बनाने आईं
तो पाठ्यक्रम से ही बाहर था उनका हर दृश्य
ईंटों के चट्टे की छाया में
तीन ईंटें थीं एक मज़दूरनी का चूल्हा
एक उसके थके हुए सिर के नीचे लगी थी
बाद में जो लगने से बच गईं
उनको तो करने थे और बड़े काम
बक्सों-अलमारियों को सीलन से बचाना था
टूटे हुए पायों को थामना था
ऊँची जगहों तक पहुँचने के लिए
बच्चों का क़द
ईंटों को ही बढ़ाना था
हम चाहते हैं ईंटें हों सुडौल
रंगत हो सुर्ख़
बोली में धातुओं की खनक
फिर दाम भी हों मुनासिब

(i) तपने के बाद ईंटों के साथ क्या हुआ ? निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : कथन I : ईंटें भट्टे में समाधिस्थ ही रहीं । कथन II : ईंटें भट्टे में ही विलीन हो गईं । कथन III : ईंटें भवन-निर्माता के सपनों को आकार देने लग गईं । कथन IV : ईंटें भट्टे से बाहर निकल आईं । निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए । **विकल्प :** (A) केवल कथन I सही है । (B) केवल कथन IV सही है । (C) केवल कथन I और III सही हैं । (D) केवल कथन III और IV सही हैं । (1)

(ii) पाठ्यक्रम से इतर ईंटों का बाहरी दृश्य क्या था ? (A) भवन-निर्माण सामग्री के रूप में उपयोग आना (B) बच्चों के खेल-कूद की सामग्री के रूप में काम आना (C) तपने के लिए भट्टे की अग्नि को सहन करना (D) मज़दूरों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं में काम आना (1)

(iii) 'फिर दाम भी हों मुनासिब' – पंक्ति के माध्यम से मानव स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है ? (A) कम दाम में गुणवत्तापूर्ण वस्तु खरीदना (B) वस्तु खरीदते समय मोल-भाव करना (C) उचित मूल्य देकर ही वस्तु खरीदना (D) वस्तु खरीदने से पहले जेब टटोलना (1)

(iv) मज़दूरनी ने ईंटों का उपयोग कैसे किया ? (1)

(v) गृह-निर्माण के पश्चात् बची ईंटों के साथ क्या हुआ ? (2)

(vi) 'घर को ईंटों भरी अवधारणा' किस आधार पर कहा गया है ? (2)

Solution

(i) **(D) केवल कथन III और IV सही हैं ।** – तपने के बाद ईंटें भट्टे से बाहर निकलीं (IV) और वास्तुविद के स्वप्न को आकार देने में लग गईं (III) ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 59 of 122

(ii) **(D) मज़दूरों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं में काम आना** – कवि ने देखा कि तीन ईंटें मज़दूरनी का चूल्हा बनी थीं और एक उसके थके सिर के नीचे तकिया थी ।
(iii) **(A) कम दाम में गुणवत्तापूर्ण वस्तु खरीदना** – हम सुडौल, सुर्ख़ रंगत वाली, खनकदार ईंट चाहते हैं, पर साथ ही दाम भी कम (मुनासिब) चाहते हैं; यही मानव स्वभाव है (उत्तर बोर्ड की अंक-योजना के अनुसार) ।
(iv) मज़दूरनी ने तीन ईंटों से अपना चूल्हा बनाया और एक ईंट अपने थके हुए सिर के नीचे सहारे (तकिये) के रूप में लगाई ।
(v) बची हुई ईंटें और बड़े कामों में लगीं – (1) बक्सों और अलमारियों को सीलन से बचाने तथा टूटे पायों को थामने में, (2) ऊँची जगहों तक पहुँचने के लिए बच्चों का क़द बढ़ाने (उनके पैरों के नीचे सहारा बनने) में ।
(vi) (1) रूपाकार की समानता के कारण – सभी ईंटें एक-सी, एक-दूसरे की जुड़वाँ होती हैं, (2) घर में भी कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, सब मिलकर सब काम करते हैं, जैसे ईंटें एक-दूसरे की पूरक होकर दीवार बनाती हैं । इसी कारण घर को 'ईंटों भरी अवधारणा' कहा गया है ।

CBSE 2025 · 2/7/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/7/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/7/3 · Q2 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
बज रहा है शंख रण-आह्वान का,
बढ़ सिपाही के सदृश बलिदान कर,
आँख में लेकर चमक संकल्प की,
ले हृदय उत्साह वाणी में प्रबल ।
तू भुजा में नित अमित बल-शक्ति ले,
और संशयहीन चिंतन ले सबल ।
उठ, अरे ओ देश के प्यारे तरुण,
सिंह-सम पाषाण सीना तानकर
और संशयहीन चिंतन ले सबल ।
ओ नए युग के युवक नव शक्तिमय,
पथ अँधेरे से ढका सब ओर है
सूर्य-सम दीपित उठाकर भाल को
देख, कैसा सभ्यता का भोर है ।
पार्थ के सम आँख के प्रतिबिंब से
ओ तरुण ! उठ लक्ष्य का संधान कर ।
हस्तगत करके विजय सब ओर बढ़
शत्रु के अभिमान-मंडित शीश चढ़ ।
मुक्ति के संघर्ष में कर दिग्विजय
आज फिर नव एकता के पाठ पढ़ ।
खटखटाती द्वार है युग-चेतना,
तोड़ दे ये लौह-पट तू आनकर ॥।
(i) पद्यांश में कवि किसे संबोधित कर रहा है ? (A) देश की युवाशक्ति को (B) सीमा पर लड़ने वाले सैनिकों को (C) जीवन रूपी संघर्ष में हारने वाले योद्धाओं को (D) देश की उन्नति में योगदान देने वाले विद्वानों को (1)
(ii) 'पथ अँधेरे से ढका सब ओर है' – पंक्ति में 'अँधेरा' प्रतीकार्थ है : (A) अज्ञान (B) अंधकार (C) निराशा (D) विपत्तियाँ (1)
(iii) 'भाल' शब्द का अर्थ है : (A) भाला (B) मस्तक (C) छाती (D) भुजा (1)
(iv) 'लक्ष्य का संधान कर' से क्या अभिप्राय है ? (1)
(v) 'तोड़ दे ये लौह-पट तू आनकर' पंक्ति में 'लौह-पट' से क्या आशय है ? (2)
(vi) इस पद्यांश में क्या प्रेरणा दी गई है ? (2)

Solution

(i) **(A) देश की युवाशक्ति को** – कवि 'देश के प्यारे तरुण', 'नए युग के युवक' कहकर युवाओं को ललकार रहा है ।
(ii) **(C) निराशा** (उत्तर बोर्ड की अंक-योजना के अनुसार) – 'अँधेरा' यहाँ निराशा और हताशा का प्रतीक माना गया है, जिसे दूर कर युवक को आगे बढ़ना है ।
(iii) **(B) मस्तक** – 'भाल' का अर्थ माथा/मस्तक है; 'सूर्य-सम दीपित उठाकर भाल को' का अर्थ है गर्व से सिर उठाकर ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 60 of 122

(iv) 'लक्ष्य का संधान करना' का अर्थ है एकाग्रचित्त होकर, पार्थ (अर्जुन) की तरह ध्यान केंद्रित कर अपने लक्ष्य का निर्धारण करना और उसे भेदना ।
(v) (1) 'लौह-पट' (लोहे का परदा) व्यवस्था की जड़ता का प्रतीक है, (2) और राष्ट्र एवं समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता का भी, जो प्रगति का मार्ग रोके हुए है ।
(vi) (कोई दो बिंदु) (1) व्यवस्था की जड़ता और समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता को तोड़ने की । (2) ध्यान केंद्रित कर लक्ष्य का संधान करने की । (3) राष्ट्रीय एवं सामाजिक एकता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होने की । (4) संघर्ष द्वारा विजय प्राप्त करने की ।

CBSE 2025 · 2/S/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/S/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/S/3 · Q1 **asked 3 times** **8 marks**

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
मेरा माँझी मुझसे कहता रहता था
बिना बात तुम नहीं किसी से टकराना ।
पर जो बार-बार बाधा बन कर आएँ,
उनके सिर को वहीं कुचल कर बढ़ जाना ।
जानबूझकर मेरे पथ में आती हैं,
भवसागर की चलती-फिरती चट्टानें ।
मैं इनसे जितना ही बचकर चलता हूँ,
उतना ही मिलती हैं, ये ग्रीवा ताने ।
रख अपनी पतवार, कुदाली लेकर
तब मैं इनका उन्नत भाल झुकाता हूँ ।
राह बनाकर नाव बढ़ाए जाता हूँ ।
जीवन की नैया का चतुर खिवैया मैं
भवसागर में नाव बढ़ाए जाता हूँ ।
अगणित नौकाएँ तोड़ी चट्टानों ने,
तूफानों ने नाविक कई बहाए हैं ।
सागर में रहने वाले घड़ियालों ने,
जाने कितने बेबस राही खाए हैं ।
मेरे प्रिय, पतवार चलाना सीखो तुम ।
जीवन की रक्षा हित बहुत जरूरी है,
खूनी लहरों से टकराना सीखो तुम ।
वैसे तो मैं हरदम साथ रहूँगा ही
फिर भी जीने का रहस्य बतलाता हूँ ।
तूफानों में नाव बढ़ाए जाता हूँ ।
(i) 'मेरा माँझी मुझसे कहता रहता था' पंक्ति के संदर्भ में लिखिए कवि का माँझी कौन है ? (A) गुरु (B) अंतर्मन (C) ईश्वर (D) नियति
(ii) कुदाली लेकर कवि किसका उन्नत भाल झुकाता है ? (A) सांसारिक विपत्तियों का (B) सागर की लहरों का (C) सामाजिक परंपराओं का (D) लोगों की सोच का
(iii) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

कॉलम-I	कॉलम-II
1. कुदाल	(i) विनाशकारी स्थितियाँ
2. घड़ियाल	(ii) विध्वंसकारी साधन
3. खूनी लहरें	(iii) शोषक वर्ग

विकल्प : (A) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i) (B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii) (C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i) (D) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)
(iv) कवि ने स्वयं को 'जीवन का चतुर खिवैया' क्यों कहा है ? (1)
(v) जीवन की रक्षा हित के लिए क्या जरूरी है और क्यों ? (2)
(vi) संसार रूपी सागर से पार उतरने का रहस्य काव्यांश के आधार पर क्या है ? (2)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 61 of 122

Solution

(i) **(B) अंतर्मन** – कवि का माँझी उसका अपना अंतर्मन (अंतरात्मा) है, जो उसे राह दिखाता रहता है ।
(ii) **(A) सांसारिक विपत्तियों का** – कुदाली लेकर कवि भवसागर की चट्टान रूपी विपत्तियों का उन्नत भाल (अकड़ा हुआ सिर) झुकाता है ।
(iii) **(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)** – कुदाल विध्वंसकारी साधन है, घड़ियाल शोषक वर्ग का और खूनी लहरें विनाशकारी स्थितियों का प्रतीक हैं ।
(iv) जीवन रूपी संघर्ष का सामना कुशलतापूर्वक करने के कारण कवि स्वयं को चतुर खिवैया कहता है । (1)
(v) जीवन की रक्षा के लिए विपत्तियों का सामना करना और उनसे संघर्ष करना जरूरी है, (1) क्योंकि विपत्तियों से डरकर कभी किनारे पर नहीं पहुँचा जा सकता । (1)
(vi) संसार रूपी सागर से पार उतरने का रहस्य है – आँधी-तूफान, चट्टान, लहरों और घड़ियाल रूपी संकटों से न घबराना (1) तथा विपत्तियों के बीच राह बनाकर आगे बढ़ते जाना । (1)

10 अंक : अपठित गद्यांश

CBSE 2026 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2026 · 2/1/2 · Q2 | CBSE 2026 · 2/1/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
संस्कृति और सभ्यता – ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं । सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है । संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है । एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था । इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं । लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया । यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा । आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं । मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है । वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है । भोजन की सामग्री हम सभ्यता के ज़रिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है ।
(i) संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – (A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है (C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है (D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है (1)
(ii) गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है ? (A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता (B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा (C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम (1)
(iii) कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है । कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है । (A) कथन सही है, कारण गलत है । (B) कथन गलत है, कारण सही है । (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (D) कथन और कारण दोनों गलत हैं । (1)
(iv) 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए । (1)
(v) 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे ? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए । (2)
(vi) "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है ।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए । (2)
(vii) सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी ? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए ? (2)

Solution

(i) **(B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है ।** – सभ्यता बाहरी उन्नति है, जबकि संस्कृति भीतरी उन्नति है; इसलिए वह अधिक सूक्ष्म है ।
(ii) **(D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम ।** – सभ्यता वह गुण है जिससे मनुष्य घर, खेती, कपड़े, रेल-मोटर जैसी बाहरी उन्नति करता है ।
(iii) **(C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – दया, ममता, परोपकार और कला का

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 62 of 122

आनंद गद्यांश में संस्कृति के गुण बताए गए हैं; ये मानवीय मूल्य और कौशल ही हैं, इसलिए कारण कथन को ठीक समझाता है ।
(iv) सभ्यता मनुष्य की **बाहरी उन्नति** है और संस्कृति **भीतरी उन्नति** । जैसे – मोटर और मकान सभ्यता हैं, जबकि मोटर बनाने की कला और मकान बनाने की रुचि संस्कृति है ।
(v) सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं । आवश्यक वस्तुओं और सुविधाओं का निर्माण सभ्यता है और उनके उपयोग का ढंग संस्कृति । उदाहरण – भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है, किंतु भोजन तैयार करने और खाने की कला संस्कृति है ।
(vi) संस्कृति मनुष्य की भीतरी उन्नति का गुण है । इसी से मनुष्य दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता प्राप्त करता है । ये गुण शरीर के नहीं, मन और आत्मा के हैं; इसलिए संस्कृति आत्मा का गुण है ।
(vii) **पूर्व की स्थिति** – मनुष्य असभ्य अवस्था में था; वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में रहता था, कंद-मूल खाकर गुज़ारा करता था और निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल, जानवरों की खाल पहनता था ।
परिणाम – वह खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर पहनने लगा; आगे चलकर रेल, मोटर, हवाई जहाज़ जैसे साधन बने ।

CBSE 2026 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2026 · 2/2/2 · Q2 | CBSE 2026 · 2/2/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
लेखक और प्रकाशक एक-दूसरे के पूरक होते हैं । यदि प्रकाशक नहीं हों, तो लेखकों की कृतियों को लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत कौन करेगा और यदि लेखक नहीं हों, तो प्रकाशन के व्यवसाय की शुरुआत कैसे हो, प्रकाशक का जन्म ही कहाँ से हो ?
यह सत्य है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है, लेकिन तने के विस्तार को सब लोग देखते हैं और मूल की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता । वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है । प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर, शानशौकत अब सभी प्रमुख नगरों में हम देख सकते हैं । पर बेचारे लेखक को हम ढूँढने से ही पा सकते हैं ।
इस स्वाभाविक स्थिति की विषमता लेखक और प्रकाशक के पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव पैदा करती है । मूल और तने के बीच का तनाव कभी सुफल नहीं ला सकता । इस विषम स्थिति से निकलने के लिए दोनों को यह सोचना होगा कि सामंजस्य कैसे स्थापित हो ? सोचना इसलिए भी जरूरी है कि कुछ लोग इस तनाव को बढ़ाने की ही दिशा में काम करते नज़र आ रहे हैं । वे लेखक से कहते हैं, देखो, तुम्हारा कितना शोषण हो रहा है, ये प्रकाशक जोंक हैं जोंक । इनसे बचो । और प्रकाशक से कहा जाता है, अजी साहब, इस लेखक को जानता कौन था ? यह तो आप हैं, जिसने इसे आसमान पर चढ़ाया !
तनाव बढ़ता जा रहा है । दोनों की हानि हो रही है । यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है । अत: इस पर चिंतन करना अनिवार्य है ।
(i) लेखक और प्रकाशक के बीच परस्पर कैसा संबंध है ? (A) फूल और पत्ते जैसा (B) मूल और तने जैसा (C) फल और शाखा जैसा (D) कली और फूल जैसा
(ii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक और प्रकाशक के बीच किस प्रकार का संबंध बताया गया है ? (A) परस्पर सहयोग का (B) पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का (C) पारस्परिक प्रेम का (D) पारस्परिक तनाव का
(iii) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :
कथन : प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट है ।
कारण : लेखक को ढूँढना कठिन है जबकि प्रकाशक की भौतिक समृद्धि आसानी से दिखती है ।
विकल्प : (A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (B) कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता । (C) कथन सही है, कारण गलत है । (D) कथन गलत है, कारण सही है ।
(iv) गद्यांश के अनुसार 'वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है' – कौन भूमिष्ठ रहता है और क्यों ? (1)
(v) लेखक और प्रकाशक दोनों कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं ? किन्हीं दो तर्कों द्वारा पुष्टि कीजिए । (2)
(vi) लेखक और प्रकाशक के बीच संबंधों में सुधार किस प्रकार आ सकता है ? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए । (2)
(vii) लेखक और प्रकाशक के संबंधों में दूरी बढ़ने के क्या कारण हैं ? इस दूरी के बढ़ने से क्या हानि हो रही है ? (2)

Solution

(i) **(B) मूल और तने जैसा** – गद्यांश में लेखक को मूल (जड़) और प्रकाशक को उसका तना कहा गया है ।
(ii) **(D) पारस्परिक तनाव का** – विषम स्थिति के कारण दोनों के संबंधों में तनाव पैदा होता है और बढ़ता जा रहा है ।
(iii) **(B) कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता ।** – उत्तर सीबीएसई अंक-योजना के अनुसार ।
(iv) **कौन** – लेखक (रचनाकार) । (½)
क्यों – (कोई एक बिंदु) पुस्तक की पहचान प्रकाशन से होती है, लेखक से नहीं; लेखक को लेखन का प्रतिफल कम मिलता है; लेखक की पहचान प्रकाशक के कारण है । (½)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 63 of 122

(v) (कोई दो बिंदु) दोनों साहित्य-जगत के लिए उपयोगी हैं; एक के बिना दूसरे का कर्म अधूरा है; लेखक कृति का निर्माता है और प्रकाशक उसे संपादित कर पाठकों तक पहुँचाने का माध्यम है; लेखक के बिना प्रकाशक का अस्तित्व नहीं और प्रकाशक के बिना लेखक की पहचान नहीं । (1 + 1)

(vi) (कोई दो बिंदु) एक-दूसरे की भूमिका को समझकर; एक-दूसरे का सम्मान करके; दोनों के बीच सहयोग रखकर; आपसी हितों को ध्यान में रखकर; दोनों के कार्यों को एक-दूसरे से जोड़कर देखना । (1 + 1)

(vii) **कारण** (कोई एक बिंदु) – लेखक को लगना कि प्रकाशक द्वारा उसका शोषण किया जा रहा है; दोनों द्वारा स्वयं को एक-दूसरे की पहचान का कारण मानना; कुछ लोगों द्वारा तनाव को और बढ़ाया जाना । (1)

हानि (कोई एक बिंदु) – दोनों के बीच तनाव बढ़ना; दोनों का भविष्य प्रभावित होना । (1)

CBSE 2026 · 2/3/1 · Q1 | CBSE 2026 · 2/3/2 · Q2 | CBSE 2026 · 2/3/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

नि:शब्द धीमी चाल और सदियों का साक्षी – जब कोई प्राणी हमारी धरती पर प्रकृति का सबसे शांत लेकिन सबसे मज़बूत प्रहरी बनकर खड़ा हो, तो उसका महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रह जाता, वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है । कछुआ, जो समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के पदचिह्न छोड़ता आया है, आज खतरे में है । *23* मई को मनाया जाने वाला विश्व कछुआ दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि पुकार है, उस मौन जीवन के लिए, जिसे हमने वर्षों तक नज़रअंदाज़ किया और जो आज हमसे बचाव की गुहार कर रहा है ।

मान्यता है कि कछुए धरती पर करोड़ों वर्षों से अस्तित्व में हैं । उन्होंने हिम युगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है । उनके अस्तित्व की स्थिरता, उनकी धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली का प्रमाण है । मगर दुखद है कि आज जिन संकटों का वे सामना कर रहे हैं वे किसी प्राकृतिक आपदा के नहीं, बल्कि मानवीय लालच और लापरवाही के कारण हैं । विश्व में ज्ञात *350* से अधिक कछुआ प्रजातियों में से लगभग *60* फीसदी प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलोप के कगार पर हैं । समुद्री कछुए-जैसे मादा ऑलिव रिडले, जो हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए ओडिशा तट पर आती है, को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है । इन मूक प्राणियों के लिए संकट के प्रमुख कारणों में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन है । कछुआ हमें सिखाता है कि दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है । यह भी कि मौन शक्ति की एक अलग भाषा है, जो शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से बोलती है । उनकी धीमी चाल में हमें भविष्य की गूँज सुनाई देती है कि यदि हम उन्हें बचा पाए तो खुद को बचा पाएँगे ।

(i) गद्यांश के आधार पर कछुए की महत्ता का मुख्य आधार है : (A) नि:शब्द मंद गति (B) उसका शांत स्वभाव (C) जैव-विविधता का अंग (D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

(ii) जैव-विविधता से अभिप्राय है : (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता (B) पेड़-पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ (C) सूक्ष्म जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ (D) पशु-पक्षियों के जीवन की विविधता

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के चिह्न छोड़ने वाले कछुओं का जीवन आज संकट में है ।

कारण : उन्होंने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है ।

विकल्प : (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं । (B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है । (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।

(iv) 'मौन शक्ति की एक अलग भाषा है' – आशय स्पष्ट कीजिए । (2)

(v) "दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है" – से क्या अभिप्राय है ? (2)

(vi) कछुओं के संरक्षण हेतु किन्हीं दो उपायों का उल्लेख कीजिए । (1)

(vii) प्रवासी कछुए भारत में क्यों आते हैं ? इन्हें किससे खतरा है ? (2)

Solution

(i) **(D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा** – गद्यांश के अनुसार कछुआ जैव-विविधता तक सीमित न रहकर संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है ।

(ii) **(A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता** – जैव-विविधता का अर्थ पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी प्रकार के जीवन की विविधता है ।

(iii) **(C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है ।** – कछुए आज संकट में हैं (कथन सही), उन्होंने हिमयुग आदि को झेला है (कारण सही), पर यह कारण उनके आज के संकट की व्याख्या नहीं करता; गद्यांश के अनुसार आज का संकट मानवीय लालच और लापरवाही से है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 64 of 122

(iv) (कोई दो बिंदु, 1 + 1) मौन शक्ति का शब्दों से नहीं, कर्म से बोलना; मौन रहकर, आत्मनिरीक्षण कर स्वयं में सुधार एवं ऊर्जा का संरक्षण करना; मौन भी अपने आप में एक अभिव्यक्ति है ।
(v) (कोई दो बिंदु, 1 + 1) सफलता-प्राप्ति के लिए, लक्ष्य की सिद्धि के लिए पथ पर बने रहना आवश्यक है; संयम, धैर्य, निरंतरता और स्थायित्व ही लक्ष्य-प्राप्ति के प्रमुख साधन हैं; कछुए की धीमी चाल में भविष्य की गूँज सुनाई देती है, अर्थात् धीमे पर लगातार चलने वाला ही अंत में टिकता है ।
(vi) (कोई एक बिंदु, अन्य उचित विचार भी स्वीकार्य) कछुओं के अवैध व्यापार पर प्रतिबंध लगाना; समुद्र तट का अतिक्रमण रोकना; प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम करना । (1)
(vii) **क्यों** – वे जनन (अंडे देने) के लिए भारत के तट (ओडिशा) पर आते हैं । (1)
खतरा (कोई एक बिंदु) – जल और प्रकाश प्रदूषण से; मानवीय हस्तक्षेप/लालच से । (1)

CBSE 2026 · 2/4/1 · Q1 | CBSE 2026 · 2/4/2 · Q2 | CBSE 2026 · 2/4/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने की शैली में परिवर्तन लाकर सोशल मीडिया आधुनिक युग का सर्वव्यापी पहलू बन गया है । इसने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित बना दिया है और यह सभी आयु समूहों के लिए एक आसान माध्यम बन चुका है । सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, यूट्यूब, आदि उपयोगकर्ता को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करते हैं । इसका महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है । यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए एक प्रभावी माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा, व्यापार और यहाँ तक कि राजनीति में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इसने सूचना के प्रसार को अत्यधिक तेज़ और सस्ता बना दिया है । इसके जरिए लोग घटनाओं का सीधा प्रसारण विश्व के किसी भी कोने से देख सकते हैं । इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने एक क्रांति सी ला दी है । छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है । व्यावसायिक गतिविधियाँ-जैसे उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करना, ग्राहकों से जुड़ना, विपणन अभियानों को तेज़ी से फैलाने में भी यह मदद करता है ।
सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है वहीं समाज पर इसका दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहा है । लोग तनाव और अवसाद से प्रभावित हो रहे हैं, अकेलापन बढ़ रहा है, अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है । इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है । अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में लिखना, अपनी आत्मीय तस्वीरें शेयर करना, चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी को बढ़ा सकता है । आपको याद रखना चाहिए कि इस मंच पर आने वाले आपके आभासी मित्र, सच्चे मित्र या हितैषी नहीं होते । लोग आपकी उपस्थिति का लाभ उठाकर आपको धोखा-धड़ी का शिकार बना लेते हैं । 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं । वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं ।
यद्यपि यह लोगों से जुड़ने, सूचना के प्रचार-प्रसार, समुदाय में अहम भूमिका निभा रहा है लेकिन इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए ।
(i) निम्नलिखित में से सोशल मीडिया का प्रकार **नहीं** है : (A) इंस्टाग्राम (B) व्हाट्सऐप (C) ट्विटर (D) फेसबुक
(ii) सोशल मीडिया की लोकप्रियता का नकारात्मक प्रभाव है : (A) सूचनाओं का त्वरित प्रसारण (B) दुनियाभर से जुड़ने का अवसर (C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा (D) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान
(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :
कथन : सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है ।
कारण : सामाजिक संरचना के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है ।
विकल्प : (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं । (B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है । (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या **नहीं** करता है । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।
(iv) सोशल मीडिया से क्या अभिप्राय है ? (1)
(v) सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए । (2)
(vi) सोशल मीडिया पर 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं । कैसे ? स्पष्ट कीजिए । (2)
(vii) सोशल मीडिया की लत का खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से क्या संबंध है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए । (2)

Solution

(i) **(B) व्हाट्सऐप** – उत्तर सीबीएसई अंक-योजना के अनुसार ।
(ii) **(C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा** – गद्यांश में कहा गया है कि सोशल मीडिया ने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है, जो उसका नकारात्मक प्रभाव है ।
(iii) **(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – सामाजिक संरचना और रचनात्मकता के प्रदर्शन में भूमिका के कारण ही इसका महत्त्व बढ़ रहा है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 65 of 122

(iv) मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने का माध्यम । (1)
(v) (कोई दो बिंदु) सूचनाओं और घटनाओं का त्वरित प्रसारण; वैश्विक मंच पर अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करना; व्यक्तिगत जीवन के साथ शिक्षा, व्यापार और राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाना; व्यावसायिक गतिविधियों में सहायक । (1 + 1)
(vi) (कोई दो बिंदु) आत्म-मुग्धता को बढ़ावा मिलता है; निजी ज़िंदगी की जानकारी और आत्मीय तस्वीरें सार्वजनिक करने की होड़ लगती है; चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहने से बेचैनी बढ़ती है । (1 + 1)
(vii) (कोई दो बिंदु, अन्य उपयुक्त तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर भी स्वीकार्य) लत से तनाव और अवसाद से प्रभावित होना; अकेलापन बढ़ना; अनिद्रा और बेचैनी का बढ़ना । घंटों स्क्रीन पर रहने से शारीरिक गतिविधि घटती है, इसीलिए वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं । (1 + 1)

CBSE 2026 · 2/5/1 · Q1 | CBSE 2026 · 2/5/2 · Q2 | CBSE 2026 · 2/5/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
जीवन के लिए जागना जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी सोना है । दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे के सहारे पर हैं । नींद का न आना भी एक विकार है, जिससे अनेक प्रकार की बाधाएँ आ सकती हैं और जो प्राणी रात-दिन सोता ही रहे, वह तो निष्क्रिय ही है । यदि दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की सहायता करती रहें – आदमी जागे कर्म करने के लिए, सोये विश्राम के लिए – तो जीवन सुखी होता है, लेकिन जागना जीवन का मुख्य लक्षण है, सोना अर्थात् – विश्राम, तो केवल उसका सहायक है । इसलिए, जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है और निद्रा पतन तथा ह्रास का । जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है, निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है । कम-से-कम सोने के लिए अनेक उपाय और साधन बताए गए हैं । अधिक-से-अधिक सोने के लिए आज तक किसी ने कोई उपाय नहीं बताया – उसी तरह, जैसे स्वस्थ रहने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न किए जाते हैं, पर बीमारी के लिए भी किसी ने कोई प्रयत्न किया है, ऐसा कभी सुनने में नहीं आया । वास्तव में स्वास्थ्य का न होना ही बीमारी है – उसी तरह, जैसे प्रकाश का न होना ही अंधकार है । आदमी जितना ही कम सोये उतना ही जागरूक है, यहाँ तक कि कई विद्वानों का मत है, सोना कोई आवश्यक क्रिया नहीं । संभव है तपस्वियों के लिए सोना आवश्यक न हो, उनकी प्रकृति में रज और सत ही रह जाता हो, तम की सर्वथा हानि हो जाती हो, पर साधारण प्राणियों के लिए भी यही नियम लागू है कि मात्रा से अधिक सोने में हानि है, अतएव जब हम किसी राष्ट्र के विषय में जागृति की कामना करते हैं, तो इसका बोध यह होता है कि वह राष्ट्र मात्रा से अधिक तमोगुणी हो गया और उसमें जीवन की मात्रा ज़रूरत से कम है ।
(i) 'जागृति' और 'निद्रा' किन गुणों से संबंधित हैं ? (A) सत और तम (B) रज और सत (C) सत और रज (D) रज और तम (1)
(ii) गद्यांश के अनुसार सोना अर्थात् निद्रा किसकी सहायक है ? (A) स्वास्थ्य की (B) जागने की (C) विश्राम की (D) मृत्यु की (1)
(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :
कथन : जागना जीवन के लिए आवश्यक है ।
कारण : जाग्रत हो ध्यानपूर्वक कर्म करने से ही, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है ।
विकल्प : (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं । (B) कथन सही है, किंतु कारण ग़लत है । (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या **नहीं** करता है । (1)
(iv) 'जागृति' और 'निद्रा' किसके प्रतीक हैं ? गद्यांश के आधार पर बताइए । (1)
(v) 'जागना' और 'सोना' दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक कैसे हैं ? स्पष्ट कीजिए । (2)
(vi) लेखक के अनुसार 'किसी राष्ट्र की जागृति' का क्या तात्पर्य है ? उल्लेख कीजिए । (2)
(vii) निद्रा को किस गुण की प्रधानता से जोड़ा गया है और क्यों ? (2)

Solution

(i) **(D) रज और तम** – गद्यांश में कहा गया है कि जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है और निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है ।
(ii) **(C) विश्राम की** – जागना जीवन का मुख्य लक्षण है और सोना, अर्थात् विश्राम, केवल उसका सहायक है ।
(iii) **(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – जागकर सजग भाव से कर्म करने से ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र आगे बढ़ते हैं, इसीलिए जागना जीवन के लिए आवश्यक है ।
(iv) **जागृति** जीवन, प्रगति, समृद्धि, अभ्युदय और विकास की प्रतीक है; **निद्रा** पतन, क्षय, ह्रास और विनाश की प्रतीक है । (½ + ½)
(v) (कोई दो बिंदु) 'जागना' कर्म करने के लिए और 'सोना' विश्राम के लिए आवश्यक है; जब दोनों संतुलित रहते हैं तो जीवन सुखी होता है । केवल जागते रहना या केवल सोते रहना, दोनों हानिकारक हैं । जागना जीवन का मुख्य लक्ष्य है और सोना उसका सहायक है, इसलिए दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं । (1 + 1)
(vi) (कोई दो बिंदु) लेखक के अनुसार किसी राष्ट्र की जागृति का तात्पर्य है – उसका तमोगुण (आलस्य, जड़ता) से बाहर निकलना; उसमें

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 66 of 122

जीवन-शक्ति का विकसित होना; सक्रियता का संचार होना; लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना और विकास की ओर अग्रसर होना । (1 + 1)

(vii) **किस गुण से** – निद्रा को **तमोगुण** की प्रधानता से जोड़ा गया है । (1)

क्यों – (कोई एक बिंदु) अधिक सोने से शारीरिक शिथिलता और निष्क्रियता बढ़ती है; जीवन की मात्रा ज़रूरत से कम हो जाती है; स्वास्थ्य प्रभावित होता है । (1)

CBSE 2026 · 2/7/1 · Q1 | CBSE 2026 · 2/7/2 · Q2 | CBSE 2026 · 2/7/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है । भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पटकथा में गाँवों की अहम् भूमिका है । बदलते समय के साथ, "डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था" एक नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है । यह व्यवस्था न केवल तकनीकी विकास का संकेत है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम है ।

डिजिटल इंडिया मिशन के तहत अब ग्राम पंचायतों में इंटरनेट सुविधाएँ, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं । किसान अब मोबाइल ऐप्स की सहायता से मौसम की जानकारी, फ़सल बीमा योजनाएँ और बाज़ार के दाम जान सकते हैं । इससे उनकी निर्भरता बिचौलियों पर कम हो गई है ।

ग्राम स्तर पर ई-गवर्नेंस ने पारदर्शिता बढ़ाई है । जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ अब ऑनलाइन हो गई हैं । हालाँकि चुनौतियाँ अब भी हैं – जैसे डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति, फिर भी यह बदलाव धीरे-धीरे ग्रामीण जीवन को सशक्त बना रहा है । यदि सही दिशा में प्रयास जारी रहे, तो डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर कर सकती है ।

(i) गद्यांश में ग्रामीण भारत के हृदय में नवीन विकास के संकेत का प्रतीक किसे कहा गया है ? (A) तकनीकी विकास की व्यवस्था (B) सामाजिक विकास की व्यवस्था (C) आर्थिक विकास की व्यवस्था (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था (1)

(ii) डिजिटल व्यवस्था से किसानों को क्या लाभ हुआ है ? (A) कर देने में सुविधा होना (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना (C) अनाज भंडारण की सुविधा होना (D) मज़दूरी में वृद्धि होना (1)

(iii) निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन I : ई-गवर्नेंस सिस्टम में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हैं ।

कथन II : ई-गवर्नेंस सिस्टम में पारदर्शिता के कारण सरकारी जानकारी एवं सेवाओं तक नागरिकों की पहुँच में वृद्धि हुई है ।

कथन III : ई-गवर्नेंस सिस्टम ग्रामीण भारत को आधुनिक और सशक्त बना रहा है ।

कथन IV : ई-गवर्नेंस सिस्टम समय और धन का अपव्यय करता है ।

विकल्प : (A) केवल कथन I और IV सही हैं । (B) केवल कथन III और IV सही हैं । (C) केवल कथन II और III सही हैं । (D) केवल कथन I और II सही हैं । (1)

(iv) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य क्या है ? (1)

(v) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था से ग्राम पंचायतों में कौन सी सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं ? (2)

(vi) किसानों को डिजिटल तकनीक के तहत मोबाइल ऐप के माध्यम से किन-किन सुविधाओं की प्राप्ति हो रही है ? (2)

(vii) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को सफल बनाने में कौन-सी मुख्य चुनौतियाँ हैं ? (2)

Solution

(i) **(D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था** – गद्यांश के अनुसार यही एक नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है ।

(ii) **(B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना** – मोबाइल ऐप से किसान मौसम, बीमा और बाज़ार-भाव खुद जान लेते हैं ।

(iii) **(C) केवल कथन II और III सही हैं ।** – गद्यांश में ई-गवर्नेंस से पारदर्शिता बढ़ने और ग्रामीण जीवन के सशक्त होने की बात है; सुरक्षा-चिंताओं या समय-धन के अपव्यय का उल्लेख नहीं है ।

(iv) (कोई एक/दोनों बिंदु, ½ × 2) ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी सुविधा पहुँचाना; किसानों के जीवन को सरल बनाना ।

(v) इंटरनेट, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ । (½ × 4)

(vi) (कोई दो) मौसम की जानकारी; फ़सल बीमा योजनाओं की जानकारी; बाज़ार के भाव की जानकारी । (1 + 1)

(vii) (कोई दो) डिजिटल साक्षरता की कमी; इंटरनेट की धीमी गति; बिजली की अनियमित आपूर्ति । (1 + 1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 67 of 122

CBSE 2025 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/1/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/1/3 · Q1 asked 3 times 10 marks

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है । रंगों की इस विशाल दुनिया में हम भी तो एक रंग ही हैं । पर हमारे साथ दिक्कत है । एक तो हमें अपने रंगों का पता नहीं है । दूसरा, हम दूसरों के रंगों से डरते हैं । हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है । दूसरे के जैसा होने की या उन्हें अपने जैसा करने की हमारी कोशिशों का कोई बहुत अर्थ भी नहीं है । कारण जबर्दस्ती चढ़ाए गए रंग देर तक टिकते ही नहीं हैं । सबको एक ही रंग में रंगने की कोशिश से बेहतर है कि हम एक-दूसरे को अपना सहयोग दें । दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है । इसी तरह आपस के साथ से हम भी कुछ नए रंग ज़िंदगी में जोड़ सकते हैं ।

सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं । फिर, सफेद और काले रंग के भी कई प्रतिरूप होते हैं । गायिका एमी ग्रांट कहती हैं, 'काले रंग के बिना किसी भी रंग को गहराई नहीं मिलती ।' बात केवल परछाईं की नहीं है, पूर्णता की है । ज़्यादातर लोग निराशा, अकेलापन, चुनौती, डर और उदासी के रंगों से दूर भागते हैं । वे जीवन में मुश्किल समय आते ही बेचैन हो उठते हैं जबकि मनुष्य की विकास यात्रा यही कहती है कि दुख, दर्द, कड़ी मेहनत, धैर्य और चुनौतियों के रंगों से मिलकर ही हमें जीत की चमक मिलती है । लेखक रे विलियम्स का मानना है कि बड़ी बारीकी से हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेराबंदी करते चले जाते हैं, जो है उसके बारे में ध्यान नहीं देते, अभावों के विषय में सोचते चले जाते हैं और जीवन को जटिल बना लेते हैं ।

प्रकृति हर दिन होली खेलती है, एक ही दिन में कई रंग बदलती है । दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता । हमारी दुनिया रंगीन हो जाती है जब हम अपने रंगों से संतुष्ट हो जाते हैं और दूसरों का देखकर खुश होते हैं ।

(i) 'हमें अपने रंगों का पता नहीं है' – से अभिप्राय है – (A) अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है । (B) जीवन की विविधता का ज्ञान नहीं है । (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है । (D) अपनी परंपराओं का ज्ञान नहीं है । (1)

(ii) 'हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है' – पंक्ति में जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ है – (A) जीवन का रंग-बिरंगा होना (B) जीवन में दुख-तकलीफ़ का होना (C) जीवन में सुख-दुख का होना (D) जीवन का बहुत विशाल होना (1)

(iii) कथन : प्रकृति के कई रंग हैं और रंगों में कोई होड़ नहीं है । कारण : प्रकृति सहज ही एक दिन में कई रंग बदलती है । (A) कारण सही है किंतु कथन गलत है । (B) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं । (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है । (1)

(iv) प्रकृति के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है ? (1)

(v) रे विलियम्स के अनुसार जीवन की जटिलता का क्या कारण है ? (2)

(vi) 'दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है' – पंक्ति का क्या आशय है ? (2)

(vii) 'प्रकृति हर दिन होली खेलती है' – से क्या अभिप्राय है ? इसके माध्यम से क्या संदेश दिया गया है ? (2)

Solution

(i) (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है । – 'रंग' यहाँ व्यक्ति की अपनी विशेषताओं का प्रतीक है; लेखक कहता है कि हमें अपने रंगों का पता ही नहीं है ।

(ii) (C) जीवन में सुख-दुख का होना । – गद्यांश में कहा है कि सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं; जीवन के बहुरंगी होने का यही अर्थ है ।

(iii) (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है । – प्रकृति के रंगों में होड़ नहीं है और वह एक दिन में कई रंग बदलती है, दोनों बातें सही हैं; पर रंग बदलना होड़ न होने का कारण नहीं है ।

(iv) सुख-दुख से भरे जीवन से संतुष्ट रहना और दूसरों को देखकर खुश होना ।

(v) रे विलियम्स के अनुसार हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेराबंदी करते हैं, यानी जीवन में नकारात्मक भावों को स्थान देते हैं; जो हमारे पास उपलब्ध है उस पर ध्यान न देकर अभावों के विषय में सोचते रहते हैं – इसी से जीवन जटिल बन जाता है ।

(vi) जब दो भिन्न स्वभाव और प्रकृति वाले व्यक्ति परस्पर मिलकर काम करते हैं तो उनकी रचनात्मक ऊर्जा जीवन को नया आयाम देती है । अतः दूसरों पर अपने विचार थोपने के बजाय परस्पर सहयोग की भावना रखनी चाहिए ।

(vii) **अभिप्राय** – प्रकृति पल-पल बदलती रहती है; एक ही दिन में सुबह, दोपहर, शाम और रात के अनेक रंग दिखाती है । **संदेश** – गतिशील जीवन में दुख-दर्द स्थायी नहीं होता; अच्छे-बुरे समय बदलते रहते हैं, इसलिए हमें धैर्य रखना चाहिए ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 68 of 122

CBSE 2025 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/2/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/2/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

इतिहास से विरासत में हमें 'भारतीय संगीत' जैसी अमूल्य निधि मिली है । अन्य देशों के संगीत की अपेक्षा इसकी विशेषता हमारे पूर्वजों की मान्यता के आधार पर है । भारत में संगीत क्षणिक आमोद-प्रमोद या अतृप्त तृष्णा की वस्तु न होकर, समस्त ब्रह्मांड से ऐक्य का आभास है, आनंद प्रदान करने वाली आध्यात्मिक साधना है । मानव को ब्रह्म तक ले जाने वाला मार्ग है । संगीत के इस स्वभाव और ध्येय को हमारी सभ्यता के प्रारंभ में ही हमारे देश के लोगों ने पहचान लिया था और इसका विकास इन्हीं आदर्शों के अनुकूल किया गया था । भारतवासियों के संगीत-प्रेमी होने की बात का उल्लेख मैगस्थनीज़ भी कर गए हैं । दूसरी शताब्दी ई.पू. में उन्होंने 'इन्डिका' नामक अपने ग्रंथ में लिखा है कि 'सब जातियों की अपेक्षा भारतीय लोग संगीत के कहीं अधिक प्रेमी हैं ।'

सहस्रों वर्षों से हमारे घरेलू और सांसारिक जीवन में लगभग सभी काम किसी न किसी प्रकार के संगीत से आरंभ होते रहे हैं । जन्म से लेकर मृत्यु तक यह संगीत हमारे साथ बना रहता है । नामकरण, कर्णच्छेदन, विवाह इत्यादि में तो संगीत होता ही है । साथ ही ऐसा कोई तीज-त्योहार नहीं होता जिसमें संगीत न हो । घर में ही क्यों, हमारे यहाँ तो खेत में, चौपाल में, चक्की चलाने में और धान कूटने के समय भी संगीत चलता ही रहता है । यह हमारे जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने का प्रभावी साधन है ही, साथ में उसको गतिमान बनाने का भी प्रबल अस्त्र है । संगीत रचनात्मक कार्यों में अग्रसर होने की सामूहिक स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है और वह सामूहिक शक्ति देता है, जो हमें उन कार्यों को करने योग्य बनाता है जो अकेले या समूह में संगीत की प्रेरणा के बिना नहीं कर पाते ।

(i) संगीत वह अमूल्य निधि है जो – (A) मानव को ब्रह्म तक ले जाने का मार्ग है । (B) अतृप्त साधनों की पूर्ति में सहायक है । (C) हमारे लक्ष्य पर पहुँचने का मार्ग है । (D) कुछ ही लोगों के लिए सुखकारक है । (1)

(ii) संगीत के प्रभाव को भारतीयों ने कब पहचाना ? (A) हमारी सभ्यता से भी पहले (B) हमारी सभ्यता के प्रारंभ में (C) यूनानी सभ्यता के आगमन पर (D) सृष्टि की रचना होते ही (1)

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यान से पढ़कर सर्वाधिक उचित विकल्प का चयन कर लिखिए : **कथन :** संगीत जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने का प्रभावी साधन है । **कारण :** हमारे सभी कार्य किसी न किसी प्रकार के संगीत से आरंभ होते हैं । (A) कथन और कारण दोनों गलत हैं । (B) कारण सही है लेकिन कथन गलत है । (C) कथन और कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है । (D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है । (1)

(iv) भारतीय जनमानस में संगीत की क्या महत्ता है ? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए । (2)

(v) 'संगीत जीवन-पर्यंत हमारे साथ बना रहता है' – किन्हीं चार उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि कीजिए । (2)

(vi) रचनात्मक कार्यों में संगीत की भूमिका को स्पष्ट करने वाले दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए । (2)

(vii) गाँवों में संगीत की लोकप्रियता को प्रकट करने वाले दो उदाहरणों का उल्लेख कीजिए । (1)

Solution

(i) **(A) मानव को ब्रह्म तक ले जाने का मार्ग है ।** – गद्यांश के अनुसार संगीत आध्यात्मिक साधना और मानव को ब्रह्म तक पहुँचाने वाला मार्ग है ।

(ii) **(B) हमारी सभ्यता के प्रारंभ में** – गद्यांश में लिखा है कि संगीत के स्वभाव और ध्येय को हमारी सभ्यता के प्रारंभ में ही पहचान लिया गया था ।

(iii) **(D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।** – जब सभी काम संगीत से आरंभ होते हैं, तभी वह जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने का प्रभावी साधन बनता है ।

(iv) (1) संगीत आनंद प्रदान करने वाली आध्यात्मिक साधना है । (2) वह मानव को ब्रह्म तक ले जाने वाला मार्ग है । (3) वह जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने और उसे गतिमान बनाने का प्रभावी साधन है । (कोई दो बिंदु)

(v) हमारे घरेलू और सांसारिक जीवन के सभी कामों का संगीत से आरंभ होना जन्म से मृत्यु तक साथ रहता है । उदाहरण – नामकरण, कर्णच्छेदन, विवाह, तीज-त्योहार, खेत-चौपाल, आमोद-प्रमोद तथा जीवन-मृत्यु के अवसरों पर संगीत का होना । (कोई चार उदाहरण)

(vi) (1) संगीत रचनात्मक कार्यों में आगे बढ़ने की सामूहिक स्फूर्ति और प्रेरणा देता है । (2) वह सामूहिक शक्ति देता है, जिससे हम वे कार्य कर पाते हैं जो संगीत की प्रेरणा के बिना अकेले या समूह में नहीं कर पाते ।

(vii) गाँवों में खेत में काम करते समय, चौपाल में, चक्की चलाने और धान कूटने के समय तथा तीज-त्योहार पर भी संगीत चलता रहता है । (कोई दो उदाहरण)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 69 of 122

CBSE 2025 · 2/4/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/4/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/4/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संवेदनशील व्यक्तियों में एक वर्ग उनका है जिनकी वृत्ति लेखन है । लेखन कोई मशीनी क्रिया नहीं है । इसमें विचारों से जूझना पड़ता है । ऐसे लोगों के लिए शब्दों के सीमित संसार में अपनी मंशा को शब्दों में उकेरना कष्टदायक भी हो जाता है । मगर जो अनुभूति, पीड़ा, हर्षोल्लास लेखक के हृदय में उपजता है, उनको अभिव्यक्त किया ही जाना है, भले ही पाठक कम हों या न हों । चेखब की एक कहानी में नायक लेखक है जिसकी कथाएँ कोई नहीं सुनता, मगर हर शाम वह घर लौटने पर घोड़े को अपनी कहानी सुनाता है । अनेक शीर्ष लेखकों को आरंभिक दौर में पाठक-प्रकाशक नहीं मिले, किंतु वे निराशा के गर्त में नहीं डूबे । जिनके पास कुछ ठोस कहने-लिखने को है, वे कभी थमेंगे नहीं ।

सृजन इहलोक की अस्मिता नहीं है । यह कार्य पारलौकिक शक्तियों का है । लेखन कर्म नहीं धर्म है, जिसके निर्वहन के लिए अथक निष्ठा, निरंतरता और श्रम आवश्यक होते हैं । आज पुस्तकों के प्रसार में अपेक्षित वृद्धि दर्ज न होने से यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि लेखन, विचार और लिखित शब्द की गरिमा क्षीण हो रही है, या लिखने वाले घट गए हैं, या लेखक अपना रास्ता बदल रहे हैं । बेशक, डिजिटल चकाचौंध के प्रभाव में जानने, सीखने, समझने के लिए अधिसंख्य जनों का रुझान पढ़ने-लिखने के बजाय बोलने-सुनने पर अधिक है । जब दुनिया अत्याधुनिक हो रही है, तो लेखन-कर्म पुरानी शैली में कैसे हो सकता है ।

पाठकों को भी कम्प्यूटरी साधन अनुकूल और सुविधाजनक लगते हैं । मगर इससे लेखन की भूमिका गौण नहीं हुई है । नए किरदारों की आवश्यकता तो बरकरार रहेगी ही । लोक-जीवन में मुद्रित शब्दों के प्रति समादर कमतर नहीं हुआ है, उनके कहे-लिखे की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न नहीं लगे हैं और न लगेंगे ।

(i) लेखक का उद्देश्य होता है : (A) आर्थिक उपार्जन (B) भावनाओं की अभिव्यक्ति (C) मान-सम्मान की प्राप्ति (D) पाठकों की संतुष्टि (1)

(ii) चेखब का उदाहरण यहाँ क्यों दिया गया है ? (A) आरंभिक समय के संघर्ष से न घबराने के लिए (B) लेखक के जीवन की कठिनाइयों को दर्शाने के लिए (C) लेखन-कर्म की जटिलता को बताने के लिए (D) कहानी के नायक की सहनशीलता दर्शाने के लिए (1)

(iii) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यान से पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कथन : अनेक शीर्ष लेखक प्रारंभ में पाठक-प्रकाशक नहीं मिलने से नैराश्य के गर्त में नहीं डूबे ।

कारण : विचारों की सत्यता और आगामी उपयोगिता के प्रति उन्हें कोई शंका नहीं रहती ।

विकल्प : (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं । (B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है । (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (1)

(iv) लेखन कर्म का रूप क्यों बदल रहा है ? (1)

(v) लेखन को 'मशीनी-क्रिया' क्यों नहीं कहा जा सकता ? (2)

(vi) डिजिटल क्रांति का लेखन-क्षेत्र में क्या प्रभाव दिखाई देता है ? (2)

(vii) 'नए किरदारों की आवश्यकता तो बरकरार रहेगी' – पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए । (2)

Solution

(i) (B) भावनाओं की अभिव्यक्ति – लेखक के हृदय में जो अनुभूति, पीड़ा और हर्षोल्लास उपजता है, उसे अभिव्यक्त करना ही उसका उद्देश्य होता है, पाठक कम हों या अधिक ।

(ii) (A) आरंभिक समय के संघर्ष से न घबराने के लिए – चेखब की कहानी का लेखक नायक श्रोता न मिलने पर भी घोड़े को कहानी सुनाता है, अर्थात् निराश नहीं होता ।

(iii) (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है – लेखकों को अपने विचारों की सत्यता और भावी उपयोगिता पर विश्वास रहता है, इसीलिए वे निराश नहीं होते ।

(iv) तकनीकी विकास के कारण लेखकों और पाठकों को कंप्यूटरी साधन अनुकूल और सुविधाजनक लगने लगे हैं, इसलिए लेखन का रूप बदल रहा है ।

(v) (कोई दो बिंदु – 1+1) लेखन में विचारों से जूझना पड़ता है; लेखक को सृजन की पीड़ा से गुज़रना पड़ता है; लेखक के हृदय में उपजी पीड़ा, अनुभूति और हर्षोल्लास को शब्दों में व्यक्त करने की छटपटाहट रहती है । इसलिए लेखन मशीन की तरह यंत्रवत् किया जाने वाला कार्य नहीं है ।

(vi) (कोई दो बिंदु – 1+1) डिजिटल चकाचौंध के प्रभाव से अधिकांश लोगों का रुझान पढ़ने-लिखने की अपेक्षा बोलने-सुनने की ओर अधिक हो गया है; और लेखन के लिए इलेक्ट्रॉनिक/कंप्यूटरी साधन अनुकूल और सुविधाजनक सिद्ध हो रहे हैं ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 70 of 122

(vii) लेखन की मौलिकता और सृजनात्मकता के लिए नए लेखकों की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी, तकनीक कितनी भी बढ़ जाए। साथ ही मुद्रित शब्दों की प्रामाणिकता बनी रहेगी, इसलिए लिखने वाले नए रचनाकारों का महत्त्व कम नहीं होगा।

CBSE 2025 · 2/5/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/5/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/5/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कई बार मनुष्य अपने अनुचित कार्यों या अवांछनीय स्वभाव के संबंध में दुखी होता है और सोचता है कि उन्हें वह छोड़ दे। उन कृत्यों की प्रतिक्रिया उसने देखी-सुनी होती है। उसे परामर्श और उपदेश भी उसी प्रकार के मिलते रहते हैं, जिनमें सुधार करने की अपेक्षा रहती है। सुनने में यद्यपि वे सारगर्भित परामर्श होते हैं, किंतु जब छोड़ने की बात आती है तो मन मुकर जाता है। अभ्यस्त प्रकृति को छोड़ने के लिए मन सहमत नहीं होता। आर्थिक तंगी, बदनामी, स्वास्थ्य की क्षति, मनोमालिन्य, आदि अनुभवों के कारण बार-बार सुधरने की बात सोचने और समय आने पर उसे न कर पाने से मनोबल टूटता है। बार-बार मनोबल टूटने पर व्यक्ति इतना दुर्बल हो जाता है कि उसे यह विश्वास ही नहीं होता कि उनका सुधार हो सकता है और यह कल्पना करने लगते हैं कि जीवन ऐसे ही बीत जाएगा और दुर्व्यसनों से किसी भी प्रकार मुक्ति नहीं मिल सकेगी।

यह सर्वविदित बात है कि मनुष्य अपने मन का स्वामी है, शरीर पर भी उसका अधिकार है। सामान्य जीवन में वह अपनी अभिरुचि के अनुसार ही सोचकर कार्य करता है। किंतु दुष्प्रवृत्तियों के संबंध में ही ऐसी क्या बात है कि वे चाहकर भी नहीं छूट पातीं और प्रयास करने के बावजूद भी सिर पर ही सवार रहती हैं।

अंधविश्वास, दिखावा, खर्चीली शादियाँ, कुप्रथाएँ, तर्कहीन रीति-रिवाजों जैसी अनेक कुरीतियाँ ऐसी हैं, जिन्हें बुद्धि-विवेक और तर्क के आधार पर हर कोई नकारता है, किंतु जब करने का समय आता है तो सभी पुराने अभ्यस्त चिंतन पर चल पड़ते हैं और वही करने लग जाते हैं जिसे न करने की बात अनेक बार सोचते रहते हैं।

(i) मनुष्य अनुचित कार्यों को क्यों छोड़ना चाहता है ?

(A) दुख का कारण होने के कारण
(B) सुखद होने के कारण
(C) अवांछनीय होने के कारण
(D) प्रशंसनीय होने के कारण

(1)

(ii) गद्यांश के अनुसार व्यक्ति के कृत्यों पर उसे किस प्रकार के परामर्श मिलते हैं ?

(A) सुधारात्मक
(B) प्रचारात्मक
(C) उपेक्षात्मक
(D) स्वीकारात्मक

(1)

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : मन अभ्यस्त प्रकृति छोड़ने के लिए सहमत हो जाता है।

कथन II : मन को अभ्यस्त प्रकृति छोड़ने के लिए कोई परामर्श नहीं मिलता।

कथन III : मन अभ्यस्त प्रकृति छोड़ने से असहमत ही रहता है।

कथन IV : सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण व्यक्ति का मन अवांछनीय कृत्यों को छोड़ने के लिए सहमत नहीं होता।

गद्यांश के अनुसार कौन-से कथन सही हैं ?

(A) केवल कथन I और II सही हैं।
(B) केवल कथन II और III सही हैं।
(C) केवल कथन III और IV सही हैं।
(D) केवल कथन I और IV सही हैं।

(1)

(iv) अवांछनीय स्वभाव की हानियाँ कौन-कौन सी हैं ? (1)

(v) मनुष्य का मनोबल टूटने का क्या परिणाम होता है ? (2)

(vi) मनुष्य दुष्प्रवृत्तियों को क्यों नहीं छोड़ पाता ? (2)

(vii) जिस काम को मनुष्य नहीं करने की सोचता है, उसी काम को वह फिर से क्यों करने लग जाता है ? (2)

Solution

(i) **(A) दुख का कारण होने के कारण** – गद्यांश के आरंभ में ही कहा है कि मनुष्य अपने अनुचित कार्यों और अवांछनीय स्वभाव के संबंध में दुखी होता है, इसीलिए उन्हें छोड़ना चाहता है।

(ii) **(A) सुधारात्मक** – मनुष्य को ऐसे परामर्श और उपदेश मिलते हैं, जिनमें सुधार करने की अपेक्षा रहती है।

(iii) **(C) केवल कथन III और IV सही हैं।** – (उत्तर बोर्ड की अंक-योजना के अनुसार) गद्यांश के अनुसार मन अभ्यस्त प्रकृति छोड़ने

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 71 of 122

के लिए सहमत नहीं होता (कथन III सही, कथन I ग़लत) और परामर्श मिलते रहते हैं (कथन II ग़लत)। कथन IV को अंक-योजना ने सही माना है, क्योंकि सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण कुरीतियों को छोड़ पाने की हिम्मत नहीं जुटती।

(iv) आर्थिक तंगी, बदनामी, स्वास्थ्य की क्षति, मनोमालिन्य आदि अवांछनीय स्वभाव की हानियाँ हैं।

(v) (कोई दो बिंदु) (1) मनोबल बार-बार टूटने से व्यक्ति दुर्बल हो जाता है। (2) उसे दुर्व्यसनों से मुक्ति मिलने की आशा नहीं रहती, वह सोचने लगता है कि जीवन ऐसे ही बीत जाएगा। (3) जीवन में निराशा और नकारात्मकता घर कर जाती है और आत्मविश्वास डगमगा जाता है।

(vi) (कोई दो बिंदु) (1) स्वयं पर विश्वास न जम पाने के कारण। (2) शरीर पर अधिकार होने पर भी मन दुर्बल होता है, इसलिए वह उन पर नियंत्रण नहीं कर पाता। (3) सामाजिक प्रतिष्ठा और कुरीतियों का विरोध करने की हिम्मत न जुटा पाने के कारण।

(vii) (कोई दो बिंदु) (1) दिखावे की प्रवृत्ति के कारण। (2) सामाजिक दबाव के कारण। (3) पारंपरिक आस्था के कारण। (4) गहरे तक मन में बैठे तर्कहीन प्रयासों (अभ्यस्त चिंतन) का बुद्धि-विवेक पर हावी हो जाने के कारण।

CBSE 2025 · 2/6/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/6/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/6/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

बालमन तकनीक के जाल में बुरी तरह उलझ गया है। खेल, सूचनाएँ, अध्ययन से जुड़ी सामग्री, विद्यालयी गतिविधियों की जानकारियाँ और मित्रता तक सब कुछ बच्चे तकनीकी संसाधनों के माध्यम से ले रहे हैं। तकनीक के सीमित क्षेत्र में मासूम मन ने अपनी एक अलग दुनिया बना ली है। पल-पल अवतरित होती सामग्री बालमन को बहला ही नहीं, भटका भी रही है। हर तरह के रंग लिए इस सामग्री में रमे बच्चों को कोई हिदायत या अभिभावकों की सहज सलाह भी स्वीकार नहीं। इन माध्यमों ने बच्चों की मासूमियत ही नहीं समझ भी छीन ली है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मोबाइल गेमिंग की लत को एक डिसऑर्डर माना है। इस आभासी व्यस्तता के कारण एकाग्रता के साथ-साथ बच्चों की बाल सुलभ रचनात्मकता भी खो रही है। गेमिंग की लत के कारण शारीरिक गतिविधियाँ घटने से बच्चों को मोटापा, आलस और अनिद्रा की समस्याएँ घेर रही हैं। एम्स के चिकित्सकों के अनुसार हमारे यहाँ *2050* तक लगभग *40* से *45* फीसदी बच्चे मायोपिया का शिकार हो जाएँगे।

बच्चों की इस बदलती दुनिया में अभिभावकों का समय रहते चेतना आवश्यक है। बच्चों और बड़ों के बीच नियमित संवाद ज़रूरी है। घर का माहौल बदलना और माता-पिता का भी स्मार्टफोन की चकाचौंध से दूर रहना पहला क़दम है। मोबाइल फोन की लत के शिकार बच्चों को धीरे-धीरे संयम के साथ सहज जीवन की ओर मोड़ना होगा। बीते दिनों फ्रांस में स्नायु विज्ञानी, मनोवैज्ञानिक और अन्य विशेषज्ञों की समिति ने अपनी रिपोर्ट में सिफ़ारिश की है कि बच्चों को तेरह वर्ष की आयु तक स्मार्टफोन का प्रयोग नहीं करने देना चाहिए और *18* वर्ष की आयु तक सोशल मीडिया मंचों के प्रयोग पर भी पूरी तरह रोक लगा देनी चाहिए। तकनीक के इस जाल में उलझने से बचाने या उलझने के बाद फिर सहज जीवन से जोड़ने का पहलू हो, दोनों मोर्चों पर माता-पिता का संयमित और समझ भरा बर्ताव बच्चों का जीवन सहेज सकता है।

(i) वर्तमान समय में बालमन किसमें उलझा हुआ है ? (A) खेलकूद के जाल में (B) परीक्षाओं की तैयारी में (C) तकनीक के जाल में (D) आभासी मित्रों के जाल में (1)

(ii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उचित विकल्प का चयन कर लिखिए : कथन *:* आभासी दुनिया में रमे बच्चों को बड़ों की सहज सलाह भी स्वीकार्य नहीं है। कारण *:* तकनीकी संसाधनों ने बच्चों की मासूमियत के साथ-साथ उनके सोचने समझने की शक्ति को भी प्रभावित किया है। **विकल्प :** (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं। (B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है। (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है। (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। (1)

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : कथन I : तकनीकी सामग्री से बालमन भटक रहा है। कथन II : तकनीकी सामग्री का बच्चों की मासूमियत पर कोई असर नहीं पड़ता। कथन III : तकनीकी सामग्री के कारण बच्चे कुशाग्र बुद्धि बन रहे हैं। कथन IV : तकनीकी सामग्री के कारण बच्चों की एक अलग दुनिया बन चुकी है। गद्यांश के अनुसार कौन-से कथन सही हैं ? (A) केवल कथन I, II और III सही हैं। (B) केवल कथन II और III सही हैं। (C) केवल कथन I, II और IV सही हैं। (D) केवल कथन I और IV सही हैं। (1)

(iv) तकनीकी संसाधनों की महत्ता संबंधी कोई दो बिंदु लिखिए। (1)

(v) मोबाइल गेमिंग का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ? (2)

(vi) आभासी दुनिया के दुष्प्रभावों से बच्चों को बचाने के लिए अभिभावकों को क्या-क्या कदम उठाने चाहिए ? (2)

(vii) फ्रांस में विभिन्न विषय विशेषज्ञों की समिति ने आभासी दुनिया से संबंधित रिपोर्ट में कौन-कौन सी सिफारिशें की हैं ? (2)

Solution

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 72 of 122

(i) **(C) तकनीक के जाल में** – गद्यांश का पहला ही वाक्य है : 'बालमन तकनीक के जाल में बुरी तरह उलझ गया है' ।
(ii) **(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – गद्यांश कहता है कि बच्चों को अभिभावकों की सलाह स्वीकार नहीं और इन माध्यमों ने उनकी मासूमियत ही नहीं, समझ भी छीन ली है; यही कारण कथन को समझाता है ।
(iii) **(D) केवल कथन I और IV सही हैं ।** – सामग्री बालमन को भटका रही है (I) और बच्चों ने अपनी अलग दुनिया बना ली है (IV); मासूमियत छिनने की बात है, इसलिए II ग़लत है, और कुशाग्रता का उल्लेख नहीं है, इसलिए III ग़लत है ।
(iv) (कोई दो) (1) तकनीकी संसाधन ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन का साधन हैं । (2) वे सूचनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम हैं (खेल, पढ़ाई, विद्यालय की जानकारी और मित्रता तक इन्हीं से मिलती है) ।
(v) (1) मोबाइल गेमिंग की लत से बच्चों की एकाग्रता और बाल-सुलभ रचनात्मकता खो रही है । (2) शारीरिक गतिविधियाँ घटने से उन्हें मोटापा, आलस और अनिद्रा जैसी समस्याएँ घेर रही हैं (और आगे चलकर मायोपिया का ख़तरा है) ।
(vi) (कोई दो बिंदु अपेक्षित, यहाँ चार दिए हैं) (1) बच्चों से नियमित संवाद करना । (2) घर का माहौल बदलना । (3) स्वयं भी स्मार्टफोन की चकाचौंध से दूर रहना । (4) लत के शिकार बच्चों को संयम के साथ धीरे-धीरे सहज जीवन की ओर मोड़ना ।
(vii) फ्रांस की समिति ने सिफ़ारिश की है कि (1) बच्चों को तेरह वर्ष की आयु तक स्मार्टफोन का प्रयोग न करने दिया जाए, और (2) 18 वर्ष की आयु तक सोशल मीडिया मंचों के प्रयोग पर पूरी तरह रोक लगा दी जाए ।

CBSE 2025 · 2/7/1 · Q1 | CBSE 2025 · 2/7/2 · Q2 | CBSE 2025 · 2/7/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
बढ़ती उम्र के साथ हमारे दिमाग का संज्ञानात्मक कौशल, पहचानने और याद रखने की क्षमता मंद पड़ने लगती है । पर यह भी सच है कि हमारे दिमाग में यह क्षमता भी है कि उम्र बढ़ने के साथ वह नया सीख भी सकता है और पुराने सीखे हुए पर अपनी पकड़ बनाए रख सकता है । मेडिकल की भाषा में इसे न्यूरोप्लास्टिसिटी कहते हैं । पर इसके लिए आपको नियमित अभ्यास करना पड़ता है ।
रचनात्मकता बहुत सारी सूचनाओं के होने से ही नहीं आती । हम तब कुछ रच पाते हैं, जब सूचनाओं को ढंग से समझते हैं और पूर्व ज्ञान से उसे जोड़ पाते हैं । तभी वह हमारे गहन शिक्षण का हिस्सा बन पाती है और लंबे समय तक हम उसे याद रख सकते हैं ।
हमारे दिमाग का बड़ा हिस्सा चीज़ों को उनके रेखाचित्र व जगह के तौर पर भी याद रखता है । स्क्रीन पर हम लिखे हुए शब्दों को स्क्रॉल करते हुए आगे बढ़ जाते हैं या कुछ मिनटों बाद ही सोशल मीडिया या दूसरे लिंक्स पर चले जाते हैं, जबकि किताब का बहुआयामी रेखाचित्र और उसमें लिखे शब्द स्थिर होते हैं । मशीनें व्यक्ति को उस तरह प्रेरित नहीं कर पातीं जिस तरह प्यार व हमदर्दी से बने रिश्ते । इसीलिए स्वीडन समेत कई देश परंपरागत पढ़ाई के तौर-तरीकों को आगे बढ़ा रहे हैं । किताबें पढ़ने के बाद हमें अक्सर चीज़ें, चित्र या स्थान विशेष के साथ याद रहती हैं । लंबी याददाश्त के लिए डिजिटल कॉपी की जगह किताब को पढ़ना दिमाग के लिए अधिक बेहतर साबित होगा । समय-समय पर चीज़ों को दोहराएँ । अपने दिमाग को चुनौतियाँ दें । आप दिमाग को जितनी चुनौतियाँ देंगे, वह उतना बेहतर काम करेगा । सकारात्मकता को जीवन का अंग बनाएँ ।
(i) कोई भी बात हमारे गहन शिक्षण का हिस्सा कब बन पाती है ? (A) जब जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन जाए (B) जब प्रबल इच्छा शक्ति से सीखा जाए (C) जब आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाए (D) जब समझ से सीखा और अभ्यास किया जाए (1)
(ii) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित में से कौन-सा कथन **असत्य** है ? (A) रचनात्मकता बहुत सारी सूचनाओं के होने से आती है । (B) स्क्रीन पर पढ़ते समय सोशल मीडिया पर समय व्यर्थ होने की संभावना होती है । (C) हमारा दिमाग चीज़ों को स्थान विशेष के आधार पर भी याद रखता है । (D) मशीनों में प्रेरणाशक्ति व संबंधों की मधुरता का अभाव होता है । (1)
(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उचित विकल्प का चयन कर लिखिए : कथन : किताबों में पढ़ा हुआ हमें पृष्ठ के स्थान विशेष के साथ याद रहता है । कारण : किताबों का बहुआयामी रेखाचित्र व शब्द स्थिर होते हैं । (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं । (B) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है । (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (1)
(iv) रचनात्मकता कैसे आती है ? (1)
(v) गद्यांश में दिमाग संबंधी किन दो विरोधी बातों का उल्लेख किया गया है ? (2)
(vi) गद्यांश में सीखने-सिखाने के परंपरागत तरीकों को आधुनिक तरीकों से बेहतर क्यों बताया गया है ? (2)
(vii) गद्यांश के आधार पर याददाश्त बढ़ाने के कोई दो उपाय लिखिए । (2)

Solution

(i) **(D) जब समझ से सीखा और अभ्यास किया जाए** – गद्यांश कहता है कि सूचनाओं को ढंग से समझने और पूर्व ज्ञान से जोड़ने पर ही बात गहन शिक्षण का हिस्सा बनती है; इसके लिए नियमित अभ्यास भी ज़रूरी है ।
(ii) **(A) रचनात्मकता बहुत सारी सूचनाओं के होने से आती है ।** – यही असत्य है, क्योंकि गद्यांश में लिखा है कि रचनात्मकता बहुत

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 73 of 122

सारी सूचनाओं के होने से ही नहीं आती । शेष तीनों कथन गद्यांश के अनुसार सत्य हैं ।

(iii) **(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – किताब का रेखाचित्र और शब्द स्थिर होते हैं, इसीलिए वे पृष्ठ के स्थान विशेष के साथ याद रहते हैं ।

(iv) सूचनाओं को ढंग से समझने और प्राप्त सूचनाओं एवं ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़कर उन्हें नया आकार देने की कोशिश से रचनात्मकता आती है ।

(v) (1) उम्र बढ़ने के साथ संज्ञानात्मक कौशल और स्मरण शक्ति कमज़ोर पड़ने लगती है । (2) फिर भी उम्र बढ़ने के साथ दिमाग में नया सीखने और पुराने सीखे हुए को याद रखने की क्षमता भी रहती है (न्यूरोप्लास्टिसिटी) ।

(vi) (कोई दो बिंदु) (1) परंपरागत तरीकों में मानवीय रिश्तों में विद्यमान प्यार और हमदर्दी की भावना होती है, जबकि मशीनों के आधुनिक तरीकों में इसका अभाव है । (2) किताब के रेखाचित्र और शब्द स्थिर होते हैं, इसलिए परंपरागत तरीकों में स्थायित्व रहता है, जबकि स्क्रीन पर पढ़ते समय मन भटकता रहता है ।

(vii) (कोई दो उपाय) (1) डिजिटल कॉपी की अपेक्षा किताबों को पढ़ना । (2) समय-समय पर चीज़ों को दोहराना । (3) दिमाग को चुनौतीपूर्ण कार्य देना ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 74 of 122

CBSE 2025 · 2/S/1 · Q2 | CBSE 2025 · 2/S/2 · Q1 | CBSE 2025 · 2/S/3 · Q2 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सावन माह में झूला झूलने की प्राचीन परंपरा रही है । लेकिन झूला झूलना सिर्फ एक खेल अथवा प्रथा नहीं है बल्कि स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी बहुत लाभप्रद है जब हम झूला झूलते हैं तो मानसिक तनाव कम होने लगता है और मन को शांति मिलती है इसकी धीमी गति दिमाग को शांत करती है और तनाव को घटाकर आनंद प्रदान करती है ।

झूला झूलने से एंडोर्फिन और सेराटोनिन जैसे खुशहाली के हॉर्मोंस निकलते हैं जिससे मन:स्थिति में सुधार होता है और व्यक्ति प्रसन्नता की अनुभूति करता है । आपने ध्यान दिया होगा कि झूले पर पैग लेने की एक निश्चित गति होती है । झूलने की लयबद्ध गति ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकती है । यह उन बच्चों के लिए विशेष रूप से लाभप्रद हो सकता है जो ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई अनुभव करते हैं । यह वयस्कों के लिए भी ध्यान का माध्यम बन सकता है । झूला झूलने से व्यक्ति भावनात्मक रूप से स्वयं को संतुलित महसूस करता है । क्योंकि यह व्यक्ति को एक सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण प्रदान करता है । यह व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालता है । झूला झूलना व्यक्ति की चिन्ता से दूर होने और वर्तमान में रहने में मदद करता है । शारीरिक गतिविधि के रूप में झूला झूलना एक हल्का व्यायाम भी हो सकता है । जिससे शारीरिक स्वास्थ्य में भी सुधार होता है । यह महिलाओं की शारीरिक योग्यता में सुधार ला सकता है । यह मांसपेशियों की रंगत और संतुलन में सुधार कर सकता है । वरिष्ठ नागरिकों के लिए झूला झूलना एक सुखद और आरामदायक गतिविधि हो सकती है । यह उनके संतुलन और समन्वय को बनाए रखने में मदद करता है । झूला झूलते हुए बच्चे समूह बना लेते हैं । और बारी-बारी से झूला झूलते हैं; साथ ही एक-दूसरे का ध्यान भी रखते हैं कि किसी को चोट ना लगे । और यदि कोई ऊँची पैग लेने से डर रहा है तो उसका डर दूर करने का प्रयास करते हैं या उसे ज्यादा ऊँचाई तक नहीं जाने देते । झूला झूलने से बच्चों में सामाजिक कौशल विकसित होता है । वह अन्य बच्चों के साथ खेलते, बातचीत करते और सामाजिकता के गुण सीखते हैं । झूला झूलना न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी हो सकता है । इसलिए यह न सोचें की उम्र क्या है और व्यवस्था कितनी है, चुरा ले जिंदगी के कुछ पल खुद के लिए और आनंद लें झूला झूलने का, ठंडी हवाओं का, रिमझिम फुहारों का ।

(i) झूला झूलने से बच्चों में कौन-से कौशल का विकास होता है ? (A) सामाजिक कौशल (B) शारीरिक कौशल (C) भावनात्मक कौशल (D) रचनात्मक कौशल

(ii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : झूला झूलना बच्चों और वयस्कों के लिए 'ध्यान' का माध्यम बन सकता है ।

कारण : झूलने की निश्चित और लयबद्ध गति ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है ।

विकल्प : (A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं । (B) कारण सही है, लेकिन कथन ग़लत है । (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (D) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या **नहीं** करता है ।

(iii) झूला झूलने से व्यक्ति भावनात्मक रूप से स्वयं को संतुलित महसूस क्यों करता है ? (A) शारीरिक योग्यता में सुधार लाने के कारण (B) आसपास के खुशनुमा वातावरण में रहने के कारण (C) खुशहाली के हॉर्मोंस निकलने के कारण (D) सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण प्राप्त होने के कारण

(iv) झूला झूलना वयस्कों के लिए किस प्रकार उपयोगी है ? (1)

(v) स्वास्थ्य की दृष्टि से झूला झूलने से क्या लाभ हैं ? (2)

(vi) 'झूला झूलना बच्चों में खेल के साथ अनेक गुणों का विकास करता है ।' सिद्ध कीजिए । (2)

(vii) शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से झूले का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ? (2)

Solution

(i) **(A) सामाजिक कौशल** – गद्यांश के अनुसार झूला झूलते हुए बच्चे साथ खेलते, बातचीत करते और सामाजिकता के गुण सीखते हैं ।

(ii) **(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – झूलने की निश्चित, लयबद्ध गति ही ध्यान केंद्रित करने में सहायक है, इसीलिए यह ध्यान का माध्यम बनता है ।

(iii) **(D) सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण प्राप्त होने के कारण** – गद्यांश में कहा गया है कि यह व्यक्ति को सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण प्रदान करता है ।

(iv) झूला झूलना वयस्कों के लिए ध्यान का माध्यम बनकर उन्हें भावनात्मक रूप से संतुलित और समन्वित अनुभव कराने में उपयोगी है । (1)

(v) (कोई दो बिंदु) झूला सुखद व्यायाम है; शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन देता है; मांसपेशियों की रंगत और संतुलन में सुधार करता है; शारीरिक फ़िटनेस बढ़ाता है । (1 + 1)

(vi) झूला झूलते समय बच्चे समूह बनाकर बारी-बारी से झूलते हैं, एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं कि किसी को चोट न लगे और डरने वाले

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 75 of 122

साथी का डर दूर करते हैं । इससे उनमें परस्पर सहयोग, एक-दूसरे की चिंता, साथ खेलना, बातचीत करना आदि गुणों का विकास होता है । (1 + 1)

(vii) झूला झूलने से शरीर का पोषण और व्यायाम होता है, जिससे शारीरिक स्वास्थ्य सुधरता है; तनाव घटने से मन को शांति मिलती है और मानसिक रूप से संतुलन आता है; साथ ही सामाजिकता का विकास होता है, जो हमें जीवन में पूर्णता प्रदान करता है । (1 + 1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 76 of 122

CBSE 2024 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2024 · 2/1/2 · Q2 | CBSE 2024 · 2/1/3 · Q1 asked 3 times 10 marks

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (10×1=10)

अक्सर हम अपनी बातों में अपने परिवार, समाज और देश की बात करते हैं कि यह मेरा परिवार है, यह मेरा शहर है और यह मेरा देश है परंतु एक विचारधारा ऐसी भी है जिसके अंतर्गत पूरी दुनिया एक ही परिवार है, सब एक दूसरे से जुड़े रहते हैं, जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संज्ञा से अभिहित किया गया । 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सदियों से भारतीय दर्शन और अध्यात्म का हिस्सा है । यह सार्वभौमिक भाई-चारे और समस्त प्राणियों के अंतर्संबंध के विचार को पोषित करता है । समय के साथ-साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक के रूप में देखा जाने लगा जो करुणा के मूल्यों, विविधता के प्रति सम्मान और दुनिया में एकता को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है । वर्तमान में इसको अधिक मान्यता और लोकप्रियता प्राप्त हुई है । देखा जाए तो यह सूत्र वैश्विक सहयोग और समझ को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम है । इस दर्शन को व्यवहार में लाने से वैश्विक स्तर पर शांति और सहयोग को बढ़ाया जा सकता है जो स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी लाभान्वित कर सके, आपसी सम्मान और समझ के माध्यम से संघर्षों को कम करके सद्भाव को बढ़ावा देने में सहायक हो सके ।

इस पावन धरा पर रहने वाले लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं, इस अवधारणा का पल्लवन ही युद्ध और वैमनस्य की विभीषिका को दूर करने में सहायक हो सकता है । साहित्य, संगीत और कला की त्रिवेणी में इस अवधारणा के उपयोग के कारण यह वाक्यांश आधुनिक युग में अधिक व्यापक रूप से लोकप्रिय हुआ है । आज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बढ़ती प्रासंगिकता और आवश्यकता ने भारतीय संस्कृति और साहित्य की ओर भी विश्व का ध्यान आकृष्ट करने का काम किया है क्योंकि यह विचार भारतीय दर्शन को वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाने के साथ विश्व को भी बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत कर रहा है और यही नूतन रूप में वैश्वीकरण है । जिस दिन पृथ्वी के सभी लोग समस्त भेदभाव भुलाकर एक परिवार की तरह आचरण करने लगेंगे उसी दिन सच्ची मानवता का उदय होगा ।

(i) केवल अपने परिवार, समाज और देश की बातें करना किस विचारधारा का द्योतक है ? (A) सीमित (B) असीमित (C) संकुचित (D) अनुदार (1)

(ii) संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'सार्वभौमिक' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ? (A) व्यापक दृष्टिकोण (B) सामूहिक रूप (C) देशव्यापी (D) सामान्य रूप (1)

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : कथन I : संपूर्ण विश्व एक ही परिवार है । कथन II : प्रत्येक प्राणी से वार्तालाप करना चाहिए । कथन III : प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए । कथन IV : मानव-मूल्यों का संवर्धन करना चाहिए । गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? (A) केवल कथन I सही है । (B) केवल कथन II सही है । (C) केवल कथन II और III सही हैं । (D) केवल कथन I और IV सही हैं । (1)

(iv) गद्यांश के अनुसार भारतीय दर्शन और अध्यात्म का हिस्सा है : (A) परोपकार की भावना (B) सहानुभूति की भावना (C) वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना (D) अहिंसा की भावना (1)

(v) वर्तमान समय में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्रासंगिकता क्यों बढ़ रही है ? (A) लोगों के बीच बढ़ते पारस्परिक भेदभाव के कारण (B) पृथ्वी के अलग-अलग देशों में बँट जाने के कारण (C) भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग होने के कारण (D) भारतीय दर्शन और अध्यात्म में इसका उल्लेख होने के कारण (1)

(vi) गद्यांश में 'विविधता के प्रति सम्मान' कथन किस बात की ओर संकेत करता है ? (A) विविध प्रयोजन (B) वैश्विक समझ, सम्मान और सद्भाव (C) एकता में विविधता (D) विविध सरोकार (1)

(vii) इस पावन धरा पर रहने वाले लोग एक ही परिवार के सदस्य हैं, इस अवधारणा का पल्लवन ही : (A) युद्ध और संघर्ष का आतंक समाप्त कर सकता है (B) बेरोज़गारी समाप्त कर सकता है (C) देश से पलायन समाप्त कर सकता है (D) अशिक्षा का समाधान कर सकता है (1)

(viii) साहित्य, संगीत और कला की त्रिवेणी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को किस प्रकार चरितार्थ करती है ? (A) व्यक्ति-विशेष को प्रभावित करके (B) समाज-विशेष को प्रभावित करके (C) देश-विशेष की धरोहर बनकर (D) विश्व-धरोहर बनकर (1)

(ix) वैश्वीकरण किस प्रकार संभव है ? (A) विश्व बंधुत्व की भावना से (B) प्रगति की भावना से (C) वैमनस्य की भावना से (D) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से (1)

(x) सच्ची मानवता का उदय कब होगा ? (A) जब नैतिकता का विकास होगा (B) जब बंधुत्व की भावना से विश्व-कल्याण होगा (C) जब व्यावसायिक दृष्टिकोण होगा (D) जब गुणों का विकास होगा (1)

Solution

(i) (C) संकुचित – केवल अपने परिवार, समाज और देश तक सोचना संकुचित विचारधारा है, जबकि गद्यांश में पूरी दुनिया को एक परिवार मानने की बात कही गई है ।

(ii) (A) व्यापक दृष्टिकोण – 'सार्वभौमिक' का अर्थ है समस्त विश्व में व्याप्त; यहाँ यह सबको समेटने वाले व्यापक दृष्टिकोण का सूचक

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 77 of 122

है ।

(iii) (A) केवल कथन I सही है – गद्यांश संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की बात करता है; कथन II, III, IV का गद्यांश में ऐसा उल्लेख नहीं है (अंक-योजना के अनुसार) ।

(iv) (C) वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना – गद्यांश कहता है कि यह सदियों से भारतीय दर्शन और अध्यात्म का हिस्सा है ।

(v) (A) लोगों के बीच बढ़ते पारस्परिक भेदभाव के कारण (अंक-योजना के अनुसार) – भेदभाव और संघर्ष बढ़ने से ही बंधुत्व की इस भावना की आवश्यकता बढ़ी है ।

(vi) (B) वैश्विक समझ, सम्मान और सद्भाव – विविधता का सम्मान करने से आपसी समझ और सद्भाव बढ़ता है ।

(vii) (A) युद्ध और संघर्ष का आतंक समाप्त कर सकता है – गद्यांश में 'युद्ध और वैमनस्य की विभीषिका को दूर करने' की बात कही गई है ।

(viii) (D) विश्व-धरोहर बनकर – साहित्य, संगीत और कला किसी एक देश तक सीमित नहीं रहते, वे पूरे विश्व की साझी धरोहर बनकर इस भाव को फैलाते हैं ।

(ix) (A) विश्व बंधुत्व की भावना से – गद्यांश के अनुसार यही विचार नूतन रूप में वैश्वीकरण है ।

(x) (B) जब बंधुत्व की भावना से विश्व-कल्याण होगा – अंतिम पंक्ति के अनुसार जब सभी लोग भेदभाव भुलाकर एक परिवार की तरह आचरण करेंगे, तब सच्ची मानवता का उदय होगा ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 78 of 122

CBSE 2024 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2024 · 2/2/2 · Q2 | CBSE 2024 · 2/2/3 · Q1 asked 3 times 10 marks

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (10×1=10)

भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह एक विलक्षणता है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है – उतनी बार नयापन उभरता है, इसका आकर्षण कभी समाप्त नहीं होता । इसकी समकालीन गुणवत्ता वर्षों के फ़ासले में नहीं बदलती, यह समय के छोटे-छोटे हिस्से में भी घटित होती है । इसके बावजूद इसमें ऐसा भी तत्त्व है, जो कभी नहीं बदलता । वह समय की गति को लाँघ जाता है, शाश्वतता और समकालीनता की यही संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान है । भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है । लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बनाए गए हैं । भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा और मुलतानी जैसे अनेक राग बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के अंचलों में गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनों से निर्मित हुए हैं । इतना ही नहीं, प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं । कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है । लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है । प्रकृति में अपना छंद है, लय है । स्वरों की संस्कार प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से राग की प्रकृति और उसे जन्म देने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय नहीं कर लिया जाता । संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल एक दूसरे से मिलते हैं उसे सम कहते हैं । लय है प्रकृति की विभिन्नता – सामयिकता और ताल है एकत्व-शाश्वतता । इन दोनों के मिलन से संस्कृति बनती है । संस्कृति न तो प्रकृति की यथास्थिति की स्वीकृति है, न विद्रोह । यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है । "प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन संस्कृति है ।"

(i) भारतीय शास्त्रीय संगीत की विलक्षणता क्या है ? (A) विशिष्ट गायकी (B) हर प्रस्तुति में नवीनता (C) धुनों को शास्त्रीय संस्कार देना (D) सुरीला गान

(ii) संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'विशिष्टताओं की वृद्धि' अर्थ को व्यक्त करने वाला शब्द है : (A) गुणोत्कर्ष (B) चरमोत्कर्ष (C) निष्कर्ष (D) हर्षोत्कर्ष

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : लोकगीत और शास्त्रीय संगीत एक दूसरे के पर्याय हैं ।

कथन II : शास्त्रीय संगीत में गीत और आघात का अधिक महत्त्व है ।

कथन III : भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार लोकगीत है ।

कथन IV : शास्त्रीय संगीत में राग की शुद्धता का महत्त्व गौण है ।

गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? (A) केवल कथन I सही है । (B) केवल कथन II सही है । (C) केवल कथन III सही है । (D) केवल कथन IV सही है ।

(iv) गद्यांश के अनुसार रागों की रचना किस प्रकार होती है ? (A) लोकगीतों और प्रकृति में व्याप्त स्वरों के समन्वय द्वारा (B) सुर, लय, ताल की समझ और समन्वय द्वारा (C) प्राकृतिक गीतों की छंदबद्ध गायकी द्वारा (D) विभिन्न घरानों की राग-रागिनियों के समन्वय द्वारा

(v) गद्यांश के अनुसार 'सम' क्या है ? (A) तबले की थाप पर ताल का बजना (B) गीत और संगीत का सुरीला गायन (C) सुर, ताल और लय का सुंदर समन्वय (D) संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल परस्पर मिलते हों

(vi) गद्यांश के अनुसार समर्थ गायकों ने प्रसिद्धि प्राप्त की : (A) पाश्चात्य संगीत को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर (B) आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर (C) विभिन्न राग-रागिनियों को आंचलिकता में ढालकर (D) आंचलिक गीतों को प्राकृतिक छंदों में ढालकर

(vii) संस्कृति बनती है : (A) प्रकृति की विभिन्नता, सामयिकता और शाश्वतता के मिलने से (B) लय और ताल, गीत और संगीत के मिलन से (C) लोकगीतों को शास्त्रीय संस्कार देकर (D) स्वरों की सतत साधना से

(viii) प्रकृति की विभिन्नता और समकालीनता का नाम है : (A) लय (B) ताल (C) राग (D) सम

(ix) यह गद्यांश दर्शाता है : (A) सृष्टि के कण-कण में संगीत बसा है । (B) लोकगीत और प्रकृति शास्त्रीय संगीत के आधार हैं । (C) लोकगीतों के बिना शास्त्रीय संगीत निराधार है । (D) स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया लोकगीतों में पूरी होती है ।

(x) भारतीय कला-विधाओं की निजी पहचान है : (A) समय के अंतराल की अनभिज्ञता (B) चिरस्थिरता एवं समसामयिकता का समन्वय (C) आकर्षण एवं मनोरंजन से पूर्ण (D) वर्तमान और भविष्य का आधार

Solution

(i) (B) हर प्रस्तुति में नवीनता – गद्यांश के आरंभ में ही कहा गया है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है, उतनी बार नयापन उभरता है ।

(ii) (A) गुणोत्कर्ष – 'गुण' + 'उत्कर्ष' = विशिष्टताओं (गुणों) की वृद्धि ।

(iii) (C) केवल कथन III सही है – गद्यांश में कहा गया है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है । शेष कथन गद्यांश से मेल नहीं खाते ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 79 of 122

(iv) (A) लोकगीतों और प्रकृति में व्याप्त स्वरों के समन्वय द्वारा – अनेक राग लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर और प्रकृति में व्याप्त स्वरों से बने हैं ।

(v) (D) संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल परस्पर मिलते हों – गद्यांश में स्पष्ट लिखा है कि जिस बिंदु पर लय और ताल मिलते हैं उसे 'सम' कहते हैं ।

(vi) (B) आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर – "कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है ।"

(vii) (A) प्रकृति की विभिन्नता, सामयिकता और शाश्वतता के मिलने से – लय (विभिन्नता-सामयिकता) और ताल (एकत्व-शाश्वतता) के मिलन से संस्कृति बनती है ।

(viii) (A) लय – "लय है प्रकृति की विभिन्नता – सामयिकता ।"

(ix) (B) लोकगीत और प्रकृति शास्त्रीय संगीत के आधार हैं – गद्यांश का सार यही है कि रागों का आधार लोकगीत और प्रकृति के स्वर हैं ।

(x) (B) चिरस्थिरता एवं समसामयिकता का समन्वय – शाश्वतता और समकालीनता की संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान बताई गई है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 80 of 122

CBSE 2024 · 2/3/1 · Q1 — 10 marks

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (10×1=10)

सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं – प्रथम – सुसंस्कार और द्वितीय – सत्संगति । सुसंस्कार जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है । जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है । सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं । परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – "महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो ।"

वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है । चरित्रवान व्यक्ति ही समाज की शोभा है, शक्ति है । सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है । विदुर जी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है । आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता । व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है । अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है । आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के आचरक घटक हैं – इस बात को विस्मृत कर देते हैं ।

(i) "सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है ।" पंक्ति में रेखांकित पद का आशय हो सकता है : (A) विलक्षण विचार (B) विलक्षण वैभव (C) विलक्षण भाव (D) विलक्षण विवेक

(ii) सुचारित्र्य के सशक्त स्तम्भ हैं : (A) संपत्ति और सुसंस्कार (B) सत्संगति और आनुवंशिकता (C) सुसंस्कार और परिवेश (D) सुसंस्कार और सत्संगति

(iii) संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'कालुष्य' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ? (A) दोष (B) कालिमा (C) लघुता (D) प्रभास

(iv) गद्यांश के अनुसार सतत सत्संगति से क्या प्राप्त होता है ? (A) निर्माण को नई दिशा (B) श्रमण करने का मार्ग (C) विचारों को नई दिशा (D) विचरण करने का मार्ग

(v) गद्यांश में 'भीतर का देवता' कथन किस बात की ओर संकेत करता है ? (A) ईश्वर का आभास (B) दिव्यगुणों का आभास (C) सत्य का आभास (D) परिवेश का आभास

(vi) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : शिथिल चरित्र से ही जीवन सार्थक है ।

कथन II : शिथिल चरित्र से ही राष्ट्र निर्माण संभव है ।

कथन III : आनुवंशिक परंपरा से ही चरित्र अर्जन संभव है ।

कथन IV : उदात्त चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है ।

गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? (A) केवल कथन I सही है । (B) केवल कथन II और III सही हैं । (C) केवल कथन IV सही है । (D) केवल कथन II सही है ।

(vii) "कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है ।" इस उदाहरण के मूल भाव को व्यक्त करने वाली कहावत है : (A) परहित सरिस धर्म नहीं भाई (B) बिनु सत्संग विवेक न होई (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई (D) जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना

(viii) विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में क्या सत्य नहीं है ? (A) सुचरित्र के बीज परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं । (B) चरित्र निर्माण व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों पर निर्भर है । (C) परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकती है । (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है ।

(ix) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन के माध्यम से लेखक ने उल्लेख किया है : (A) सत्संगति के प्रभाव को (B) हजारी प्रसाद की उदारता को (C) महाकवि टैगोर की दिव्यता को (D) चरित्र निर्माण के प्रयासों को

(x) शिथिल चरित्र सम्पूर्ण राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है ? (A) राष्ट्र शिथिल हो जाता है (B) राष्ट्र का विकास रुक जाता है (C) राष्ट्र का उत्थान करता है (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

Solution

(i) (B) विलक्षण वैभव – 'दुर्लभ विभूति' यानी दुर्लभ, अनोखा वैभव (संपत्ति) ।

(ii) (D) सुसंस्कार और सत्संगति – गद्यांश के पहले ही वाक्य में यही दो स्तंभ बताए गए हैं ।

(iii) (A) दोष – 'कालुष्य' का अर्थ मलिनता/दोष है, जो कुमार्गी में होता है और सत्संगति से दूर होता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 81 of 122

(iv) (C) विचारों को नई दिशा – "सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है" ।
(v) (B) दिव्यगुणों का आभास – टैगोर के पास बैठने से व्यक्ति को अपने भीतर के दिव्य गुणों के जाग उठने का अनुभव होता था ।
(vi) (C) केवल कथन IV सही है – गद्यांश के अनुसार चरित्र (उदात्त चरित्र) से ही जीवन की सार्थकता है; शिथिल चरित्र राष्ट्र पर संकट लाता है और चरित्र उत्तराधिकार में नहीं मिलता ।
(vii) (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई – दुष्ट भी सत्संगति से सुधर जाता है, जैसे पारस के स्पर्श से कुधातु सोना बन जाती है ।
(viii) (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है – विदुर जी की उक्ति के अनुसार चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है; परिस्थिति और परिवेश केवल प्रेरणा देते हैं (गद्यांश में संगति का उल्लेख विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में नहीं है) ।
(ix) (A) सत्संगति के प्रभाव को – लेखक ने द्विवेदी जी के कथन से सत्संगति के प्रभाव को दर्शाया है ।
(x) (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है – "व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है ।"

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 82 of 122

CBSE 2024 · 2/3/2 · Q2 | CBSE 2024 · 2/3/3 · Q1 **asked 2 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (10×1=10)

सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं – प्रथम – सुसंस्कार और द्वितीय – सत्संगति । सुसंस्कार जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है । जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है । सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं । परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – "महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो ।"

वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है । चरित्रवान व्यक्ति ही समाज की शोभा है, शक्ति है । सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है । विदुर जी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है । आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता । व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है । अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है । आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के आचरक घटक हैं – इस बात को विस्मृत कर देते हैं ।

(i) "सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है ।" पंक्ति में रेखांकित पद का आशय हो सकता है : (A) विलक्षण विचार (B) विलक्षण वैभव (C) विलक्षण भाव (D) विलक्षण विवेक

(ii) सुचारित्र्य के सशक्त स्तम्भ हैं : (A) संपत्ति और सुसंस्कार (B) सत्संगति और आनुवंशिकता (C) सुसंस्कार और परिवेश (D) सुसंस्कार और सत्संगति

(iii) संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'कालुष्य' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ? (A) दोष (B) कालिमा (C) लघुता (D) प्रभास

(iv) गद्यांश के अनुसार सतत सत्संगति से क्या प्राप्त होता है ? (A) निर्माण को नई दिशा (B) भ्रमण करने का मार्ग (C) विचारों को नई दिशा (D) विचरण करने का मार्ग

(v) गद्यांश में 'भीतर का देवता' कथन किस बात की ओर संकेत करता है ? (A) ईश्वर का आभास (B) दिव्यगुणों का आभास (C) सत्य का आभास (D) परिवेश का आभास

(vi) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : शिथिल चरित्र से ही जीवन सार्थक है ।

कथन II : शिथिल चरित्र से ही राष्ट्र निर्माण संभव है ।

कथन III : आनुवंशिक परंपरा से ही चरित्र अर्जन संभव है ।

कथन IV : उदात्त चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है ।

गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? (A) केवल कथन I सही है । (B) केवल कथन II और III सही हैं । (C) केवल कथन IV सही है । (D) केवल कथन II सही है ।

(vii) 'कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है ।' इस उदाहरण के मूल भाव को व्यक्त करने वाली कहावत है : (A) परहित सरिस धर्म नहीं भाई (B) बिनु सत्संग विवेक न होई (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई (D) जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना

(viii) विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में क्या सत्य नहीं है ? (A) सुचरित्र के बीज परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं । (B) चरित्र निर्माण व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों पर निर्भर है । (C) परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकती है । (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है ।

(ix) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन के माध्यम से लेखक ने उल्लेख किया है : (A) सत्संगति के प्रभाव को (B) हजारी प्रसाद की उदारता को (C) महाकवि टैगोर की दिव्यता को (D) चरित्र निर्माण के प्रयासों को

(x) शिथिल चरित्र सम्पूर्ण राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है ? (A) राष्ट्र शिथिल हो जाता है (B) राष्ट्र का विकास रुक जाता है (C) राष्ट्र का उत्थान करता है (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

Solution

(i) (B) विलक्षण वैभव – 'दुर्लभ विभूति' यानी दुर्लभ, अनोखा वैभव (संपत्ति) ।

(ii) (D) सुसंस्कार और सत्संगति – गद्यांश के पहले ही वाक्य में यही दो स्तंभ बताए गए हैं ।

(iii) (A) दोष – 'कालुष्य' का अर्थ मलिनता/दोष है, जो कुमार्गी में होता है और सत्संगति से दूर होता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 83 of 122

(iv) (C) विचारों को नई दिशा – "सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है" ।
(v) (B) दिव्यगुणों का आभास – टैगोर के पास बैठने से व्यक्ति को अपने भीतर के दिव्य गुणों के जाग उठने का अनुभव होता था ।
(vi) (C) केवल कथन IV सही है – गद्यांश के अनुसार चरित्र (उदात्त चरित्र) से ही जीवन की सार्थकता है; शिथिल चरित्र राष्ट्र पर संकट लाता है और चरित्र उत्तराधिकार में नहीं मिलता ।
(vii) (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई – दुष्ट भी सत्संगति से सुधर जाता है, जैसे पारस के स्पर्श से कुधातु सोना बन जाती है ।
(viii) (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है – विदुर जी की उक्ति के अनुसार चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है; परिस्थिति और परिवेश केवल प्रेरणा देते हैं (गद्यांश में संगति का उल्लेख विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में नहीं है) ।
(ix) (A) सत्संगति के प्रभाव को – लेखक ने द्विवेदी जी के कथन से सत्संगति के प्रभाव को दर्शाया है ।
(x) (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है – "व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है ।"

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 84 of 122

CBSE 2024 · 2/4/1 · Q1 | CBSE 2024 · 2/4/2 · Q2 | CBSE 2024 · 2/4/3 · Q1 asked 3 times 10 marks

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

प्रगति मैदान में बहुत से मेले लगते हैं, लेकिन विश्व पुस्तक मेला का अपना आनंद है । यह मेला नहीं, पुस्तकों के साथ जीने, उन्हें महसूस करने का उत्सव है । बीते तीन दशकों से, जब से सूचना प्रौद्योगिकी का प्रादुर्भाव हुआ है, मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग इसी भय में जीते रहे हैं कि कहीं कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले । जैसे-जैसे चिंताएँ बढ़ी, पुस्तकों का बाजार भी बढ़ता गया । उसे बढ़ना ही था – आखिर साक्षरता दर बढ़ रही है, ज्ञान पर आधारित जीविकोपार्जन करने वालों की संख्या बढ़ रही है । पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं ।

असल में विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने-बेचने की जगह नहीं है । यह पुस्तक प्रेमियों की जरूरत को एक स्थान पर पूरा करने का केवल बाजार नहीं है क्योंकि केवल पुस्तक खरीदने के लिए तो दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं, जो घर बैठे किताबें पहुँचा देती हैं, बल्कि एक उत्सव है । दरअसल, पुस्तक भी इंसानी प्यार की तरह होती है, जिससे जब तक बात न करो, सामने न हो, स्पर्श न करो, अपनत्व का अहसास नहीं होता । फिर, तुलनात्मकता के लिए एक ही स्थान पर एक साथ इतने सजीव उत्पाद मिलना एक बेहतर प्रचार का विकल्प और मनोवृत्ति भी है ।

पुस्तक मेला एक त्योहार है, पाठकों, लेखकों, व्यापारियों, बच्चों का । हर दिन कई सौ पुस्तकों का लोकार्पण, बीस-पच्चीस गोष्ठी-विमर्श, दस-पंद्रह लेखकों से बातचीत के सत्र और बच्चों की गतिविधियाँ । ढेर सारे विचार, मतांतर एक ही छत के नीचे, पर सभी का एक ही लक्ष्य, ज्ञान को विस्तार मिले ।

दिन चढ़ते ही लोग कंधे छीलती भीड़ में उचक-उचक कर लेखकों को पहचानने का प्रयास करते हैं । कहीं कविता पाठ चलता है, तो कहीं पर व्यंग्य और कहानी पेश करने का आयोजन । इस मेले की खासियत यह भी है कि दूर-दराज से आए और नए लेखक अपनी पांडुलिपियाँ लेकर प्रकाशकों को तलाशते दिखते हैं । विदेशी मंडप में भले ही अधिकांश पुस्तकें केवल प्रदर्शन के लिए होती हैं, लेकिन कुछ लोग इनसे प्रेरणा प्राप्त करते भी दिखाई देते हैं । बच्चों की नैसर्गिक रचनात्मक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए बाल मंडप एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण होता है । पुस्तक मेला में दिल और दिमाग, दोनों पुस्तक के साथ धड़कते-मचलते हैं, तभी तो यह मेला नहीं हैं, आनंदोत्सव है । पुस्तकों का वसंतोत्सव है, जो आश्वस्त करता है कि मुद्रित शब्दों की शक्ति, सहकार और सौंदर्य अब भी विद्यमान है ।

(i) गद्यांश के आधार पर पुस्तकों का जीवन में महत्त्व है – (A) ज्ञान अर्जित करने के लिए (B) रोजगार प्राप्त करने के लिए (C) मनोरंजन प्राप्त करने के लिए (D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए

(ii) सूचना प्रौद्योगिकी से अभिप्राय है – (A) सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना । (B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना । (C) सूचनाओं के आदान-प्रदान का विकास करना । (D) सूचना क्षेत्र में संदेश, तस्वीर या विचार दूसरे स्थान पर पहुँचाना ।

(iii) सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव से किस क्षेत्र के लोगों को अधिक चिंता होने लगी ? (A) छापे खाने से जुड़े लोगों को (B) तकनीक जगत से जुड़े लोगों को (C) आई.टी. जगत से जुड़े लोगों को (D) हाथ का काम करने वाले लोगों को

(iv) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) पुस्तक मेले में सितारों और चित्रकारों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है ।

(II) सैकड़ों पुस्तकों का लोकार्पण और लेखकों के साथ विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त होता है ।

(III) अलग-अलग मत के लोग एक छत के नीचे खड़े होकर चर्चा करते हैं ।

(IV) पुस्तक मेले में घूमने-फिरने और मित्र बनाने का अवसर मिलता है ।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? (A) केवल कथन (I) सही है । (B) केवल कथन (II) सही है । (C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं । (D) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं ।

(v) पांडुलिपि कहते हैं – (A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को (B) पाण्डवों द्वारा लिखित प्रति को (C) नई पुस्तक की प्रति को (D) अप्रकाशित पुस्तक की प्रति को

(vi) पुस्तक मेले में इनमें से क्या नहीं होता ? (A) कविता पाठ (B) कहानी वाचन (C) नई पुस्तक का प्रचार (D) पार्टी का प्रचार

(vii) गद्यांश में आई "कंप्यूटर, टी.वी., सी.डी. की दुनिया छपे हुए अक्षरों को अपनी बहुरंगी चकाचौंध में उदरस्थ न कर ले ।" – पंक्ति का आशय है – (A) पढ़ाई से लोगों की रुचि न हटा दे । (B) पुस्तकों का महत्त्व कम न कर दे । (C) मुद्रित पुस्तकों का महत्त्व समाप्त न कर दे । (D) मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे ।

(viii) मुद्रण तकनीक से संबंध है – (A) पत्रकार का (B) लेखक का (C) प्रकाशक का (D) अर्थशास्त्री का

(ix) गद्यांश में पुस्तक मेले को लेखक ने 'आनंदोत्सव' की संज्ञा दी है, क्योंकि – (A) असंख्य लोग यहाँ आकर आनंद प्राप्त करते हैं । (B) असंख्य लेखक, विचारक, मंत्री और सितारे यहाँ मिलते हैं । (C) यहाँ दिल और दिमाग दोनों लगते हैं । (D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं ।

(x) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 85 of 122

कथन : विश्व पुस्तक मेला सिर्फ किताब खरीदने और बेचने की जगह नहीं है ।
कारण : आज किताब खरीदने-बेचने के लिए दर्जनों वेबसाइट उपलब्ध हैं ।
(A) कथन सही है, कारण गलत है । (B) कथन सही नहीं है, कारण सही है । (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता । (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

Solution

(i) **(D) वैचारिक और मानसिक भूख शांत करने के लिए** – गद्यांश में कहा है कि पुस्तकें इंसान को वैचारिक और मानसिक दुविधाओं के प्रश्नों का विकल्प देती हैं ।
(ii) **(B) सूचनाओं के आदान-प्रदान में तकनीक का प्रयोग करना ।**
(iii) **(A) छापे खाने से जुड़े लोगों को** – मुद्रण तकनीक से जुड़े लोग डरते थे कि कंप्यूटर, टी.वी. छपे अक्षरों को निगल न लें ।
(iv) **(C) केवल कथन (II) और (III) सही हैं ।** – गद्यांश में लोकार्पण, गोष्ठी-विमर्श और एक छत के नीचे अनेक मतों का उल्लेख है; सितारों-चित्रकारों से मिलने या घूमने-फिरने की बात नहीं है ।
(v) **(A) हाथ से लिखित (हस्तलिखित) प्रति को**
(vi) **(D) पार्टी का प्रचार** – मेले में कविता पाठ, कहानी वाचन और नई पुस्तकों का प्रचार होता है ।
(vii) **(D) मुद्रित माध्यमों को समाप्त न कर दे ।** (उत्तर CBSE अंक-योजना के अनुसार)
(viii) **(C) प्रकाशक का**
(ix) **(D) यहाँ दिल और दिमाग दोनों को खुराक मिलती हैं ।** (उत्तर CBSE अंक-योजना के अनुसार)
(x) **(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता ।** – कथन सही है; वेबसाइटों का होना भी सही है, पर मेले के उत्सव होने की व्याख्या यह नहीं करता ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 86 of 122

CBSE 2024 · 2/5/1 · Q1 | CBSE 2024 · 2/5/2 · Q2 | CBSE 2024 · 2/5/3 · Q1 asked 3 times 10 marks

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

तकनीक की हर नई छलांग उत्साह भी पैदा करती है और चिंता भी लाती है । 'डीपमाइंड' और 'ओपनएआई' जैसी कंपनियों द्वारा बनाए गए नए स्मार्ट चैटबॉट्स ने लोगों का मन मोह लिया है । इनमें इंसानों की तरह सवालों के जवाब देने की क्षमता है । ये बारीकियों की व्याख्या कर सकते हैं, साथ ही, तथ्यों को विश्वास के साथ साझा भी कर सकते हैं । ये चैटबॉट नए नहीं हैं । इंसानों के संवाद करने में सक्षम कंप्यूटर प्रोग्राम या चैटबॉट्स की अवधारणा का *1950* के दशक से ही एक इतिहास रहा है । शुरुआती चैटबॉट्स में से एक एलिजा है, जिसे *1960* के दशक में कंप्यूटर वैज्ञानिक जोसेफ वीजेनबाम ने प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का परीक्षण करने के लिए बनाया था । यह कीवर्ड और वाक्यांशों का जवाब देकर सहज ढंग से संवाद कर सकता था । चैटजीपीटी को अभी तक का सबसे उन्नत चैटबॉट माना जा रहा है ।

चैटजीपीटी को ओपनएआई द्वारा विकसित किया गया है । यह भाषा का एक मॉडल है, जो इंसानों की तरह ही प्रतिक्रिया करता है । कुछ चैटबॉट ज्यादा जटिल संवाद करने में भी सक्षम होते हैं और समय के साथ अपनी प्रतिक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं । अभी चैटजीपीटी सहित अधिकांश चैटबॉट्स अपने लिए सूचनाएँ एक विशाल, लेकिन एक सीमित दायरे से ही प्राप्त करते हैं । जैसे चैटजीपीटी का ताजा संस्करण *2021* के अंत तक संचित हुई सूचनाओं तक सीमित है । चैटबॉट अपनी प्रतिक्रिया में कहीं अधिक मुखर हैं और किसी जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि ऐसा करना गूगल या बिंग के लिए मुश्किल है । हालाँकि, चैटजीपीटी की इंसानों जैसी प्रतिक्रिया में सूचना स्रोत का जिक्र नहीं होता और न ही कोई लिंक या उद्धरण दिया जाता है । इसके साथ आसान बातचीत ने दुनियाभर में धूम मचा दी है । उत्साही लोग तरह-तरह के सवाल पूछ रहे हैं । हर संवाद के साथ चैटबॉट का भी परीक्षण और प्रशिक्षण चल रहा है ।

फिर भी एक चैटबॉट सब कुछ नहीं जानता, जबकि इसका इजहार या इसकी अभिव्यक्ति या लेखन इंसानों की तरह ही है । इसकी जानकारी गलत और दोषपूर्ण भी हो सकती है । इनको अभी भी कई बाधाओं या हदों को पार करना है, सूचनाओं को बढ़ाना है । कई भाषाओं के विकल्पों के साथ डिजिटल संचार पाठ से आवाज की ओर बढ़ रहा है । हर शब्द स्वरबद्ध होता जा रहा है । एलेक्सा जैसे सर्च इंजन और आवाज आधारित अन्य सहायकों से आगे जाने के लिए चैटबॉट्स को ज्यादा सूचनाओं की जरूरत पड़ेगी । लोगों की जिज्ञासाओं को शब्दों से ही नहीं स-स्वर शांत करना होगा ।

स्पैरो चैटबॉट जीपीटी की तुलना में कुछ बेहतर है । जल्द ही गलत सवालों को पहचानने वाले चैटबॉट भी आ जाएँगे । अगर समझदारी से इस्तेमाल हुआ, तो चैटबॉट हमारे बहुत काम आएँगे ।

(i) चैटबॉट्स से अभिप्राय है –

(A) स्कूल में बच्चों को पढ़ाने वाली रोबोटिक मशीन
(B) अंतरिक्ष में छिपे रहस्यों का पता लगाने वाली मशीन
(C) ऐसी रोबोटिक मशीन जिससे मनुष्य बात कर सके
(D) ऐसी रोबोटिक मशीन जो मनुष्य का काम कर सके

(ii) चैटबॉट्स द्वारा लोगों का मन मोहने का कारण इनमें से नहीं है :

(A) इंसानों से संवाद करना ।
(B) विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी जानकारी प्रदान करना ।
(C) तथ्यों को विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करना ।
(D) सूचना के स्रोतों की जानकारी प्रदान करना ।

(iii) गूगल या बिंग की तुलना में चैटबॉट्स के अधिक प्रभावशाली होने का कारण है –

(A) उपयोगकर्ता के साथ सहज ढंग से संवाद करना ।
(B) प्रतिक्रिया में मुखर होना और जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना ।
(C) छात्रों द्वारा अपना होमवर्क करने या निबंध लिखने में इसका प्रयोग करना ।
(D) अपनी बात के समर्थन में सूचना स्रोत का उल्लेख करना ।

(iv) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) चैटबॉट्स जटिल संवाद करने में सक्षम हैं ।
(II) चैटबॉट्स का विकास मानव जीवन के एकाकीपन को दूर करने में सक्षम है ।
(III) चैटबॉट्स मानव द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब अपने विवेक के आधार पर देता है ।
(IV) भविष्य में चैटबॉट्स सही गलत को पहचानने में सक्षम होंगे ।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही है/हैं ?

(A) केवल कथन (I) सही है ।
(B) केवल कथन (III) सही है ।
(C) कथन (I) और (IV) सही हैं ।
(D) कथन (II) और (III) सही हैं ।

(v) 'एक चैटबॉट सब कुछ नहीं जानता' – लेखक के इस कथन का कारण है –

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 87 of 122

(A) चैटबॉट द्वारा कभी-कभी गलत और दोषपूर्ण जानकारी देना ।

(B) चैटबॉट में संचित सूचनाओं का सीमित दायरे में होना ।

(C) चैटबॉट का हर संवाद के साथ परीक्षण और प्रशिक्षण चलना ।

(D) इंसानों जैसी प्रतिक्रिया में लिंक या उदाहरण न दे पाना ।

(vi) सबसे प्राचीन चैटबॉट का नाम है –

(A) एलेक्सा

(B) एलिजा

(C) स्पैरो

(D) चैटजीपीटी

(vii) चैटबॉट्स की सबसे बड़ी कमी है –

(A) गलत सवालों को पहचानने की क्षमता का न होना ।

(B) सूचनाओं का सीमित भंडार में होना ।

(C) स्रोतों का हवाला देने की क्षमता का न होना ।

(D) जानकारी के दोषपूर्ण होने की संभावना का होना ।

(viii) एलिजा चैटबॉट की रचना की गई थी –

(A) प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण हेतु

(B) मनुष्यों से संवाद करने हेतु

(C) मानवीय कार्यों में मदद करने हेतु

(D) सूचनाओं के भंडार-संकलन हेतु

(ix) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन : तकनीकी प्रगति उत्साह के साथ-साथ चिंता का कारण भी है ।
कारण : यह जीवन को सरल बनाने के साथ जटिल बना रही है ।

(A) कथन सही है, कारण गलत है ।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है ।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है ।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(x) 'डिजिटल दुनिया पाठ से आवाज की ओर बढ़ रही है' – पंक्ति से अभिप्राय है –

(A) लिखित शब्दों का महत्त्व कम हो रहा है ।

(B) इस दुनिया में स्वरबद्ध शब्दों का महत्त्व बढ़ रहा है ।

(C) यह दुनिया केवल स-स्वर शब्दों से जुड़ रही है ।

(D) यह दुनिया लिखित छोड़ केवल मौखिक की ओर बढ़ रही है ।

Solution

(i) **(C) ऐसी रोबोटिक मशीन जिससे मनुष्य बात कर सके** – चैटबॉट ऐसा कंप्यूटर प्रोग्राम है जो इंसानों से संवाद करने में सक्षम है ।
(ii) **(D) सूचना के स्रोतों की जानकारी प्रदान करना ।** – गद्यांश में कहा है कि चैटजीपीटी की प्रतिक्रिया में सूचना स्रोत का जिक्र, लिंक या उद्धरण नहीं होता ।
(iii) **(B) प्रतिक्रिया में मुखर होना और जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना ।** – गद्यांश के अनुसार ऐसा करना गूगल या बिंग के लिए मुश्किल है ।
(iv) **(C) कथन (I) और (IV) सही हैं ।** – कुछ चैटबॉट जटिल संवाद में सक्षम हैं और जल्द ही गलत सवालों को पहचानने वाले चैटबॉट आएँगे; एकाकीपन दूर करने या विवेक से उत्तर देने की बात गद्यांश में नहीं है ।
(v) **(A) चैटबॉट द्वारा कभी-कभी गलत और दोषपूर्ण जानकारी देना ।** – गद्यांश में कहा है, "इसकी जानकारी गलत और दोषपूर्ण भी हो सकती है" ।
(vi) **(B) एलिजा** – 1960 के दशक का शुरुआती चैटबॉट एलिजा बताया गया है ।
(vii) **(A) गलत सवालों को पहचानने की क्षमता का न होना ।** (उत्तर CBSE अंक-योजना के अनुसार)
(viii) **(A) प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण हेतु** – एलिजा प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का परीक्षण करने के लिए बनाया गया था ।
(ix) **(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।** – तकनीक जीवन सरल बनाती है पर उसे जटिल भी करती है, इसीलिए उत्साह के साथ चिंता भी होती है ।
(x) **(B) इस दुनिया में स्वरबद्ध शब्दों का महत्त्व बढ़ रहा है ।** – "हर शब्द स्वरबद्ध होता जा रहा है" से स्पष्ट है कि बोले गए शब्दों का महत्त्व बढ़ रहा है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 88 of 122

CBSE 2024 · 2/S/1 · Q1 | CBSE 2024 · 2/S/2 · Q2 | CBSE 2024 · 2/S/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

भारतीय आयुर्वेद के अनुसार औषधीय चाय *(हर्बल टी)* को वैदिक चाय के तौर पर भी जाना जाता है । यह बेहद स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर होती है । इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्त्व न सिर्फ शरीर में तरल पदार्थों की पूर्ति करते हैं बल्कि यह दूसरी चाय से भी भिन्न होती है । औषधीय चाय पीकर दिनभर की थकान तो दूर होती ही है, साथ ही यह शरीर को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाती है । बहुत कम लोग जानते हैं कि औषधीय चाय के नियमित सेवन से शरीर की प्रतिरक्षा भी बढ़ाई जा सकती है । शारीरिक प्रतिरक्षा शक्ति मज़बूत होने से शरीर को विभिन्न बीमारियों और संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है । अगर आप लंबे समय से किसी बीमारी से जूझ रहे हैं, तो औषधीय चाय के सेवन से उसके प्रभाव को कम कर सकते हैं । बेहतर स्वास्थ्य के लिए सामान्य चाय की अपेक्षा औषधीय गुणों से भरपूर चाय को ही प्राथमिकता देना बुद्धिमानी बतलाया गया है । इसे पीने से शरीर तो स्वस्थ रहता ही है, दिल और दिमाग भी ताज़गी से भरपूर रहता है ।

यह एक प्रकार से आयुर्वेदिक चाय के रूप में भी जानी जाती है और इसमें कैफीन की मात्रा बिलकुल भी नहीं होती है, जबकि दूसरी चाय व कॉफ़ी में कैफीन की अधिक मात्रा होने से शरीर में कई स्वास्थ्य समस्याएँ जन्म ले लेती हैं और धीरे-धीरे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है । औषधीय चाय में ऐसे कई गुण पाए जाते हैं, जिनसे अंदरूनी और बाहरी तौर पर शरीर की सफाई की जा सकती है । शरीर में मौजूद अशुद्धियों को इसके सेवन से काफी हद तक दूर किया जा सकता है । इससे त्वचा का संक्रमण खत्म होता है और त्वचा स्वस्थ भी होती है । अगर नियमित तौर पर हर्बल चाय का सेवन किया जाए, तो मुँहासों की समस्या से भी निजात पाई जा सकती है । यह सोरायसिस और एक्ज़िमा का इलाज करने में भी फायदेमंद है । त्वचा को स्वस्थ बनाए रखने के लिए औषधीय चाय का सेवन किया जा सकता है ।

आजकल की व्यस्त और अनियमित जीवन शैली के कारण बहुत से लोग कम उम्र से ही मोटापे का शिकार होने लग जाते हैं । बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएँ हो सकती हैं । वजन घटाने और मोटापा कम करने के लिए इस चाय को काफी लाभदायक माना जाता है । इसमें कुछ ऐसे तत्त्व पाए जाते हैं, जो कैलोरी और वजन को कम करने के लिए मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया को ठीक करते हैं ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का विषय है :

(A) औषधीय चाय : एक परिचय
(B) औषधीय चाय के प्रकार
(C) औषधीय चाय और सामान्य चाय में अंतर
(D) वर्तमान जीवन में चाय की आवश्यकता

(ii) लोग वर्तमान समय में औषधीय चाय के सेवन की ओर क्यों प्रेरित हो रहे हैं ?

(A) अधिक मुनाफ़ा होने से
(B) चाय का बाज़ार होने से
(C) आवश्यक पेय होने से
(D) स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से

(iii) वैदिक चाय की विशेषता होती है :

(A) प्राकृतिक होना
(B) स्वादिष्ट होना
(C) औषधीय गुणों से युक्त होना
(D) सरलता से उपलब्ध होना

(iv) हर्बल चाय साधारण चाय से भिन्न कैसे है ?

(A) अधिक स्वादिष्ट होने से
(B) कैफीन नहीं होने से
(C) अधिक लाभदायक होने से
(D) शरीर की सफाई करने से

(v) गद्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

कथन I : वैदिक चाय ही 'हर्बल टी' है ।
कथन II : इससे प्रतिरक्षा तंत्र मज़बूत होता है ।
कथन III : बेहतर स्वास्थ्य के लिए औषधीय चाय को प्राथमिकता देना अनिवार्य है ।
कथन IV : इस चाय में स्वाद की कमी होती है ।

(A) केवल कथन I सही है ।
(B) केवल कथन II और III सही हैं ।
(C) केवल कथन I, II, III सही हैं ।
(D) केवल कथन I और IV सही हैं ।

(vi) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन *:* वर्तमान समय में जीवन शैली व्यस्त और अनियमित है ।
कारण *:* बहुत से लोग मोटापे के शिकार हो जाते हैं ।

विकल्प :

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 89 of 122

(A) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है ।
(B) कथन सही नहीं है, लेकिन कारण सही है ।
(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है ।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(vii) वजन घटाने में हर्बल चाय सहायक होती है क्योंकि :

(A) भूख को कम कर देती है ।
(B) कोशिकाओं की मरम्मत होती है ।
(C) पाचन तंत्र को मज़बूत बनाती है ।
(D) मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है ।

(viii) गद्यांश के आधार पर हृदय रोग और मधुमेह जैसी समस्याओं का मूल कारण क्या है ?

(A) मोटापे का शिकार होना
(B) अनियमित जीवन शैली होना
(C) भोजन में वसा और चीनी अधिक होना
(D) कसरत और योग का अभाव होना

(ix) शरीर को विभिन्न बीमारियों से बचाया जा सकता है :

(A) शारीरिक श्रम को महत्त्व देकर
(B) रोज हर्बल चाय का सेवन कर
(C) शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर
(D) दिल, दिमाग को स्वस्थ रख कर

(x) गद्यांश के अनुसार 'सोरायसिस' और 'एक्ज़िमा' रोग का संबंध शरीर के किस भाग से है ?

(A) पेट
(B) मुँह
(C) दिल
(D) त्वचा

Solution

(इस पेपर की CBSE अंक-योजना उपलब्ध नहीं है; उत्तर गद्यांश के आधार पर दिए गए हैं ।)

(i) **(A) औषधीय चाय : एक परिचय** – पूरा गद्यांश औषधीय (हर्बल) चाय का परिचय, उसके गुण और लाभ बताता है ।

(ii) **(D) स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से** – लोग प्रतिरक्षा बढ़ाने, त्वचा व वज़न की समस्याओं से बचने के लिए इसे अपना रहे हैं ।

(iii) **(C) औषधीय गुणों से युक्त होना** – गद्यांश के पहले वाक्य में कहा है कि औषधीय चाय को ही वैदिक चाय कहा जाता है, और यह औषधीय गुणों से भरपूर है ।

(iv) **(B) कैफीन नहीं होने से** – गद्यांश में कहा है कि इसमें कैफीन बिलकुल नहीं होती, जबकि दूसरी चाय और कॉफ़ी में अधिक होती है ।

(v) **(C) केवल कथन I, II, III सही हैं ।** – कथन I (वैदिक चाय = औषधीय/हर्बल चाय) और कथन II (प्रतिरक्षा बढ़ना) गद्यांश में हैं; कथन III गद्यांश में 'बुद्धिमानी' के रूप में है (प्राथमिकता देना), इसलिए दिए गए विकल्पों में यही सबसे उपयुक्त है; कथन IV गलत है (चाय 'बेहद स्वादिष्ट' है) । (नोट : कथन III का 'अनिवार्य' शब्द गद्यांश में नहीं है; दिए गए विकल्पों में कोई भी पूरी तरह निर्दोष नहीं, इसलिए यह उत्तर सबसे निकट है ।)

(vi) **(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है ।** – जीवन शैली के व्यस्त-अनियमित होने से लोग मोटे होते हैं (यह परिणाम है), पर मोटापा जीवन शैली के व्यस्त-अनियमित होने की व्याख्या नहीं है, बल्कि उसका परिणाम है ।

(vii) **(D) मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है ।** – गद्यांश के अंतिम वाक्य के अनुसार ।

(viii) **(A) मोटापे का शिकार होना** – "बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएँ हो सकती हैं ।"

(ix) **(C) शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर** – "शारीरिक प्रतिरक्षा शक्ति मज़बूत होने से शरीर को विभिन्न बीमारियों और संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है ।"

(x) **(D) त्वचा** – गद्यांश में त्वचा-संक्रमण, मुँहासों, सोरायसिस और एक्ज़िमा की चर्चा एक साथ है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 90 of 122

CBSE 2023 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2023 · 2/1/2 · Q2 | CBSE 2023 · 2/1/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :
वैश्विक महामारी, संघर्ष और प्राकृतिक आपदा के बीच पूरा विश्व अवसाद से गुजर रहा है । औद्योगिक क्रांति की लहर के कारण पृथ्वी की पारिस्थितिकी और इंसानों के पर्यावरण के साथ संबंधों में एक नया और उल्लेखनीय मोड़ आया । करीब पाँच हज़ार वर्ष पहले हुए कृषि क्रांति ने समाज को भोजन और स्थायित्व प्रदान किया था । पहली औद्योगिक क्रांति *250* साल पहले हुई थी जो मुख्यत: कोयले और भाप के साथ हुई थी; दूसरी औद्योगिक क्रांति बिजली और तेल के साथ तथा तीसरी कम्प्यूटर और सहायक सामग्रियों के साथ और अब चौथी औद्योगिक क्रांति में भौतिक, डिजिटल और तकनीकी दुनिया में प्रौद्योगिकी का सम्मिश्रण है । बीसवीं शताब्दी के दौरान परमाणु बमों के विस्फोट के साथ मानवता ने नए युग में प्रवेश किया । हमने स्वयं के विनाश करने की शक्ति पा ली यह सुनिश्चित किए बिना कि हम ऐसा होने से रोक सकते थे ।
एक ऐसी दुनिया की कल्पना करना भी मुश्किल है जहाँ देश शक्ति और प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा नहीं करेंगे । विस्तृत औद्योगीकरण, कारखानों के प्रसार, सड़कों के निर्माण के लिए जंगलों के कटाव, विशाल बाँधों और विस्तृत उत्पादन आदि के लिए नदियों को रोकने, यातायात के साधनों की गतिविधियों और लोगों के पलायन ने पारिस्थितिकी में गंभीर गड़बड़ी पैदा की है । जिसके फलस्वरूप पर्यावरण परिवर्तन और भूमंडलीय ताप में वृद्धि को नकारा नहीं जा सकता है ।
आज प्रकृति और विश्व-शांति दोनों ही ख़तरे में हैं । विकास ने भू-राजनीति के साथ मिलकर मानवता को ख़तरे में डाल दिया है । और हमें यह नहीं पता कि वर्तमान की संकटमय परिस्थिति के आत्मघाती तरीकों से कैसे उबरा जाए *?*
आज मानव अस्तित्व को ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से ख़तरा हो रहा है और इसमें इतनी क्षमता है कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों के अरबों लोगों के जीवन और निवास स्थान को नुकसान पहुँच सकता है । पारिस्थितिकी संरक्षण और जलवायु-परिवर्तन की भयावह चुनौतियाँ दहला देने वाली हैं । अब इस बात की आवश्यकता है कि हमारी सोच और व्यवहार में बदलाव लाया जाए । इस मुद्दे का केन्द्र बिन्दु यह है कि हम अपनी सभ्यता की प्रक्रिया के संरक्षण के लिए किस प्रकार नए और संवेदनशील निर्माण की ओर बढ़ सकते हैं ।
(i) मानव अस्तित्व को सबसे अधिक ख़तरा किससे है ? (a) जलवायु परिवर्तन से (b) औद्योगीकरण से (c) बढ़ती महामारी से (d) प्रदूषण से
(ii) पारिस्थितिकी संरक्षण के लिए सबसे ठोस उपाय हो सकता है : (a) कड़े कानून लागू करना (b) औद्योगीकरण पर पाबंदी (c) सोच और व्यवहार में बदलाव (d) जागरूकता
(iii) 'पृथ्वी की पारिस्थितिकी' से आप क्या समझते हैं ? (a) पृथ्वी की बनावट (b) धरती पर जीवन (c) प्रकृति और पर्यावरण (d) पर्यावरण में संतुलन
(iv) कृषि-क्रांति से जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा ? (a) जीवन में संपन्नता आ गई (b) अन्न का पैदावार होने लगा (c) उत्तम कृषि की तलाश में भटकाव (d) भोजन और स्थिरता प्राप्त हुई
(v) कम्प्यूटर का विकास किस औद्योगिक क्रांति में हुआ ? (a) पहली (b) दूसरी (c) तीसरी (d) चौथी
(vi) बीसवीं शताब्दी में हमने अपने विनाश की शक्ति खोजी है, कैसे ? (a) परमाणु बम बनाकर (b) प्रौद्योगिकी विकास कर (c) तकनीकी विकास कर (d) डिजिटल दुनिया में प्रवेश कर
(vii) प्रतिस्पर्धाविहीन दुनिया की कल्पना करना कठिन क्यों है ? (a) प्रतियोगिता में बने रहने की इच्छा (b) प्रभुत्व स्थापित करने की इच्छा (c) त्याग की भावना का अभाव (d) संतोष की भावना का अभाव
(viii) गद्यांश के आधार पर पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव के लिए किसे उत्तरदायी **नहीं** ठहराया जा सकता ? (a) जंगलों का कटाव (b) लोगों का पलायन (c) प्राकृतिक आपदा (d) विस्तृत औद्योगीकरण
(ix) आपकी दृष्टि में लोगों के पलायन का प्रमुख कारण क्या हो सकता है ? (a) स्थायित्व की खोज (b) भय से मुक्त जीवन (c) बेहतर जीवन की तलाश (d) आवागमन की सुविधा
(x) पर्यावरण परिवर्तन में आप किसकी प्रमुख भूमिका मानते हैं ? (a) जनसंख्या वृद्धि (b) औद्योगीकरण (c) प्राकृतिक आपदा (d) मानवीय गतिविधियाँ

Solution

(i) (a) जलवायु परिवर्तन से – गद्यांश के अनुसार आज मानव अस्तित्व को ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से ख़तरा हो रहा है ।
(ii) (c) सोच और व्यवहार में बदलाव – गद्यांश कहता है कि अब हमारी सोच और व्यवहार में बदलाव लाने की आवश्यकता है ।
(iii) (c) प्रकृति और पर्यावरण – पारिस्थितिकी का अर्थ है प्रकृति और पर्यावरण का आपसी संबंध ।
(iv) (d) भोजन और स्थिरता प्राप्त हुई – कृषि क्रांति ने समाज को भोजन और स्थायित्व प्रदान किया ।
(v) (c) तीसरी – तीसरी औद्योगिक क्रांति कम्प्यूटर और सहायक सामग्रियों के साथ हुई ।
(vi) (a) परमाणु बम बनाकर – बीसवीं शताब्दी में परमाणु बमों के विस्फोट के साथ मानवता ने स्वयं को नष्ट करने की शक्ति पा ली ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 91 of 122

(vii) (b) प्रभुत्व स्थापित करने की इच्छा – देश शक्ति और प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं ।
(viii) (c) प्राकृतिक आपदा – जंगलों का कटाव, लोगों का पलायन और औद्योगीकरण का उल्लेख कारणों के रूप में है; प्राकृतिक आपदा को कारण नहीं बताया गया ।
(ix) (c) बेहतर जीवन की तलाश – लोग रोज़गार और सुविधाओं की तलाश में पलायन करते हैं ।
(x) (d) मानवीय गतिविधियाँ – औद्योगीकरण, वनों की कटाई, निर्माण आदि मानव-निर्मित गतिविधियाँ ही पर्यावरण परिवर्तन का मुख्य कारण हैं ।

CBSE 2023 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2023 · 2/2/2 · Q2 | CBSE 2023 · 2/2/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :
राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी सार्वजनिक और निजी स्वच्छता के प्रति चिंतित थे । दक्षिण अफ्रीका में बिताए दिनों के बाद से ही यह उनके सत्याग्रह अभियान का हिस्सा था । गांधी जी के लिए, समाज में स्वच्छता के लिए अभियान एक जाति विहीन और स्वस्थ समाज बनाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग था । उन्होंने स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने और इसे अस्पृश्यता को दूर करने की कुंजी मानने के अपने विचार को दोहराते हुए कहा था, "हर कोई अपना स्वयं का सफाई कर्ता है ।" गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका में थे तभी से उन्होंने अपनी साफ-सफाई का काम स्वयं करना शुरू कर दिया था और भारतीयों को भी सलाह दी थी कि वे अपना शौचालय साफ और सूखा रखें । वे जब भारत लौटे, तो उन्होंने दृढ़ता से भारतीयों के लिए स्वच्छता और उन्हें स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया ।
गांधी जी ने कहा था, "स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है ।" हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने स्वच्छता पर गांधी जी के विचारों से प्रेरणा ली और उनकी जयंती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया । यह अभियान एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गया और प्रधानमंत्री ने प्रत्येक भारतीय से इसमें शामिल होने और अपने आस-पास सफाई रखने का आग्रह किया ।
इस राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने और स्वच्छता की बढ़ती चुनौतियों को दूर करने के लिए, स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय ने एक बहु-आयामी कार्यनीति अपनाई और स्वच्छता तथा स्वास्थ्य में सुधार के लिए कई पहल कीं । *2015* के बाद से इसने विशेष रूप से स्वच्छता को अपने नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार लाने के अपने प्रयासों का केन्द्र बिंदु बनाया है । ये पहल अपने कार्यक्रमों के माध्यम से स्वास्थ्य संस्थानों और लोगों में स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करती है और अन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर इसे समग्रता से कार्यान्वित करती है ।
स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय की कायाकल्प पहल में सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में केन्द्र सरकार के संस्थानों और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में बुनियादी ढाँचे में सुधार, स्वच्छता व स्वास्थ्यकारिता और संक्रमण-नियंत्रण कार्यों में सुधार लाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी । स्वास्थ्य सुविधाओं का मूल्यांकन कई मानदंडों के आधार पर किया जाता है, और हर साल प्रत्येक स्तर पर अधिकतम अंक पाने वाले संस्थानों को कायाकल्प पुरस्कार प्रदान कर मान्यता दी जाती है ।
(i) महात्मा गांधी की प्रमुख चिंता थी – (a) स्वच्छता (b) सत्याग्रह (c) जाति-पाँति (d) छुआछूत
(ii) प्रधानमंत्री द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत कब की गई ? (a) स्वतंत्रता दिवस से (b) गणतंत्र दिवस से (c) गांधी जयन्ती से (d) सद्भावना दिवस से
(iii) 'अस्पृश्यता' से आप क्या समझते हैं ? (a) जातीय भेदभाव (b) वर्गीय भेदभाव (c) आर्थिक भेदभाव (d) सामाजिक भेदभाव
(iv) भारतीयों को स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? (a) स्वच्छता को लेकर सामाजिक भेदभाव के कारण (b) भारतीयों द्वारा स्वच्छता के कार्य को हेय मानने के कारण (c) स्वच्छता स्वयं का कार्य नहीं मानने के कारण (d) स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण
(v) 'स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है' – कथन का आशय है – (a) स्वच्छता स्वतंत्रता का आधार (b) स्वस्थ नागरिक से स्वतंत्रता (c) स्वच्छता सबसे आवश्यक (d) स्वच्छता से स्वास्थ्य
(vi) स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय का संबंध है – (a) छोटे बच्चों के स्वास्थ्य से (b) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से (c) भारत सरकार की योजनाओं से (d) अस्पताल तथा कर्मचारियों से
(vii) किसी भी देश में योजना बनाने का उद्देश्य होता है – (a) अधिकाधिक धन कमाना । (b) संबंधित व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना । (c) देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना । (d) लोगों को योजना के बारे में बताना ।
(viii) 'कायाकल्प पहल' योजना के अंतर्गत आने वाले कार्यक्रमों में इनमें से क्या सम्मिलित नहीं है ? (a) संक्रमण नियंत्रण कार्यक्रम (b) स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम (c) स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम (d) शिक्षा संबंधी कार्यक्रम
(ix) स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी जागरूकता की आवश्यकता क्यों है ? (a) बीमारियों से बचने के लिए (b) जनता को जागरूक करने के लिए (c) स्वस्थ समाज बनाने के लिए (d) देश के विकास के लिए
(x) स्वच्छता को आप किस प्रकार की जिम्मेदारी मानते हैं ? (a) सामूहिक (b) पारिवारिक (c) सामाजिक (d) व्यक्तिगत

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 92 of 122

Solution

(i) **(a) स्वच्छता** – गद्यांश के पहले ही वाक्य में कहा है कि गांधी जी सार्वजनिक और निजी स्वच्छता के प्रति चिंतित थे ।

(ii) **(c) गांधी जयन्ती से** – प्रधानमंत्री ने गांधी जी के विचारों से प्रेरणा लेकर उनकी जयंती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया ।

(iii) **(a) जातीय भेदभाव** – 'अस्पृश्यता' का अर्थ है जाति के आधार पर किसी को छूने योग्य न मानना, यानी जातीय भेदभाव ।

(iv) **(d) स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण** – लोग स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझते थे, इसीलिए गांधी जी ने भारत लौटकर उन्हें शिक्षित करने पर जोर दिया ।

(v) **(c) स्वच्छता सबसे आवश्यक** – गांधी जी के अनुसार स्वच्छता स्वतंत्रता से भी बढ़कर है, अर्थात् वह सबसे आवश्यक है ।

(vi) **(b) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से** – मंत्रालय ने स्वच्छता और स्वास्थ्य में सुधार के लिए कई पहल की हैं ।

(vii) **(c) देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना** – योजना का उद्देश्य नागरिकों तक सुविधाएँ पहुँचाना होता है, जैसे मंत्रालय की पहल स्वास्थ्य-स्वच्छता सुविधाओं के लिए है ।

(viii) **(d) शिक्षा संबंधी कार्यक्रम** – कायाकल्प पहल में बुनियादी ढाँचा, स्वच्छता, स्वास्थ्यकारिता और संक्रमण-नियंत्रण आते हैं, शिक्षा संबंधी कार्यक्रम नहीं ।

(ix) **(c) स्वस्थ समाज बनाने के लिए** – जागरूकता का अंतिम लक्ष्य स्वस्थ समाज का निर्माण है (अंक-योजना के अनुसार) ।

(x) **(d) व्यक्तिगत** – गांधी जी ने स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने की बात कही थी : "हर कोई अपना स्वयं का सफाई कर्ता है ।"

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 93 of 122

CBSE 2023 · 2/3/1 · Q1 | CBSE 2023 · 2/3/2 · Q2 | CBSE 2023 · 2/3/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :
समाज में, परिवार में विविध कुल परंपराओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता । हमारे वयोवृद्ध ही इन संस्कृतियों एवं परंपराओं के वाहक होते हैं और इनसे भलीभाँति परिचित होते हैं । वयोवृद्ध परिवार के तरुण सदस्यों को धर्मोन्मुख करते हैं, धार्मिक विधि-विधानों का महत्त्व समझाते हैं । वे भौतिकता और आध्यात्मिकता में संतुलन कायम करना सिखाते हैं । वे ही परिवार में शांति के उपाय, लोक-व्यवहार, रीति-नीति आदि के बारे में सद्गुण विकसित करने में सहायक होते हैं और संस्कारों की नींव रखते हैं । अतः किसी भी कारणवश परिवार के वृद्धजनों का अनादर एवं अपमान नहीं होना चाहिए । तरुणों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाएँ और उनके मान-सम्मान में कोई कमी न आने दें तथा उनकी सुरक्षा कोमलता से करें । भौतिक जीवन-शैली के चलते भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं जिसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा एवं उनका तिरस्कार है । बुजुर्गों को दरकिनार करने से आज परिवारों में कलह-क्लेश, दुख-संताप बढ़ रहा है । भौतिक जीवन-शैली से हमारी आस्थाओं के मूल्य ही बदल गए हैं । मानसिक अशांति बढ़ रही है, रोग-शोक बढ़ रहे हैं । परिवार के तरुण सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार के वृद्धजनों को अपने से अलग न करें एवं उनका यथोचित मान-सम्मान करें । परिवार, समाज की कसौटी पर खरी उतरने वाली धारणाओं, मान्यताओं एवं परम्पराओं को तोड़ने-मोड़ने का या उनकी अनदेखी करने का प्रयास कदापि न करें । संस्कार वहीं अच्छे होंगे जहाँ बुजुर्गों का, माँ-बाप का मान-सम्मान करते हुए उनके द्वारा निर्देशित संस्कृति एवं परंपराओं का ध्यान रखा जाएगा । बुजुर्ग जीवन के मूल्यों को जानने वाले होते हैं । उनका भी कर्तव्य है कि वे परिवार के हर मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप इसलिए न करें कि वे बुजुर्ग हैं । उनको भी हृदय की विशालता बनाए रखने में संकोच नहीं करना चाहिए ।

(i) वृद्धजनों को संस्कारों और रीतिरिवाजों का वाहक क्यों माना जाता है ? (a) क्योंकि वे जीवन-मूल्यों को जानने वाले होते हैं (b) क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं (c) क्योंकि वे निष्ठा और लगन से इनका पालन करते हैं (d) क्योंकि वे जीवन में इनके महत्त्व से परिचित हैं

(ii) संस्कार संबंधी पारिवारिक परंपराओं के समाप्त होने का कारण है : (a) संयुक्त परिवारों का विघटन (b) भौतिकतावाद का बढ़ता प्रचलन (c) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (d) व्यस्त जीवन-शैली

(iii) वृद्ध व्यक्तियों को परिवार की धुरी क्यों माना जाता है ? (a) भौतिक जीवन-शैली के दुष्परिणामों से अवगत कराने के कारण (b) परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण (c) जीवन के लंबे अनुभव और ज्ञान के कारण (d) परंपराओं और संस्कारों का सम्मान करने के कारण

(iv) वृद्धजनों का अनादर करने के परिणामों के विषय में कौन-सा कथन **असत्य** है ? (a) सामाजिक व पारिवारिक विघटन (b) समाज और परिवार में कुव्यवस्था (c) परिवार में कलह-क्लेश, दुःख-संताप (d) भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन

(v) बुजुर्गों के प्रति बढ़ती उपेक्षा और तिरस्कार का कारण है : (a) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (b) भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव (c) बुजुर्गों का अनावश्यक हस्तक्षेप (d) बुजुर्गों में संयम की कमी

(vi) भौतिक सुख-सुविधा के साधनों की वृद्धि ने जीवन को सुगम बनाने के साथ-साथ क्या दुखद स्थितियाँ दी हैं ? (a) शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ (b) व्यस्त जीवन-शैली (c) धन-दौलत का अंबार (d) जीवन का एकाकीपन

(vii) युवाओं को वृद्धों के साथ क्या नहीं करना चाहिए ? (a) वृद्धों का अनादर और अपमान (b) वृद्धों की कोमलता से सुरक्षा (c) वृद्धों को परिवार का महत्त्वपूर्ण सदस्य मानना (d) वृद्धों द्वारा निर्देशित परंपराओं का पालन करना

(viii) पारिवारिक विघटन को रोकने के लिए गद्यांश में वृद्धों से क्या अपेक्षा की गई है ? (a) एकांत में रहकर ईश्वर में ध्यान लगाना (b) परंपराओं और मान्यताओं को युवाओं पर न थोपना (c) युवाओं की समस्याओं को सुनना और सुलझाना (d) पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना

(ix) 'भौतिक जीवन-शैली से हमारी आस्थाओं के मूल्य ही बदल गए हैं ।' — पंक्ति का आशय : (a) भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है (b) भौतिक जीवन-शैली ने हमें धर्म-प्रधान बना दिया है (c) भौतिक जीवन-शैली ने हमें भाव-प्रधान बना दिया है (d) भौतिक जीवन-शैली ने हमें कर्म-प्रधान बना दिया है

(x) निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन *(A) :* भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्य बदलते जा रहे हैं ।
कारण *(R) :* भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव सर्वत्र हावी हो रहा है ।
(a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है । (b) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है । (c) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं । (d) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है ।

Solution

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 94 of 122

(i) **(b) क्योंकि वे इन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं** – गद्यांश के अनुसार वयोवृद्ध इन संस्कृतियों और परंपराओं के वाहक हैं, क्योंकि वे इन्हें आगे की पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं ।

(ii) **(a) संयुक्त परिवारों का विघटन** – संयुक्त परिवार टूटने से बुजुर्ग परिवार से दूर हो गए और संस्कार संबंधी परंपराएँ समाप्त होने लगीं (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

(iii) **(b) परिवार में सद्गुणों और संस्कारों की नींव रखने के कारण** – गद्यांश में कहा है कि वृद्ध ही सद्गुण विकसित करने में सहायक होते और संस्कारों की नींव रखते हैं, इसलिए वे परिवार की धुरी हैं ।

(iv) **(d) भौतिकता और आध्यात्मिकता का असंतुलन** – यह वृद्धजनों के अनादर का परिणाम नहीं, बल्कि भौतिक जीवन-शैली का परिणाम है; अन्य तीन परिणाम गद्यांश में बताए गए हैं, इसलिए यही कथन असत्य है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

(v) **(b) भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव** – गद्यांश कहता है कि भौतिक जीवन-शैली के चलते मूल्य बदल रहे हैं, जिसका परिणाम बुजुर्गों की उपेक्षा और तिरस्कार है ।

(vi) **(a) शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ** – 'मानसिक अशांति बढ़ रही है, रोग-शोक बढ़ रहे हैं' ।

(vii) **(a) वृद्धों का अनादर और अपमान** – गद्यांश में स्पष्ट कहा है कि किसी भी कारण से वृद्धजनों का अनादर और अपमान नहीं होना चाहिए ।

(viii) **(d) पारिवारिक मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करना** – अंत में कहा है कि बुजुर्ग परिवार के हर मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें और हृदय की विशालता बनाए रखें ।

(ix) **(a) भौतिक जीवन-शैली ने हमें अर्थ-प्रधान बना दिया है** – भौतिकता के प्रभाव से हमारी आस्थाएँ पैसे और सुख-सुविधा पर केंद्रित हो गई हैं ।

(x) **(a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है** – सनातन संस्कृति के मूल्य इसीलिए बदल रहे हैं कि भौतिक जीवन-शैली का प्रभाव हर जगह हावी है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 95 of 122

CBSE 2023 · 2/4/1 · Q1 | CBSE 2023 · 2/4/2 · Q2 | CBSE 2023 · 2/4/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :
वायु की गुणवत्ता में सुधार के लिए तुरंत कदम उठाए जाने की आवश्यकता है । प्राय: प्रदूषण बढ़ने के बाद ही हम कार्यवाही के लिए लालायित होते हैं, जबकि प्रदूषण बढ़ने से पहले ही हमें सक्रिय हो जाना चाहिए । मौसम और वायु प्रदूषण एक-दूसरे से जुड़े हैं । हवा की गति कम हो, तो प्रदूषक तत्त्व बढ़ जाते हैं और हवा की गति जब ज्यादा होती है, तो बेहद खराब-से-खराब हवा भी बेहतर होने लगती है । समय विशेष में किसी खास दिशा से हवा नमी, धूल या प्रदूषकों को साथ ला सकती है । कुछ वायु प्रदूषक जमीन की सतह के आसपास होते हैं और बहुत ऊँचाई तक पहुँचे प्रदूषक मौसम को भी प्रभावित करते हैं ।
जमीन से उठी गैसें, रासायनिक कण वायुमंडल में पहुँचकर अनेक बार नुकसानदेह प्रदूषणकारी बन सकते हैं, यदि वे लंबे समय तक वायुमंडल में बने रहे । अत: यदि अभी प्रदूषण वायुमंडल में पहुँचना रुक भी जाए, तो भी मौजूदा प्रदूषण अगले कई सालों तक असरकारी रहेंगे । वायु प्रदूषण की एक सच्चाई यह भी है कि एक जगह का प्रदूषण दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच जाता है । हवा साफ हो, तो कहीं-से-कहीं पहुँचे, चिंता की बात नहीं । हवा यदि प्रदूषण का भार लिए हुए है, तो चिंता का कारण है । हवा को प्रदूषकों का भार न ढोना पड़े, इसके साझा प्रयास किए जाने चाहिए । इसके लिए नवाचारी टेक्नोलॉजी और पद्धतियों के अनुसंधान पर काम करना ही होगा ।
जगह-जगह भवनों या अन्य ढाँचागत निर्माण से खुली जगह में जो कमी आ रही है, उससे स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में दिक्कत हो रही है । इससे भी प्रदूषण आसपास ही मँडराता रहता है । जीवाश्म ईंधन जलाने से या औद्योगिक प्रदूषणों से कार्बन, सल्फर या नाइट्रोजन के ऑक्साइड जब वायुमंडल में पहुँचे, तो जल और जल का जो भी प्रारूप होगा, वह हिमपात हो या ओस हो तेजाबी हो सकता है । निस्संदेह बरसात के बाद हवा तो साफ लगेगी लेकिन प्रदूषित जल से पेड़ों की जड़ें और उनको जमीन से मिलने वाले पोषक तत्त्व दुष्प्रभावित हो सकते हैं । तालाबों, नदियों के जलचर पीड़ित हो सकते हैं । कुछ प्रदूषक पत्तियों पर ऐसे बैठ जाएँ, जो पेड़ों के लिए हानिकारक हों ।
बरसात की जरूरत अब खेती, जलाशयों के लिए ही नहीं, दमघोंटू धुंध के प्रदूषण से निजात पाने के लिए भी हो गई हैं । कृत्रिम बरसात का विकल्प भी कुछ जिम्मेदार संस्थाएँ देने लगी हैं । वायुमंडलीय प्रदूषण में सुधार हेतु हमें सावधान होने की जरूरत है ।
(i) वायु की गुणवत्ता से क्या अभिप्राय है ? (a) वायु के प्रदूषक तत्त्व (b) वायु की स्थिति (c) वायु के बहने की गति (d) वायु की शुद्धता
(ii) 'प्रदूषण बढ़ने के बाद ही हम कार्यवाही के लिए लालायित होते हैं ।' – पंक्ति मानवीय स्वभाव की किस विशेषता का उल्लेख करती है ? (a) प्रदूषण बढ़ने पर हम चिंतित होने लगते हैं । (b) प्रदूषण बढ़ने से पहले ही हम कार्यवाही करने लगते हैं । (c) समस्या सिर पर आने पर ही समाधान पर विचार करते हैं । (d) समस्या आने से पहले ही समाधान पर विचार करते हैं ।
(iii) हवा की गति का प्रदूषण पर क्या प्रभाव पड़ता है ? (a) हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण बढ़ने लगता है (b) हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण घटने लगता है (c) हवा की गति कम होने पर प्रदूषण कम होने लगता है (d) हवा की गति सामान्य रहने पर प्रदूषण समाप्त हो जाता है
(iv) हवा का एक जगह से दूसरी जगह पहुँचना चिंता का कारण कब बन जाता है ? (a) जब वह धीमी गति से बहे (b) जब वह तीव्र गति से बहे (c) जब उसमें प्रदूषक तत्त्वों की अधिकता हो (d) जब उसमें धूल-मिट्टी की अधिकता हो
(v) हवा में उपस्थित प्रदूषण को कम करने के विषय में क्या सत्य **नहीं** है ? (a) सरकार और जनता को साझा प्रयास करने होंगे । (b) नवाचारी टेक्नोलॉजी और पद्धतियों पर काम करना होगा । (c) धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित रखना होगा । (d) हवा में रासायनिक गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना होगा ।
(vi) जगह-जगह भवनों के निर्माण से खुली जगह में कमी के साथ-साथ और क्या समस्या आ रही है ? (a) लोगों को ध्वनि-प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है । (b) स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में प्रदूषण बढ़ रहा है । (c) स्थानीय स्तर पर लोगों को आवाजाही में दिक्कत आ रही है । (d) स्थानीय स्तर पर सूर्य के प्रकाश की दिक्कत आ रही है ।
(vii) हवा में उपस्थित प्रदूषण को कम करने के लिए कृत्रिम बरसात प्रभावकारी तरीका क्यों **नहीं** है ? (a) इससे फ़सलों को नुकसान पहुँचेगा (b) इससे वनस्पति, जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचेगा (c) आर्थिक दृष्टि से महँगा सौदा है (d) प्रदूषित हवा विश्व-व्यापी समस्या है
(viii) वर्तमान समय में बेमौसम बरसात की जरूरत क्यों महसूस हो रही है ? (a) बढ़ते तापमान को कम करने के लिए (b) पेड़-पौधों की सिंचाई करने के लिए (c) पानी की कमी को दूर करने के लिए (d) प्रदूषित हवा को शुद्ध करने के लिए
(ix) प्रस्तुत गद्यांश का वर्ण्य-विषय है : (a) दिनोंदिन बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण (b) दिनोंदिन हवा में बढ़ता प्रदूषण (c) कृत्रिम बरसात : आज की आवश्यकता (d) पर्यावरण सुधार : समय की माँग
(x) निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन *(A) :* जमीन से उठी कम घातक गैसें भी वायुमंडल में पहुँचकर नुकसानदेह प्रदूषणकारी बन जाती है ।
कारण *(R) :* हवा की गति कम हो, तो प्रदूषक बढ़ जाते हैं ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 96 of 122

(a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है ।
(b) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है ।
(c) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है ।
(d) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं ।

Solution

(i) **(d) वायु की शुद्धता** – वायु की गुणवत्ता का अर्थ है हवा का शुद्ध होना, यानी उसमें प्रदूषकों का कम होना ।
(ii) **(c) समस्या सिर पर आने पर ही समाधान पर विचार करते हैं ।** – गद्यांश के अनुसार हम प्रदूषण बढ़ जाने के बाद ही कार्यवाही करते हैं, पहले नहीं ।
(iii) **(b) हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण घटने लगता है** – गद्यांश में कहा है कि हवा की गति ज्यादा हो तो बेहद खराब हवा भी बेहतर होने लगती है ।
(iv) **(c) जब उसमें प्रदूषक तत्त्वों की अधिकता हो** – हवा यदि प्रदूषण का भार लिए हुए है, तो वह दूरस्थ क्षेत्रों तक भी प्रदूषण पहुँचा देती है, यही चिंता का कारण है ।
(v) **(c) धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित रखना होगा ।** – सरकार-जनता के साझा प्रयास, नवाचारी टेक्नोलॉजी और गैसों के उत्सर्जन पर नियंत्रण की बात गद्यांश में है; धरती के तापमान की बात नहीं है, इसलिए यही कथन सत्य नहीं है ।
(vi) **(b) स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में प्रदूषण बढ़ रहा है ।** – खुली जगह घटने से वायु-प्रवाह में दिक्कत आती है और प्रदूषण आसपास ही मँडराता रहता है (उत्तर CBSE अंक-योजना के अनुसार) ।
(vii) **(b) इससे वनस्पति, जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचेगा** – अंक-योजना के अनुसार उत्तर (b) है ।
(viii) **(d) प्रदूषित हवा को शुद्ध करने के लिए** – गद्यांश के अनुसार बरसात की जरूरत अब दमघोंटू धुंध के प्रदूषण से निजात पाने के लिए भी है ।
(ix) **(b) दिनोंदिन हवा में बढ़ता प्रदूषण** – पूरा गद्यांश वायु-प्रदूषण, उसके कारणों और उसमें सुधार की आवश्यकता पर है ।
(x) **(b) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है ।** – कथन (A) गद्यांश के अनुसार सही है और कारण (R) भी सही है, पर हवा की गति कम होने से प्रदूषकों का बढ़ना जमीन से उठी गैसों के नुकसानदेह बनने की व्याख्या नहीं है (उत्तर CBSE अंक-योजना के अनुसार) ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 97 of 122

CBSE 2023 · 2/5/1 · Q1 | CBSE 2023 · 2/5/2 · Q2 | CBSE 2023 · 2/5/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –
सनातन काल से ही भारत में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट किए जाने का उल्लेख मिलता है । इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे ।
भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है । अत: भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानवता की संस्कृति कहा जा सकता है । योग हमें वैज्ञानिकता के साथ समग्र जीवन-शैली के प्रति जागरूक करता है, जिससे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है । साथ ही, इससे न केवल शांतिप्रिय जीवन पद्धति को बढ़ावा मिलता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के साथ मानवतापूर्ण संबंध स्थापित करने का संदेश भी प्राप्त होता है । भारत ने योग को हमेशा से सीमा, संस्कृति और भाषा से ऊपर रखा है । इसे यदि सही तरीके से समझा जाए और नियमित अभ्यास किया जाए, तो कई समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है । 'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज्' शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य जोड़ना एवं एकीकरण करने से है । आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है, आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन और व्यावहारिक स्तर पर योग को शरीर, मन और भावनाओं को संतुलित करने तथा सामंजस्य बनाए रखने का एक साधन माना जाता है ।
कोरोना काल में न केवल भारत, बल्कि वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना कि योग तनाव घटाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है । यह प्राचीन विद्या है और जीवन को नीरोगी रखने की एक दिव्य विद्या है । कोरोना काल में हम सभी ने अनुभव किया है कि योग हमें भयमुक्त, भाव में जीना सिखाता है । योग स्वास्थ्य और सुखी रहने के लिए अद्भुत प्रभावी विधि है, इसलिए घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए । योग सदाबहार है, रामबाण है, योग संजीवनी है । योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है । हम योग को एक टोल फ्री नम्बर की तरह उपयोग कर सकते हैं । जिस प्रकार टोल फ्री नम्बर को कोई भी, कहीं से, कभी भी डायल कर सकता है, उसी प्रकार योग भी है । जब तन-मन के लिए सच्चे मन से जागिए, तभी योग साकार हो जाता है । योग के माध्यम से हम जितने गहरे उतरेंगे, उतने शांत होंगे और पाएँगे कि अशांत करने वाले सारे तत्त्वों की धीरे-धीरे पहचान हो रही है और घने अंधेरे की जगह प्रकाश ले रहा है तथा जीवन निरंतर आनंदमय हो रहा है । समस्या शारीरिक हो या फिर पर्यावरण की, इनका समाधान है योग । आज बढ़ते प्रदूषण का समाधान केवल प्रकृतिमय जीवन पद्धति और सतत तथा सुरक्षित विकास में निहित है । यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है । अत: योग को आत्मसात कर हम स्वस्थ प्रकृतिमय जीवन जी सकते हैं ।
(i) भारतीय संस्कृति को मानवता की संस्कृति कहे जाने का क्या आधार है ? (a) समस्त मानव जाति को आश्रय देने की भावना (b) संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति होना (c) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना (d) समस्त मानव जाति को योग की शिक्षा देना
(ii) आध्यात्मिक स्तर पर योग साधन है – (a) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का (b) आत्मा का शरीर और मन से मिलन का (c) आत्मा का मन और मस्तिष्क से मिलन का (d) आत्मा का व्यक्ति और समाज से मिलन का
(iii) कोरोना काल में लोगों को किसके महत्त्व का ज्ञान हुआ ? (a) अच्छे स्वास्थ्य का (b) योग के महत्त्व का (c) चिकित्सकों का (d) पेड़-पौधों का
(iv) योग को संजीवनी क्यों कहा गया है ? (a) विश्व में भारत की पहचान बनाने के कारण (b) संसार की प्राचीनतम विद्या होने के कारण (c) ऋषि-मुनियों द्वारा महत्त्व दिए जाने के कारण (d) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण
(v) टोल फ्री नंबर से क्या अभिप्राय है ? (a) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर (b) मनोरंजन के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर (c) खरीददारी के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर (d) शिकायत दर्ज कराने के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर
(vi) योग और टोल फ्री नंबर में क्या समानता नहीं है ? (a) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है । (b) दोनों का लाभ कभी भी प्राप्त किया जा सकता है । (c) दोनों का लाभ कोई भी प्राप्त कर सकता है । (d) दोनों का लाभ कहीं भी प्राप्त किया जा सकता है ।
(vii) गद्यांश के आधार पर प्राचीनकाल में लोगों के नीरोग और दीर्घजीवी होने का क्या कारण था ? (a) शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करना (b) शुद्ध प्राकृतिक वातावरण का होना (c) खूब शारीरिक परिश्रम करना (d) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना
(viii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
(क) योग तनाव घटाता है ।
(ख) रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है ।
(ग) योग सभी समस्याओं का समाधान है ।
ऊपर लिखित कथनों में से कौन सा / कौन से सही है / हैं ? (a) केवल (क) (b) केवल (ग) (c) (क) और (ख) (d) (ख) और (ग)
(ix) योग शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ प्रेरणा भी देता है – (a) सादा जीवन उच्च विचार रखने का (b) समस्त विश्व को परस्पर जोड़ने का (c) समस्त मानव मात्र के कल्याण का (d) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का
(x) निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –
कथन (A) : घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 98 of 122

कारण (R) : योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है ।

(a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है । (b) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है । (c) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं । (d) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है ।

Solution

(i) **(c) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना** – गद्यांश में कहा है कि भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए हैं, इसीलिए उसे मानवता की संस्कृति कहा गया है ।

(ii) **(a) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का** – 'आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है, आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन' ।

(iii) **(b) योग के महत्त्व का** – 'कोरोना काल में... सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना' ।

(iv) **(d) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण** – जैसे संजीवनी बूटी ने लक्ष्मण को जीवन दिया, वैसे योग तन को स्वस्थ और मन को विकार-मुक्त करता है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

(v) **(a) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर** – टोल फ्री नंबर ऐसा नि:शुल्क फोन नंबर है, जिसे कोई भी, कहीं से और कभी भी डायल कर सकता है ।

(vi) **(a) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है ।** – समानता यह है कि दोनों का लाभ कोई भी, कहीं भी, कभी भी उठा सकता है; पर यह नहीं कहा जा सकता कि दोनों का लाभ सब लोग उठा ही रहे हैं, इसलिए यह समानता नहीं है (उत्तर अंक-योजना के अनुसार) ।

(vii) **(d) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना** – गद्यांश के पहले ही अनुच्छेद में कहा है कि योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट करने के कारण लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे ।

(viii) **(c) (क) और (ख)** – गद्यांश में योग को तनाव घटाने वाला और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला कहा है; 'योग सभी समस्याओं का समाधान है' ऐसा नहीं कहा गया, इसलिए (ग) सही नहीं है ।

(ix) **(d) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का** – अंत में कहा है कि योग के माध्यम से जीवन में प्रकृतिमय जीवन पद्धति का संदेश आता है ।

(x) **(a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।** – योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है, इसीलिए उसे घर-घर होना चाहिए ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 99 of 122

CBSE 2023 · 2/C/1 · Q1 | CBSE 2023 · 2/C/2 · Q2 | CBSE 2023 · 2/C/3 · Q1 **asked 3 times** **10 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :
मनुष्य और प्रकृति का गहरा नाता है । हमारा शरीर पाँच प्राकृतिक तत्त्वों से ही बना हुआ है । हमारा परिवेश भी प्रकृति के ही आधार पर बना हुआ है । मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है । विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं । हरे-भरे जंगलों को काटकर, कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं; नहरों, नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा अधिक हो गई है । मानव के स्वार्थ ने गंगा जैसी पवित्र नदी तक को नहीं छोड़ा है । कल-कारखानों एवं गाड़ियों द्वारा इतना प्रदूषण उत्सर्जित किया जा रहा है कि कई बार तो सही से साँस लेना भी दुष्कर कार्य प्रतीत होता है ।
हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं । प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं, यह पूर्णतया सत्य है; किन्तु क्या हमने प्रकृति को प्राकृतिक रूप में रहने दिया है । मोबाइल, टी.वी. आदि की स्क्रीन पर हमें सारे दृश्य अप्रतिम सुन्दर लगते हैं, किन्तु प्रकृति के साहचर्य में हम नहीं जाना चाहते और जाते भी हैं तो वहाँ भी हम प्रदूषण फैलाने में कोई कमी शेष नहीं छोड़ते ।
अभिमन्यु की तरह हम तथाकथित विकास के चक्रव्यूह में घुस तो गए हैं, पर उसे पार करने का मार्ग हमें सूझ ही नहीं रहा है । हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने की कोई कमी शेष नहीं छोड़ना चाहते हैं । सारी प्रकृति का दोहन स्वयं ही कर लेना चाहते हैं, ऊपर से झूठा अभिमान यह कि यह सब हम आगामी पीढ़ी का भविष्य रोशन करने के लिए ही कर रहे हैं ।
जीवन की सार्थकता इसी में है कि भौतिकता की चाशनी में डूबे यांत्रिक जीवन को छोड़कर वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाया जाए और सीमित साधनों के उपयोग से ही जीवन को सुन्दरतम एवं आनन्दित बनाया जाए । इसका प्रारम्भ दूसरों को उपदेश देकर नहीं, अपितु स्वयं से प्रारम्भ करके अनुकरणीय उदाहरण छोड़ा जाए । जब सब ऐसा करने की ओर प्रवृत्त होंगे, तब हमारा परिवेश और जीवन सुन्दरतम एवं मधुरतम हो जाएगा ।
(i) मनुष्य निरन्तर किसकी ओर अग्रसर रहता है ? (a) प्रकृति की ओर (b) विकास की ओर (c) विनाश की ओर (d) धर्म की ओर
(ii) निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए ।
कथन *(A) :* विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं ।
कारण *(R) :* विकास के साथ-साथ प्रकृति को नष्ट होने से भी बचाना होगा ।
(a) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है । (b) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं । (c) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है । (d) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है ।
(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
I. नदियों में स्वच्छ जल की मात्रा बढ़ती जा रही है ।
II. विकास के नाम पर कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं ।
III. हमारे परिवेश और प्राकृतिक परिवेश के आधार भिन्न हैं ।
ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? (a) केवल I (b) केवल II (c) केवल III (d) I, II एवं III सभी
(iv) मनुष्य सारी खुशियाँ कहाँ तलाश रहा है ? (a) प्राकृतिक परिवेश में (b) धार्मिक परिवेश में (c) हरे-भरे वनों में (d) भौतिक साधनों में
(v) मनुष्य का मन क्या देखकर आनन्द का अनुभव करता है ? (a) नए-नए चलचित्र (b) प्राकृतिक दृश्य (c) कंक्रीट के जंगल (d) मोबाइल स्क्रीन पर आने वाले संदेश
(vi) मनुष्य और प्रकृति के संबंध के विषय में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन **असत्य** है ? (a) मनुष्य लगातार प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है । (b) मनुष्य प्रकृति के साहचर्य में नहीं जाना चाहता । (c) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है । (d) मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है ।
(vii) विकास के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ करके आगामी पीढ़ी के लिए मनुष्य क्या कर रहा है ? गद्यांश के आधार पर लिखिए ।
(a) उसका भविष्य सँवार रहा है । (b) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है । (c) उसका भविष्य रोशन कर रहा है । (d) उसके भविष्य के लिए व्यापक तैयारी कर रहा है ।
(viii) मनुष्य जीवन की सार्थकता किसमें है ? (a) यांत्रिक जीवन में (b) प्राकृतिक जीवन में (c) नगरीय जीवन में (d) ग्रामीण जीवन में
(ix) जीवन को सुन्दरतम बनाने के लिए मनुष्य को निम्नलिखित में से कौन-से कदम उठाए जाने की जरूरत है ? (a) साधनों का अधिकाधिक उपयोग करना (b) दूसरों को अधिकाधिक उपदेश देना (c) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना (d) भौतिकता की चाशनी का आनन्द उठाना
(x) उपर्युक्त गद्यांश में लेखक की चिंता का विषय है : (a) मनुष्य की भौतिक साधनों पर बढ़ती निर्भरता (b) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन (c) मनुष्य का प्रकृति से विमुख होना (d) मनुष्य का स्क्रीन पर समय बिताना

Solution

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 100 of 122

(i) **(b) विकास की ओर** – गद्यांश की चौथी पंक्ति : 'मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है' ।
(ii) **(d) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है ।** – विकास प्रकृति का विनाश करके नहीं होना चाहिए, इसलिए विकास के साथ प्रकृति को नष्ट होने से बचाना भी आवश्यक है ।
(iii) **(b) केवल II** – I गलत है, क्योंकि नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा बढ़ी है; III गलत है, क्योंकि गद्यांश के अनुसार हमारा परिवेश प्रकृति के आधार पर ही बना है; II गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है ।
(iv) **(d) भौतिक साधनों में** – 'हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं' ।
(v) **(b) प्राकृतिक दृश्य** – 'प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं' ।
(vi) **(c) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है** – गद्यांश के अनुसार मनुष्य ने प्रकृति को प्रदूषित किया है, इसलिए यह कथन असत्य है ।
(vii) **(b) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है** – 'हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने की कोई कमी शेष नहीं छोड़ना चाहते' ।
(viii) **(b) प्राकृतिक जीवन में** – 'जीवन की सार्थकता इसी में है कि ... वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाया जाए' ।
(ix) **(c) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना** – लेखक के अनुसार सीमित साधनों से जीवन जीना और उपदेश के बजाय स्वयं से अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना ही उपाय है ।
(x) **(b) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन** – पूरा गद्यांश इसी चिंता पर टिका है कि मनुष्य प्रकृति का विनाश कर रहा है और उसके साथ संतुलन खो रहा है (यह प्रश्न बिना अंक-योजना के हल किया गया है ; (a) और (c) भी इसी चिंता के अंग हैं) ।

12 marks: long answer

CBSE 2019 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2019 · 2/1/2 · Q1 | CBSE 2019 · 2/1/3 · Q1 **asked 3 times** **12 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
बीसवीं शताब्दी में भारत ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी – उपनिवेशवादी व्यवस्था को अपने ऊपर से उतार फेंका । महात्मा गांधी की प्रेरणा से भारतीय जनता ने एक नए ढंग का संघर्ष कर अपनी स्वाधीनता प्राप्त की । गांधीजी ने राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष को भी स्वाधीनता संग्राम से जोड़ दिया । उनके लिए राजनैतिक और प्रशासनिक भेदभाव के खिलाफ़ लड़ना जितना महत्त्वपूर्ण था उतना ही महत्वपूर्ण था सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर के भेदभाव के विरुद्ध खड़ा होना । अपनी 'आत्मकथा' में गांधीजी लिखते हैं – "ऐसे व्यापक सत्यनारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए प्राणीमात्र के प्रति आत्मवत (अपने समान) प्रेम की भारी जरूरत है । इस सत्य को पाने की इच्छा करने वाला मनुष्य जीवन के एक भी क्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता । यही कारण है कि मेरी सत्य-पूजा मुझे राजनैतिक क्षेत्र में घसीट ले गई । जो कहते हैं कि राजनीति से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है, मैं निस्संकोच होकर कहता हूँ कि ये धर्म को नहीं जानते और मेरा विश्वास है कि यह बात कह कर मैं किसी तरह विनय की सीमा को लाँघ नहीं रहा हूँ" । आज राजनीति को धर्म से अलग मानने वालों को गांधीजी की यह बात जरूर सुननी चाहिए । अपने इसी विश्वास के कारण गांधीजी ने सामाजिक और धार्मिक ढाँचे के भीतर समानता के संघर्ष को प्रमुखता से आगे बढ़ाया क्योंकि वे जानते थे कि केवल राजनीतिक मुक्ति से उनके सपनों का भारत नहीं बनेगा । उनका मानना था कि करोड़ों वंचितों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति ही स्वाधीन भारत की पहचान होनी चाहिए ।
(क) गद्यांश को पढ़कर उपयुक्त शीर्षक लिखिए । (1)
(ख) बीसवीं शताब्दी में भारत में क्या बड़ी घटना हुई ? (1)
(ग) महात्मा गांधी के लिए सामाजिक सुधारों के लिए संघर्ष क्यों महत्त्वपूर्ण था ? (2)
(घ) गांधीजी ने सत्यनारायण के दर्शन की पात्रता क्या मानी थी और क्यों ? (2)
(ङ) कौन लोग धर्म को नहीं जानते ? उनके प्रति गांधीजी ने ऐसी धारणा क्यों बनाई ? (2)
(च) गांधीजी के विचार से स्वाधीन भारत की पहचान क्या होनी चाहिए ? (2)
(छ) गद्यांश के आधार पर लिखिए कि स्वाधीनता की व्यापक पहचान क्या होनी चाहिए ? क्यों ? (2)

Solution

(क) **शीर्षक** – 'गांधीजी और स्वाधीनता की व्यापक पहचान' (अन्य उपयुक्त शीर्षक – 'सामाजिक-आर्थिक मुक्ति का संघर्ष', 'गांधीजी का सत्य और संघर्ष') ।
(ख) बीसवीं शताब्दी में भारत ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी-उपनिवेशवादी व्यवस्था को उतार फेंका, अर्थात् गांधीजी की प्रेरणा से नए ढंग के संघर्ष द्वारा स्वाधीनता प्राप्त की ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 101 of 122

(ग) गांधीजी के लिए राजनैतिक और प्रशासनिक भेदभाव के विरुद्ध लड़ना जितना महत्त्वपूर्ण था, उतना ही महत्त्वपूर्ण समाज और धर्म के ढाँचे के भीतर के भेदभाव के विरुद्ध खड़ा होना था । वे जानते थे कि केवल राजनीतिक मुक्ति से उनके सपनों का भारत नहीं बनेगा; सच्ची स्वाधीनता तभी है जब समाज में समानता हो ।
(घ) गांधीजी के अनुसार सत्यनारायण के दर्शन के लिए प्राणीमात्र के प्रति आत्मवत (अपने समान) प्रेम की भारी जरूरत है । कारण यह कि सत्य व्यापक है; उसे पाने की इच्छा रखने वाला मनुष्य जीवन के किसी भी क्षेत्र से अलग नहीं रह सकता, उसे सबसे अपनापन रखना ही होगा ।
(ङ) जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति से धर्म का कोई संबंध नहीं है, वे धर्म को नहीं जानते । गांधीजी ने यह धारणा इसलिए बनाई कि उनकी दृष्टि में धर्म का अर्थ सत्य की खोज और सबके प्रति प्रेम है; सत्य का खोजी जीवन के हर क्षेत्र में, राजनीति में भी, सत्य और नैतिकता का पालन करेगा । अतः धर्म को राजनीति से अलग करना उनके विचार में अज्ञान है ।
(च) गांधीजी के विचार से स्वाधीन भारत की पहचान करोड़ों वंचितों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति से होनी चाहिए ।
(छ) स्वाधीनता की व्यापक पहचान केवल विदेशी शासन से राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि वंचितों और पिछड़ों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति तथा समानता होनी चाहिए । क्योंकि केवल राजनीतिक मुक्ति से गांधीजी के सपनों का भारत नहीं बन सकता; जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति को समानता और आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती, स्वाधीनता अधूरी है ।

CBSE 2019 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2019 · 2/2/2 · Q1 | CBSE 2019 · 2/2/3 · Q1 **asked 3 times** **12 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
महिलाओं की मर्यादा और उनसे दुर्व्यवहार के मामले भी अन्य मामलों की तरह न्यायालयों में ही जाते हैं किंतु पिछले कुछ समय से ऐसे आचरण के लिए स्वयं न्यायपालिका पर उँगली उठाई जा रही है । काफ़ी हद तक यह समस्या न्यायपालिका की नहीं, बल्कि पूरे समाज की कही जा सकती है । जज भी समाज के ही अंग हैं, इसलिए यह समस्या न्यायपालिका में भी दिखाई देती है । हमारे समाज में क़ानून के पालन को लेकर बहुत शिथिलता है और अकसर क़ानून का पालन न करने को सामाजिक हैसियत का मानक मान लिया जाता है । वी.आई.पी. संस्कृति का छद्म सिद्धांत ही यह बना लिया गया है कि उसे सामान्य नियम-क़ानून नहीं पालन करने होते, क्योंकि वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है । छोटे शहरों, कस्बों में सरकारी अफ़सरों की हैसियत बहुत बड़ी होती है । और जज भी उन्हीं हैसियत वाले लोगों में शामिल होते हैं । ऐसे में, अगर कुछ जज यह मान लें कि वे तमाम सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर हैं, तो यह हो सकता है । माना यह जाना चाहिए कि जितने ज़्यादा ज़िम्मेदार पद पर कोई व्यक्ति है, उस पर क़ानून के पालन की ज़िम्मेदारी भी उतनी ही ज़्यादा है । ख़ास तौर से जिन लोगों पर क़ानून की रक्षा करने और दूसरों से क़ानून का पालन कराने की ज़िम्मेदारी है, उन्हें तो इस मामले में बहुत ज़्यादा सतर्क होना चाहिए लेकिन प्राय: ऐसा होता नहीं है । इस समस्या की ओर कई वरिष्ठ जज और न्यायविद ध्यान दिला चुके हैं कि न्यायपालिका में निचले स्तर पर अच्छे जज नहीं मिलते । इसकी एक बड़ी वजह यह है कि अच्छे न्यायिक शिक्षा संस्थानों से निकले अच्छे छात्र न्यायपालिका में नौकरी करना पसंद नहीं करते, क्योंकि उन्हें कामकाज की परिस्थितियाँ और आमदनी, दोनों ही आकर्षक नहीं लगतीं । नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट को तो बनाया ही इसलिए गया था कि अच्छे स्तर के जज और वकील वहाँ से निकल सकें, लेकिन देखा यह गया है कि वहाँ से निकले ज़्यादातर छात्र कॉर्पोरेट जगत में चले जाते हैं । अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के छात्र भी बजाय जज बनने के प्रैक्टिस करना पसंद करते हैं । जजों की चुनाव प्रक्रिया में कई ख़ामियाँ हैं जिन्हें दूर किया जाना ज़रूरी है, ताकि हर स्तर पर बेहतर गुणवत्ता के जज मिल सकें ।
(क) गद्यांश को पढ़कर उचित शीर्षक लिखिए । (1)
(ख) आजकल न्यायपालिका पर उँगली क्यों उठाई जा रही है ? (1)
(ग) कुछ जज अपने आप को सारी सामाजिक मर्यादाओं से ऊपर क्यों मान लेते हैं ? (2)
(घ) जजों को अधिक सतर्क क्यों होना चाहिए ? (2)
(ङ) न्यायपालिका में निचले स्तर पर अच्छे जज क्यों नहीं मिलते ? (2)
(च) नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के अनेक अच्छे छात्र जज बनना क्यों नहीं चाहते हैं ? (2)
(छ) वी.आई.पी. संस्कृति की धारणा किस प्रकार सामाजिक अराजकता और ग़ैर-बराबरी को बढ़ावा देती है ? (2)

Solution

(क) **शीर्षक** – 'न्यायपालिका की चुनौतियाँ और वी.आई.पी. संस्कृति' (अन्य उपयुक्त – 'न्यायपालिका और समाज', 'न्यायपालिका में गुणवत्ता का प्रश्न') ।
(ख) महिलाओं की मर्यादा और उनसे दुर्व्यवहार के मामलों में स्वयं न्यायपालिका (कुछ जजों) के आचरण पर प्रश्न उठने के कारण उस पर उँगली उठाई जा रही है ।
(ग) जज भी समाज के अंग हैं और समाज में वी.आई.पी. संस्कृति का छद्म सिद्धांत चलता है कि महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को सामान्य नियम-क़ानून नहीं मानने होते । छोटे शहरों-कस्बों में जज भी बड़ी हैसियत वाले लोगों में गिने जाते हैं, इसलिए कुछ जज स्वयं को सामाजिक

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 102 of 122

मर्यादाओं से ऊपर मान लेते हैं ।
(घ) क्योंकि जो व्यक्ति जितने ज़िम्मेदार पद पर होता है, उस पर क़ानून के पालन की ज़िम्मेदारी भी उतनी ही अधिक होती है । जजों पर क़ानून की रक्षा करने और दूसरों से उसका पालन कराने का दायित्व है, इसलिए उन्हें इस मामले में बहुत सतर्क रहना चाहिए ।
(ङ) क्योंकि अच्छे न्यायिक शिक्षा संस्थानों से निकले अच्छे छात्र न्यायपालिका में नौकरी करना पसंद नहीं करते; उन्हें वहाँ कामकाज की परिस्थितियाँ और आमदनी आकर्षक नहीं लगतीं । साथ ही जजों की चुनाव-प्रक्रिया में भी ख़ामियाँ हैं ।
(च) उन्हें न्यायपालिका की कामकाज की परिस्थितियाँ और आमदनी आकर्षक नहीं लगतीं; इसलिए नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट के अधिकांश छात्र कॉर्पोरेट जगत में चले जाते हैं और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के छात्र जज बनने की जगह वकालत (प्रैक्टिस) करना पसंद करते हैं ।
(छ) वी.आई.पी. संस्कृति का छद्म सिद्धांत यह है कि महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को नियम-क़ानून नहीं पालने होते और क़ानून तोड़ना हैसियत का प्रतीक बन जाता है । इससे क़ानून सबके लिए समान नहीं रहता; कुछ लोग विशेषाधिकार पा जाते हैं और आम आदमी नियमों में बँधा रहता है, जिससे अराजकता (क़ानून की अवहेलना) और ग़ैर-बराबरी बढ़ती है ।

CBSE 2019 · 2/3/1 · Q1 | CBSE 2019 · 2/3/2 · Q1 **asked 2 times** **12 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह एक विलक्षणता है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है – उतनी बार नयापन उभरता है, इसका आकर्षण कभी नहीं चूकता । इसकी समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती, यह समय के छोटे-छोटे हिस्से में भी घटित होती है । इसके बावजूद इसमें ऐसा भी तत्त्व है जो कभी नहीं बदलता । वह समय की गति को लाँघ जाता है, शाश्वतता और समकालीनता की यही संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान है । भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है । लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बनाए गए हैं । भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा और मुलतानी जैसे अनेक राग बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के अंचलों में गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनों से निर्मित हुए हैं । इतना ही नहीं, प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं । कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है । लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है । प्रकृति में अपना छंद है, लय है । स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से राग की प्रकृति और उसे प्रसूत करने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय नहीं कर लिया जाता ।

संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल एक-दूसरे से मिलते हैं उसे सम कहते हैं । लय है प्रकृति की विभिन्नता – सामयिकता और ताल है एकत्व – शाश्वतता । इन दोनों के मिलन से संस्कृति बनती है । संस्कृति न तो प्रकृति की यथास्थिति की स्वीकृति है, न विद्रोह । यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है । "प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन विकृति है और सामाजिक मंगल की दृष्टि से उनका संयोजन संस्कृति है ।"
(क) गद्यांश को पढ़कर उपयुक्त शीर्षक लिखिए । (1)
(ख) भारतीय शास्त्रीय संगीत की विलक्षणता क्या है ? (1)
(ग) रागों की निर्मितियाँ कैसे हुई हैं ? (2)
(घ) स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया से लेखक का क्या तात्पर्य है ? (2)
(ङ) 'सम' क्या है और इसका संगीत में क्या महत्त्व है ? (2)
(च) भारतीय शास्त्रीय संगीत और प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध क्या है ? (2)
(छ) संस्कृति कैसे बनती है ? समाज से इसका क्या संबंध है ? (2)

Solution

(क) **शीर्षक** – 'भारतीय शास्त्रीय संगीत : लोक, प्रकृति और संस्कृति' (अन्य उपयुक्त – 'राग और संस्कृति', 'संगीत में शाश्वतता और समकालीनता') ।
(ख) विलक्षणता यह है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है, उतनी बार उसमें नयापन उभरता है और उसका आकर्षण कभी कम नहीं होता; साथ ही उसमें समकालीनता के साथ ऐसा शाश्वत तत्त्व भी है जो कभी नहीं बदलता ।
(ग) अनेक राग लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर बने हैं – जैसे भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा, मुलतानी, जो बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के लोकगीतों की धुनों से बने । इसके अतिरिक्त प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं ।
(घ) स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया का तात्पर्य है लोकगीतों की धुनों और प्रकृति के स्वरों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर रागों का रूप देना । यह प्रक्रिया तब पूरी होती है जब प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समन्वयकारी दृष्टि द्वारा राग की प्रकृति और उसे जन्म देने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध निश्चित हो जाता है ।
(ङ) संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल मिलते हैं, उसे 'सम' कहते हैं । लय प्रकृति की विभिन्नता (सामयिकता) है और ताल एकत्व

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 103 of 122

(शाश्वतता); इनके मिलन-बिंदु 'सम' पर ही संगीत की पूर्णता, संतुलन और सौंदर्य प्रकट होता है तथा इसी से संस्कृति बनती है ।
(च) भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार लोकगीत हैं और लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है । प्रकृति के अपने छंद और लय हैं, उन्हीं की अनुभूति से राग की प्रकृति निर्मित होती है; अतः संगीत और प्रकृति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं ।
(छ) संस्कृति लय (विभिन्नता) और ताल (एकत्व) के मिलन से बनती है; यह प्रकृति की यथास्थिति की स्वीकृति भी नहीं और विद्रोह भी नहीं, बल्कि विभिन्नता में संस्कार द्वारा प्राप्त एकत्व है । समाज से संबंध यह है कि सामाजिक मंगल की दृष्टि से प्राकृतिक शक्तियों का संयोजन ही संस्कृति कहलाता है, जबकि मनमाना संयोजन विकृति है ।

CBSE 2019 · 2/3/3 · Q1 — **12 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (12)
भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह एक विलक्षणता है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है – उतनी बार नयापन उभरता है, इसका आकर्षण कभी नहीं चूकता । इसकी समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती, यह समय के छोटे-छोटे हिस्से में भी घटित होती है । इसके बावजूद इसमें ऐसा भी तत्त्व है जो कभी नहीं बदलता । वह समय की गति को लाँघ जाता है, शाश्वतता और समकालीनता की यही संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान है । भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है । लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बनाए गए हैं । भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा और मुलतानी जैसे अनेक राग बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के अंचलों में गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनों से निर्मित हुए हैं । इतना ही नहीं, प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं । कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है । लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है । प्रकृति में अपना छंद है, लय है । स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से राग की प्रकृति और उसे प्रसूत करने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय नहीं कर लिया जाता ।
संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल एक-दूसरे से मिलते हैं उसे सम कहते हैं । लय है प्रकृति की विभिन्नता – सामयिकता और ताल है एकत्व – शाश्वतता । इन दोनों के मिलन से संस्कृति बनती है । संस्कृति न तो प्रकृति की यथास्थिति की स्वीकृति है, न विद्रोह । यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है । "प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन विकृति है और सामाजिक मंगल की दृष्टि से उनका संयोजन संस्कृति है ।"
(क) गद्यांश को पढ़कर उपयुक्त शीर्षक लिखिए । (1)
(ख) भारतीय शास्त्रीय संगीत की विलक्षणता क्या है ? (1)
(ग) रागों की निर्मितियाँ कैसे हुई हैं ? (2)
(घ) स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया से लेखक का क्या तात्पर्य है ? (2)
(ङ) 'सम' क्या है और इसका संगीत में क्या महत्त्व है ? (2)
(च) भारतीय शास्त्रीय संगीत और प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध क्या है ? (2)
(छ) संस्कृति कैसे बनती है ? समाज से इसका क्या संबंध है ? (2)

Solution

(क) शीर्षक : 'शास्त्रीय संगीत, प्रकृति और संस्कृति' (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी मान्य) । (1)
(ख) विलक्षणता यह है कि एक ही राग जितनी बार प्रस्तुत होता है, उतनी बार उसमें नयापन उभरता है और उसका आकर्षण कभी कम नहीं होता । (1)
(ग) (1) लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बने हैं, जैसे भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा, मुलतानी । (2) प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मिति हुई है । (2)
(घ) प्रकृति के छंदों (लय) की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से स्वरों को माँजना और राग की प्रकृति तथा उसे जन्म देने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय करना ही स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया है । जब तक यह संबंध तय नहीं होता, यह प्रक्रिया पूरी नहीं मानी जाती । (2)
(ङ) संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल मिलते हैं, उसे 'सम' कहते हैं । लय (प्रकृति की विभिन्नता) और ताल (एकत्व) का यह मिलन संगीत की पूर्णता और संतुलन का बिंदु है, और इसी मिलन से संस्कृति की अवधारणा बनती है । (2)
(च) लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है; प्रकृति में अपना छंद और लय है । लोकगीतों की धुनों और प्रकृति के स्वरों से ही राग बने हैं, इसलिए राग की प्रकृति और उसे प्रसूत करने वाली प्रकृति के बीच गहरा अंतर्संबंध है । (2)
(छ) लय (प्रकृति की विभिन्नता) और ताल (एकत्व) के मिलन से संस्कृति बनती है; यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 104 of 122

समाज से संबंध यह है कि प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन विकृति है, जबकि सामाजिक मंगल की दृष्टि से किया गया संयोजन संस्कृति है । (2)

CBSE 2019 · 2/4/1 · Q1 | CBSE 2019 · 2/4/2 · Q1 | CBSE 2019 · 2/4/3 · Q1 **asked 3 times** **12 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (12)

जीवन दो ढंग से जिया जा सकता है – औरों की सुनकर या अपनी सुनकर । जीवन या तो अनुकरण होता है या स्वस्फूर्त । या तो भीतर की रोशनी से कोई चलता है या उधार की ।

जो उधार जीता है, व्यर्थ जीता है क्योंकि जो उधार जीता है उसका जीवन थोथा होगा, मिथ्या होगा, ऊपर-ऊपर होगा, लिपा-पुता होगा । जो व्यक्ति स्वस्फूर्त जीवन जीता है, उसके जीवन में सत्य की संभावना है ।

अनुकरण धर्म नहीं है, यद्यपि वही धर्म बनकर मनुष्य की छाती पर बैठ गया है । सारी पृथ्वी उन लोगों से भरी है, जो दूसरों का अनुकरण कर रहे हैं । उन्हें पता नहीं; सत्य क्या है ? परमात्मा क्या है ? न कभी पूछा, न कभी जिज्ञासा की । अन्वेषण के लिए श्रद्धा चाहिए, स्वयं पर श्रद्धा चाहिए ।

धर्म के नाम पर हमें दूसरों पर श्रद्धा करने के लिए सिखाया जा रहा है । स्वयं पर श्रद्धा ही धर्म है । लेकिन स्वयं पर श्रद्धा अग्नि से गुज़रने जैसी है । स्वयं पर श्रद्धा पाने के लिए पहला कदम नास्तिकता है, आस्तिकता नहीं ।

दूसरे का अनुकरण सस्ता है, सुगम है । न कहीं जाना है, न कुछ खोजना है, न कुछ दाँव पर लगाना है । बस, बासी बातों को मान लेना है । भीड़ जो कहे उसको स्वीकार कर लेना है ।

प्रभाव से जो जीता है, वह जीता ही नहीं है । सारी दुनिया करीब-करीब प्रभाव से जीती है । तुम जिसके प्रभाव में पड़ गए, उसके ही रंग में रंग जाते हो । तुम्हारी कोई निजता नहीं है । तुम्हारा अपने भीतर कोई स्वयं का बोध नहीं है कि तुम सोचो, विचारो, विमर्श करो, निर्णय लो ।

कर्म तुम्हें बाँधेगा, अगर अनासक्त न हो । और कर्म अनासक्त तभी होता है जब ध्यान से आविर्भूत होता है और ध्यान अनुकरण नहीं है । ध्यान स्वभाव में ठहर जाने का नाम है । ध्यान स्वभाव में रम जाने का नाम है । तुम्हारा ज्ञान भी तभी तुम्हारा ज्ञान होगा, जब तुम्हारे भीतर से जगेगा । अगर किसी को स्वभाव की तलाश करनी हो तो जो दूसरों ने सिखाया हो, उस सबको विदा कर दो । उसमें कई बातें बड़ी हीरे जवाहरात जैसी लगेंगी, दिल करेगा कि बचा लें । मगर जो उधार है वह हीरा भी हो तो भी नकली है ।

(क) जीवन जीने के ढंग से आप क्या समझते हैं ? इसके क्या-क्या ढंग बताए गए हैं ? (2)

(ख) जो उधार जीता है व्यर्थ जीता है – कैसे ? (2)

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए : "प्रभाव से जो जीता है, वह जीता ही नहीं है ।" (2)

(घ) अन्वेषण और अनुकरण में क्या अंतर है ? (2)

(ङ) लेखक निजता को महत्त्वपूर्ण क्यों मानता है ? (2)

(च) कर्म कब बाँधता है ? (1)

(छ) गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए । (1)

Solution

(क) जीवन जीने के ढंग से आशय है कि मनुष्य किस प्रकार अपना जीवन जीता है, किसके कहने और किस आधार पर चलता है । लेखक ने दो ढंग बताए हैं : औरों की सुनकर जीना, यानी अनुकरण या उधार का जीवन; और अपनी सुनकर जीना, यानी स्वस्फूर्त जीवन, जो भीतर की रोशनी से चलता है । (2)

(ख) उधार का जीवन दूसरों की नकल होता है; इसलिए वह थोथा, मिथ्या, ऊपरी और लिपा-पुता होता है, उसमें अपना कुछ नहीं होता । ऐसे व्यक्ति के जीवन में सत्य की संभावना नहीं रहती, इसलिए उसका जीना व्यर्थ है । (2)

(ग) जो व्यक्ति दूसरों के प्रभाव में आकर उन्हीं के रंग में रंग जाता है, उसकी अपनी कोई पहचान, सोच या निर्णय-क्षमता नहीं रहती । उसका जीवन दूसरों का प्रतिबिंब मात्र होता है, इसलिए वह वास्तव में जीता ही नहीं । (2)

(घ) अन्वेषण का अर्थ है स्वयं खोजना, जिसके लिए जिज्ञासा, परिश्रम और स्वयं पर श्रद्धा चाहिए; यह कठिन है । अनुकरण का अर्थ दूसरों की बासी बातों को मान लेना है, जो सस्ता और सुगम है, उसमें न खोजना है, न कुछ दाँव पर लगाना है । (2)

(ङ) लेखक के अनुसार निजता यानी स्वयं का बोध ही सोचने, विचारने, विमर्श करने और निर्णय लेने की शक्ति देता है । उसके बिना व्यक्ति दूसरों की छाया बनकर रह जाता है, सत्य और स्वभाव तक नहीं पहुँचता, इसलिए निजता महत्त्वपूर्ण है । (2)

(च) कर्म तब बाँधता है जब वह अनासक्त न हो, अर्थात् जब ध्यान से उपजा न होकर आसक्ति और अनुकरण से किया जाए । (1)

(छ) शीर्षक : 'स्वस्फूर्त जीवन' अथवा 'अनुकरण नहीं, निजता' (कोई भी उपयुक्त शीर्षक) । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 105 of 122

CBSE 2019 · 2/5/1 · Q1 | CBSE 2019 · 2/5/2 · Q1 | CBSE 2019 · 2/5/3 · Q1 asked 3 times 12 marks

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (12)

यह देश सहज ही आध्यात्मिक है और गांधीजी गहरे अर्थों में आध्यात्मिक थे । एक महान भारतीय आत्मा कैसी हो सकती है, उसके प्रमाण हैं, गांधीजी । वे देश को आज़ाद कराना चाहते थे । आज़ादी भी वे ठीक-ठाक तौर-तरीकों से चाहते थे । उन्हें देश के आखिरी आदमी तक की चिंता सताती थी । उनके लिए साधन और साध्य की पवित्रता के बिना जीने का कोई अर्थ नहीं था ।

आज़ादी के आसपास महात्मा जब भी दिल्ली में होते थे, तो यहीं प्रार्थना सभा करते थे । वह एक अर्थ में सर्वधर्म-प्रार्थना सभा होती थी । प्रार्थना सभा के बाद उनका प्रवचन होता था । इन प्रवचनों में गांधीजी अपने दिल की बात किया करते थे । वे सप्ताह में एक दिन सोमवार को मौन रखते थे । उस दिन उनकी बात लिखकर होती थी । उसे कोई और पढ़कर सुनाता था । वह दौर था, जब शाम के पाँच बजे ऐसा लगता था, मानो मंदिर में आरती का समय हो । अपने महात्मा के साथ प्रार्थना करने और उन्हें सुनने के लिए अच्छे-खासे लोग जुटते थे ।

गांधीजी अकसर कहते थे कि प्रार्थना झाड़ू की तरह है जिसका अर्थ है हमारी आत्मा की शुद्धि । वे लगातार अपने को सुधारते रहे । लोगों को सुधारने के लिए ज़ोर देते रहे । शायद इसीलिए उनके लिए आज़ादी का आंदोलन गुलाम देश की जकड़न को खत्म करने का नहीं था । अपने में तमाम सुधारों का आंदोलन था, ताकि हम अच्छे आदमी बन सकें और एक अच्छा समाज बना सकें ।

आज़ादी के साथ आए बँटवारे के संकट ने उन्हें झकझोर दिया था । उनकी प्रार्थना सभा में उसका प्रभाव दिख ही जाता था । वे प्रायः कहते थे, 'मैं रोज आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि ये हिंसा समाप्त हो । मैं नए हिन्दुस्तान के लिए प्रार्थना करता हूँ' ।

(क) गांधीजी को महान भारतीय आत्मा क्यों कहा गया है ? (2)

(ख) गांधीजी की प्रार्थना सभा को 'सर्वधर्म प्रार्थना सभा' क्यों कहा गया ? स्पष्ट कीजिए । (2)

(ग) गांधीजी प्रार्थना सभा के बाद प्रवचन क्यों करते थे ? (2)

(घ) गांधीजी का आंदोलन अपने आप में सुधारों का आंदोलन था – कैसे ? (2)

(ङ) गांधीजी को किस घटना ने झकझोर दिया और क्यों ? (2)

(च) गद्यांश में प्रार्थना की तुलना किससे की गई है ? (1)

(छ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए । (1)

Solution

(क) गांधीजी गहरे अर्थों में आध्यात्मिक थे । वे देश को आज़ाद तो कराना चाहते थे, पर ठीक-ठाक (पवित्र) तौर-तरीकों से; उन्हें देश के आखिरी आदमी तक की चिंता रहती थी और साधन-साध्य की पवित्रता उनके लिए सर्वोपरि थी । इन गुणों के कारण उन्हें महान भारतीय आत्मा कहा गया । (2)

(ख) उनकी प्रार्थना सभा में किसी एक धर्म तक सीमित प्रार्थना नहीं होती थी; सभी धर्मों के लोग उसमें शामिल होते और सभी धर्मों की प्रार्थनाएँ की जाती थीं । इसलिए वह सर्वधर्म प्रार्थना सभा थी । (2)

(ग) गांधीजी प्रवचनों में अपने दिल की बात कहा करते थे । वे लोगों से सीधा संवाद करके उन्हें सुधार के लिए प्रेरित करना और अपने विचार, आशा तथा प्रार्थना (जैसे हिंसा समाप्त हो) उन तक पहुँचाना चाहते थे । (2)

(घ) गांधीजी के लिए आज़ादी का आंदोलन केवल गुलामी की जकड़न तोड़ना नहीं था; वे स्वयं को और लोगों को लगातार सुधारने पर ज़ोर देते थे, ताकि हम अच्छे आदमी और अच्छा समाज बना सकें । इसलिए वह तमाम सुधारों का आंदोलन था । (2)

(ङ) आज़ादी के साथ आए देश के बँटवारे के संकट और उससे फैली हिंसा ने उन्हें झकझोर दिया, क्योंकि वे अहिंसा और एकता के पक्षधर थे और नए हिंदुस्तान के लिए शांति की प्रार्थना करते थे । (2)

(च) प्रार्थना की तुलना झाड़ू से की गई है, जो आत्मा की शुद्धि करती है । (1)

(छ) शीर्षक : 'आध्यात्मिक महात्मा गांधी' अथवा 'गांधीजी की प्रार्थना सभा' (कोई भी उपयुक्त शीर्षक) । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 106 of 122

15 marks: long answer

CBSE 2018 · 2/1 · Q1 | CBSE 2018 · 2/2 · Q2 | CBSE 2018 · 2/3 · Q1 **asked 3 times** **15 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20 – 30 शब्दों में लिखिए :
हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं । उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती । संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है ? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें । संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे ।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं । सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया ? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए ? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है । शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा ?
(क) भाषा व्यवसायी से क्या अभिप्राय है ? उनकी पोल कब खुलने लगती है ? (2)
(ख) संविधान में 'संघ' से आप क्या समझते हैं ? हिन्दी भाषा को लेकर संघ का क्या कर्तव्य बताया गया है ? (2)
(ग) हिन्दी भाषा के विकास की आवश्यकता क्यों है ? (2)
(घ) भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का क्या तात्पर्य है ? यहाँ उनका उल्लेख क्यों हुआ है ? (2)
(ङ) 'अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता' से क्या तात्पर्य है ? उसका क्या परिणाम हो रहा है ? (2)
(च) यह कैसे कह सकते हैं कि हमारी अपनी भाषा का भविष्य संकट में है ? (2)
(छ) हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से आप क्या समझते हैं ? यह कैसे संभव हो सकता है ? (2)
(ज) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

Solution

(क) भाषा के मुद्दे से लाभ उठाने वाले, राजनीतिक सोच रखने वाले लोग 'भाषा व्यवसायी' हैं । हिन्दी के पक्ष या विरोध में जब कोई हलचल होती है, तब उनका असली चेहरा सामने आने लगता है, अर्थात् उनकी पोल खुलने लगती है ।
(ख) संविधान में 'संघ' का अर्थ भारत गणतंत्र अर्थात् भारत सरकार है । संघ का कर्तव्य है कि वह हिन्दी का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ।
(ग) हिन्दी के विकास की आवश्यकता इसलिए है कि हम अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता से उबर सकें, अपनी भाषा की अस्मिता को बचा सकें और उसके सामने खड़े भविष्य के संकट से उसे उबार सकें ।
(घ) अन्य भाषाओं से तात्पर्य हिन्दी के अतिरिक्त उन भाषाओं से है जो संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित हैं । उनका उल्लेख इसलिए हुआ है कि हिन्दी उनके रूप, शैली, पदों और शब्द-भंडार को आत्मसात् करके समृद्ध हो ।
(ङ) अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता का तात्पर्य है अंग्रेज़ी और उसका प्रयोग करने वालों को अधिक महत्त्व देना, यानी मानसिक गुलामी । इसका परिणाम यह है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का भविष्य और अस्मिता संकट में पड़ रही है ।
(च) क्योंकि शिक्षा, व्यापार, सरकारी कार्यालयों, संसद और न्यायालयों तथा व्यवहार में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को महत्त्व नहीं मिल पा रहा है और युवा पीढ़ी पर अंग्रेज़ी की मानसिकता हावी है ।
(छ) वर्चस्व का अर्थ है इन भाषाओं का सर्वोपरि स्थान और अधिक प्रयोग । यह तभी संभव है जब शिक्षा, व्यापार, प्रशासन और दैनिक व्यवहार में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए और उन्हें बढ़ावा दिया जाए ।
(ज) **शीर्षक** – 'हिन्दी भाषा' (अन्य उपयुक्त शीर्षक – 'हिन्दी और संवैधानिक संकल्प') ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 107 of 122

CBSE 2017 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2017 · 2/1/2 · Q2 | CBSE 2017 · 2/1/3 · Q1 asked 3 times 15 marks

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'आधुनिक भारतीय भाषाएँ' सुनकर आप इस भ्रम में न पड़ें कि ये सभी 'आज' की देन हैं । ये सभी भाषाएँ अति प्राचीन हैं । अनेक तो सीधे संस्कृत या वैदिक भाषा से जुड़ती हैं । वे इस अर्थ में आधुनिक हैं कि समय के साथ चलकर अतीत से वर्तमान तक पहुँची हैं और जीवंत और विकासशील बनी हुई हैं । उनके आधुनिक होने का एक कारण यह भी है कि आधुनिक विचारों को वहन करने में वे कभी पीछे नहीं रहीं । इनका साहित्य समय की कसौटी पर खरा उतरा है और ये सभी आधुनिक भारत की प्राणवायु हैं ।

किसी भी भाषा का पहला काम होता है दो व्यक्तियों या दो समूहों के बीच संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनना । यह मानव समूहों के बीच सेतु का काम करती है । इसे चाहे प्रकृति की देन मानिए चाहे ईश्वर की, भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है । विभिन्न क्षेत्रों में मानव की समस्त उपलब्धियाँ मूलत: भाषा की देन हैं ।

अब जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है, उसमें उपर्युक्त विशेषताएँ तो हैं ही, साथ ही सबसे निराली विशेषता है उसकी नमनीयता । इसमें स्वाभिमान है, अहंकार नहीं । हिंदी हर परिस्थिति में अपने आपको उपयोगी बनाए रखना जानती है । यह ज्ञान और शास्त्र की भाषा भी है और लोक की भी, उत्पादक की भी और उपभोक्ता की भी । इसीलिए यह स्वीकार्य भी है ।

(क) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

(ख) 'आधुनिक' विशेषण से हम किस भ्रम में पड़ सकते हैं ? उसे "भ्रम" क्यों कहा गया है ? (2)

(ग) आज की भारतीय भाषाएँ किस अर्थ में आधुनिक हैं ? दो कारणों का उल्लेख कीजिए । (2)

(घ) कोई भाषा किनके बीच पुल बनाने का काम करती है ? कैसे ? (2)

(ङ) हिंदी की निराली विशेषता क्या है ? उसका आशय समझाइए । (2)

(च) हिंदी की स्वीकार्यता के दो कारण स्पष्ट कीजिए । (2)

(छ) 'नमनीयता' से लेखक का क्या आशय है ? (2)

(ज) आशय स्पष्ट कीजिए : 'भाषा से बड़ी कोई देन नहीं है ।' (2)

Solution

(क) 'आधुनिक भाषाएँ : हिंदी भाषा' (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य) । (1)

(ख) 'आधुनिक' शब्द सुनकर हम इस भ्रम में पड़ सकते हैं कि ये भाषाएँ केवल वर्तमान (आज) की देन हैं । इसे भ्रम इसलिए कहा गया है कि वे अति प्राचीन हैं, अनेक तो सीधे संस्कृत या वैदिक भाषा से जुड़ती हैं; उन्हें केवल वर्तमान से जोड़ना सही नहीं है । (1+1)

(ग) (1) वे समय के साथ चलकर अतीत से वर्तमान तक पहुँची हैं और जीवंत तथा विकासशील बनी हुई हैं । (2) वे आधुनिक विचारों को वहन करने में सक्षम हैं, कभी पीछे नहीं रहीं । (1+1)

(घ) भाषा मानव समूहों (दो व्यक्तियों या दो समूहों) के बीच पुल बनाने का काम करती है । वह उनके बीच संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनकर यह काम करती है । (1+1)

(ङ) हिंदी की सबसे निराली विशेषता उसकी नमनीयता (लचीलापन) है । आशय यह है कि उसमें स्वाभिमान तो है, पर अहंकार नहीं; वह हर स्थिति में अपने को उपयोगी बनाए रखती है । (1+1)

(च) (1) वह ज्ञान और शास्त्र की भाषा भी है और लोक की भी, उत्पादक की भी और उपभोक्ता की भी, यानी लोक और शास्त्र दोनों की भाषा है । (2) उसमें भाषा का लचीलापन है, वह हर परिस्थिति के अनुरूप ढल जाती है । (1+1)

(छ) नमनीयता से आशय है – अहंकार-रहित स्वाभिमान का होना और हर परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को बदलने (ढालने) का गुण । (1+1)

(ज) आशय है कि भाषा के द्वारा ही मनुष्यों के बीच आपसी संपर्क संभव होता है और विभिन्न क्षेत्रों में मानव की समस्त उपलब्धियाँ भाषा के कारण ही संभव हुई हैं; इसलिए भाषा मनुष्य को मिली सबसे बड़ी देन है । (1+1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 108 of 122

CBSE 2017 · 2/1 · Q1 | CBSE 2017 · 2/2 · Q2 | CBSE 2017 · 2/3 · Q1 asked 3 times 15 marks

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दबाव में काम करना व्यक्ति के लिए अच्छा है या नहीं, इस बात पर प्राय: बहस होती है । कहा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक दबाव में नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी कर लेता है, जिससे उसे अक्सर कार्य में असफलता प्राप्त होती है । वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो बैठता है । दबाव को यदि ताक़त बना लिया जाए, तो न सिर्फ़ सफलता प्राप्त होती है, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है । ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जब लोगों ने अपने काम के दबाव को अवरोध नहीं, बल्कि ताक़त बना लिया ।

'सुख-दुख, सफलता-असफलता, शान्ति-क्रोध और क्रिया-कर्म हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है ।' जोस सिल्वा इस बात से सहमत होते हुए अपनी पुस्तक यू द हीलर में लिखते हैं कि मन-मस्तिष्क को चलाता है और मस्तिष्क शरीर को । इस तरह शरीर मन के आदेश का पालन करता हुआ काम करता है ।

दबाव में व्यक्ति यदि सकारात्मक होकर काम करे, तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है । दबाव के समय मौज़ूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचा जाए कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं, जो एक कठिन चुनौती को पूरा करने के लिए तत्पर हैं, तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठती हैं । हमारा दिमाग़ जिस चीज़ पर भी अपना ध्यान केंद्रित करने लगता है, वह हमें बढ़ती प्रतीत होती है । यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे, तो वे और बड़ी होती महसूस होंगी । अगर अपनी शक्तियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, तो वे भी बड़ी महसूस होंगी । इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि 'जीतना एक आदत है, पर अफ़सोस ! हारना भी आदत ही है ।'

(क) दबाव में काम करने के नकारात्मक प्रभाव समझाइए । (2)

(ख) दबाव हमारी सफलता का कारण कब और कैसे बन सकता है ? (2)

(ग) दबाव में सकारात्मक सोच क्या हो सकती है ? स्पष्ट कीजिए । (2)

(घ) काम करने की प्रक्रिया में मन, मस्तिष्क और शरीर के संबंध को अपने शब्दों में समझाइए । (2)

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए : 'जीतना एक आदत है, पर अफ़सोस ! हारना भी आदत ही है ।' (2)

(च) गद्यांश के केंद्रीय भाव को लगभग 20 शब्दों में लिखिए । (2)

(छ) अपनी क्षमताओं को जगाने में या समस्याओं को बड़ा महसूस करने में हमारी सोच की क्या भूमिका है ? (2)

(ज) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

Solution

(क) अत्यधिक दबाव में व्यक्ति नकारात्मक भावों से घिर जाता है, जिससे उसे कार्य में असफलता मिलती है । साथ ही उसका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है । (1+1)

(ख) जब हम दबाव को अवरोध नहीं, बल्कि ताक़त बना लेते हैं, तब वह सफलता का कारण बनता है । तब व्यक्ति सकारात्मक होकर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है और कामयाबी के नए मापदंड रचता है । (1+1)

(ग) दबाव में समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और बोझ महसूस करने की जगह यह सोचना कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें एक कठिन चुनौती पूरी करने का अवसर मिला है, यही सकारात्मक सोच है । ऐसे में हम काम को बोझ नहीं, चुनौती मानकर स्वीकार करते हैं । (1+1)

(घ) मन मस्तिष्क को चलाता है और मस्तिष्क शरीर को । अर्थात् मन जैसा सोचता है, मस्तिष्क वैसा निर्देश देता है और शरीर मन के उसी आदेश का पालन करते हुए काम करता है । (1+1)

(ङ) जीत प्रबल इच्छाशक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जो अभ्यास से आदत बन जाती है; उसी प्रकार हार प्रयासहीनता और नकारात्मक सोच का परिणाम है और वह भी आदत बन जाती है । इसलिए हमें जीतने की आदत डालनी चाहिए । (1+1)

(च) दबाव में नकारात्मक सोच असफलता और रोग देती है, जबकि उसे ताक़त बनाकर सकारात्मक सोच से काम करें तो हमारी क्षमताएँ जागती हैं और सफलता मिलती है । (2)

(छ) हमारी सोच ही दोनों के लिए उत्तरदायी है । सकारात्मक सोच हमारी क्षमताओं और शक्तियों को जगाकर बड़ा बनाती है, जबकि नकारात्मक सोच हमारी समस्याओं को और बड़ा बना देती है; सोच के अनुरूप ही फल मिलता है । (2)

(ज) 'मानसिक दबाव : एक ताकत' (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य : 'दबाव में सकारात्मक सोच') । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 109 of 122

CBSE 2017 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2017 · 2/2/3 · Q1 **asked 2 times** **15 marks**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कविता और संगीत में बहुत साम्य है । महाकवि मिल्टन ने, जो स्वयं संगीत का बहुत प्रेमी था, इन दोनों कलाओं को एक-दूसरे की बहन बताया है । कविता और संगीत दोनों गतिशील कलाएँ हैं । ये दोनों स्थिर रूप में एक बार ही ग्रहण नहीं की जातीं । प्रत्येक पंक्ति के साथ कविता का और स्वर के प्रत्येक आरोह और अवरोह के साथ संगीत का प्रभाव आगे बढ़ता है । एक चित्र को हम एक ओर से दूसरी ओर, दाहिने से बाएँ और ऊपर से नीचे जिस प्रकार चाहें देखकर एक-सा आनंद उठा सकते हैं, पर कविता और संगीत में गति आगे की ओर बढ़ती है, इससे आगे से पीछे लौटकर उलटी रीति से इन कलाओं का आनंद हम नहीं उठा सकते । फिर, कविता और संगीत दोनों ही ध्वनि और लय का उपयोग करते हैं, यद्यपि कविता की अपेक्षा संगीत में उनका कहीं अच्छा उपयोग होता है । इसका कारण यह है कि संगीत में केवल स्वर ही प्रयुक्त किए जाते हैं और इसलिए उसका माध्यम कहीं अधिक लचीला है । कविता में स्वर वर्णों के साथ व्यंजन मिलकर उसके माध्यम को कम लचीला बना देते हैं । दूसरी ओर कविता की विशेषता यह है कि शब्दों की सहायता से वह भावों को अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकती है । संगीत जिस भाव को केवल स्वरों के संकेत मात्र से अवगत कराएगा, कविता उसे रूप देकर सामने खड़ा कर देने में समर्थ होती है । दूसरी बात यह है कि संगीत की अपेक्षा कविता का क्षेत्र कहीं अधिक विस्तृत है । संगीत कुछ भाव, कुछ मानसिक परिस्थितियों को ही प्रकट कर सकता है । संगीत द्वारा हर्ष, करुणा और विषाद की बड़ी अच्छी अभिव्यक्ति हो सकती है, किंतु बाह्य जगत् के चित्रण में संगीत का कोई हाथ नहीं । संगीत द्वारा हम किसी युद्ध-घटना का वर्णन नहीं कर सकते । कविता बाह्य और अंतर दोनों परिस्थितियों को प्रकट करने में समर्थ है । कविता के द्वारा कवि घटनाओं और पदार्थों का वर्णन उसी सुगमता से कर सकता है; जैसे – सुख, दुख, हर्ष, विस्मय, विषाद आदि भावों का ।

(क) कविता और संगीत को गतिशील कलाएँ क्यों कहा है ? (2)

(ख) कविता और संगीत की दो असमानताओं का उल्लेख कीजिए । (2)

(ग) किस माध्यम के द्वारा युद्ध और पदार्थ तथा सुख-दुख दोनों ही कला हो सकते हैं ? दूसरा माध्यम ऐसा क्यों नहीं कर पाता ? (2)

(घ) संगीत की अभिव्यक्ति की सीमाएँ क्या हैं ? (2)

(ङ) चित्र का आनंद उठाने में और कविता-संगीत का आनंद उठाने में क्या अंतर है ? (2)

(च) स्वरों और व्यंजनों के उपयोग में संगीत और कविता में क्या अंतर है ? (2)

(छ) आशय स्पष्ट कीजिए : "बाह्य जगत् के चित्रण में संगीत का कोई हाथ नहीं ।" (2)

(ज) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

Solution

(क) क्योंकि ये दोनों कलाएँ स्थिर नहीं हैं और एक ही बार में ग्रहण नहीं की जा सकतीं । प्रत्येक पंक्ति के साथ कविता का और स्वर के प्रत्येक आरोह-अवरोह के साथ संगीत का प्रभाव आगे बढ़ता जाता है । (1+1)

(ख) (1) कविता का क्षेत्र विस्तृत है, जबकि संगीत का सीमित । (2) कविता का माध्यम अपेक्षाकृत कम लचीला है, जबकि संगीत का अत्यंत लचीला । (3) कविता में बाह्य जगत का चित्रण संभव है, जबकि संगीत में नहीं । (कोई दो बिंदु) (1+1)

(ग) कविता के माध्यम द्वारा । दूसरा माध्यम (संगीत) ऐसा इसलिए नहीं कर पाता कि वह बाह्य जगत का चित्रण नहीं कर सकता और दृश्य-बिंब उपस्थित नहीं कर पाता । (1+1)

(घ) संगीत बाहरी जगत के चित्रण में सक्षम नहीं है; वह कुछ भाव और मानसिक परिस्थितियों को ही प्रकट कर सकता है । (1+1)

(ङ) चित्र का आनंद किसी भी कोण (दिशा) से देखकर उठाया जा सकता है, जबकि कविता और संगीत का आनंद केवल उनकी गतिशीलता में निहित है – उन्हें आगे से पीछे लौटकर उलटे क्रम में नहीं भोगा जा सकता । (1+1)

(च) संगीत में केवल स्वर होते हैं, इसलिए वह अधिक लचीला है और भावाभिव्यक्ति सीमित होने पर भी उसमें लचीलापन अधिक है; कविता में स्वर के साथ व्यंजन मिलने से उसका माध्यम कम लचीला हो जाता है । (1+1)

(छ) संगीत द्वारा भावों को केवल सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है; उससे युद्ध-घटनाओं जैसे बाहरी दृश्यों और पदार्थों का वर्णन संभव नहीं, अर्थात् बाह्य जगत के चित्रण में संगीत असमर्थ है । (1+1)

(ज) 'कविता और संगीत' (अन्य सटीक शीर्षक भी स्वीकार्य) । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 110 of 122

CBSE 2017 · 2/2/2 · Q2 — 15 marks

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कविता और संगीत में बहुत साम्य है । महाकवि मिल्टन ने, जो स्वयं संगीत का बहुत प्रेमी था, इन दोनों कलाओं को एक-दूसरे की बहन बताया है । कविता और संगीत दोनों गतिशील कलाएँ हैं । ये दोनों स्थिर रूप में एक बार ही ग्रहण नहीं की जातीं । प्रत्येक पंक्ति के साथ कविता का और स्वर के प्रत्येक आरोह और अवरोह के साथ संगीत का प्रभाव आगे बढ़ता है । एक चित्र को हम एक ओर से दूसरी ओर, दाहिने से बाएँ और ऊपर से नीचे जिस प्रकार चाहें देखकर एक-सा आनंद उठा सकते हैं, पर कविता और संगीत में गति आगे की ओर बढ़ती है, इससे आगे से पीछे लौटकर उलटी रीति से इन कलाओं का आनंद हम नहीं उठा सकते । फिर, कविता और संगीत दोनों ही ध्वनि और लय का उपयोग करते हैं, यद्यपि कविता की अपेक्षा संगीत में उनका कहीं अच्छा उपयोग होता है । इसका कारण यह है कि संगीत में केवल स्वर ही प्रयुक्त किए जाते हैं और इसलिए उसका माध्यम कहीं अधिक लचीला है । कविता में स्वर वर्णों के साथ व्यंजन मिलकर उसके माध्यम को कम लचीला बना देते हैं । दूसरी ओर कविता की विशेषता यह है कि शब्दों की सहायता से वह भावों को अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकती है । संगीत जिस भाव को केवल स्वरों के संकेत मात्र से अवगत कराएगा, कविता उसे रूप देकर सामने खड़ा कर देने में समर्थ होती है । दूसरी बात यह है कि संगीत की अपेक्षा कविता का क्षेत्र कहीं अधिक विस्तृत है । संगीत कुछ भाव, कुछ मानसिक परिस्थितियों को ही प्रकट कर सकता है । संगीत द्वारा हर्ष, करुणा और विषाद की बड़ी अच्छी अभिव्यक्ति हो सकती है, किंतु बाह्य जगत के चित्रण में संगीत का कोई हाथ नहीं । संगीत द्वारा हम किसी युद्ध-घटना का वर्णन नहीं कर सकते । कविता बाह्य और अंतर दोनों परिस्थितियों को प्रकट करने में समर्थ है । कविता के द्वारा कवि घटनाओं और पदार्थों का वर्णन उसी सुगमता से कर सकता है; जैसे – सुख, दुख, हर्ष, विस्मय, विषाद आदि भावों का ।

(क) कविता और संगीत को गतिशील कलाएँ क्यों कहा है ? (2)

(ख) कविता और संगीत की दो असमानताओं का उल्लेख कीजिए । (2)

(ग) किस माध्यम के द्वारा युद्ध और पदार्थ तथा सुख-दुख दोनों ही कला हो सकते हैं ? दूसरा माध्यम ऐसा क्यों नहीं कर पाता ? (2)

(घ) संगीत की अभिव्यक्ति की सीमाएँ क्या हैं ? (2)

(ङ) चित्र का आनंद उठाने में और कविता-संगीत का आनंद उठाने में क्या अंतर है ? (2)

(च) स्वरों और व्यंजनों के उपयोग में संगीत और कविता में क्या अंतर है ? (2)

(छ) आशय स्पष्ट कीजिए : "बाह्य जगत् के चित्रण में संगीत का कोई हाथ नहीं ।" (2)

(ज) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

Solution

(क) क्योंकि ये दोनों स्थिर रूप में एक बार में ग्रहण नहीं की जा सकतीं; कविता की हर पंक्ति और संगीत के हर आरोह-अवरोह के साथ उनका प्रभाव आगे बढ़ता जाता है ।

(ख) (1) कविता का क्षेत्र विस्तृत है, संगीत का सीमित; (2) संगीत का माध्यम (केवल स्वर) अधिक लचीला है, कविता का (स्वर के साथ व्यंजन) कम लचीला; (3) कविता बाह्य जगत का चित्रण कर सकती है, संगीत नहीं । (कोई दो)

(ग) कविता के माध्यम से युद्ध और पदार्थ तथा सुख-दुख दोनों की अभिव्यक्ति कला बन सकती है; संगीत ऐसा नहीं कर पाता, क्योंकि वह दृश्य बिंब प्रस्तुत नहीं कर सकता – केवल स्वर-संकेत से कुछ भाव ही दिखा पाता है ।

(घ) संगीत कुछ भावों और मानसिक परिस्थितियों को ही प्रकट कर सकता है; वह बाहरी जगत के चित्रण में समर्थ नहीं है और भावों को केवल सांकेतिक रूप में ही व्यक्त करता है; युद्ध-घटना जैसा वर्णन उसके लिए संभव नहीं ।

(ङ) चित्र का आनंद हम किसी भी कोण से – दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे – देखकर समान रूप से उठा सकते हैं, पर कविता और संगीत का आनंद केवल आगे की ओर बढ़ती गति में ही मिलता है; उन्हें पीछे से उलटकर नहीं सुना या पढ़ा जा सकता ।

(च) संगीत में केवल स्वर प्रयुक्त होते हैं, इसलिए उसका माध्यम अधिक लचीला है; कविता में स्वर के साथ व्यंजन भी मिलते हैं, जिससे उसका माध्यम कम लचीला हो जाता है ।

(छ) आशय है कि संगीत केवल स्वरों के संकेतों से भावों को प्रकट करता है, वह बाहरी वस्तुओं, घटनाओं और दृश्यों (जैसे युद्ध) का वर्णन नहीं कर सकता; यह काम कविता ही कर सकती है ।

(ज) **शीर्षक** – 'कविता और संगीत' (अन्य उपयुक्त शीर्षक – 'कविता और संगीत : साम्य-वैषम्य') ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 111 of 122

CBSE 2016 · 2/1/1 · Q1 | CBSE 2016 · 2/1/2 · Q2 | CBSE 2016 · 2/1/3 · Q1 asked 3 times 15 marks

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रसिद्ध दार्शनिक नीत्शे एक ऐसा देवता तलाश रहे थे जो मनुष्य की पहुँच में हो । उसी की तरह नाच-गा सके । जीवन से भरपूर हो । हँसे-रोए, काम करे-कराए बिलकुल आदमी की तरह । नीत्शे को ऐसा देवता नहीं मिला तो उसने कह दिया, "ईश्वर मर गया है ।" लगता है कि नीत्शे को कृष्ण की जानकारी नहीं थी । वे नाचते-गाते हैं, काम करते हैं और योगी भी हैं – कर्मयोगी । काम करो, बाकी सब भूल जाओ – यह है उनका अनासक्त कर्म । यहाँ तक कि काम के फल की भी इच्छा मत करो – कर्मण्येवाधिकारस्ते । अजीब विरोधाभास है ! काम करने का निराला ढंग है कि काम तो पूरे मन से करो, ईश्वर का आदेश समझकर करो पर उससे परे भी रहो ! काम पूरा होते ही अनासक्त हो जाओ । यों कृष्ण जो भी करते हैं उसमें गजब की आसक्ति दिखाई देती है – चाहे ग्वाले का काम हो, रसिक बिहारी का हो, सारथि का हो, उपदेष्टा या मार्गदर्शक का – वे पूरे मनोयोग से अपनी भूमिका निभाते दिखाई पड़ते हैं और अगले ही क्षण उससे अलग; जैसे कमल-पत्ते पर पड़ा पानी । जीवन का प्रत्येक पल पूरेपन से जीना और चिपकना नहीं – यही अनासक्ति है । उनमें कहीं अधूरापन दिखाई ही नहीं देता । पीछे मुड़ने का उन्हें अवकाश ही नहीं है । यह कृष्ण जैसा कर्मयोगी ही कर सकता है । वे विश्वरूप हैं परंतु अहंकार का कहीं नाम तक नहीं । गाय चराने या रथ हाँकने का काम करने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं ।

(क) नीत्शे कौन थे ? वे क्या तलाश रहे थे ? (2)

(ख) 'ईश्वर मर गया है' – नीत्शे ने यह क्यों कहा होगा ? (2)

(ग) कृष्ण के व्यक्तित्व में क्यों 'विराधाभास' लगता है ? (2)

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए 'कर्मण्येवाधिकारस्ते...' (2)

(ङ) कृष्ण की किन विविध भूमिकाओं का उल्लेख है ? (2)

(च) कृष्ण के लिए 'कमल-पत्ते पर पड़ा पानी' क्यों कहा गया है ? (2)

(छ) कृष्ण के व्यक्तित्व से हम क्या सीख सकते हैं ? दो बातों का उल्लेख कीजिए । (2)

(ज) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

Solution

(क) नीत्शे एक प्रसिद्ध दार्शनिक थे । वे ऐसे देवता की तलाश कर रहे थे जो मनुष्य की पहुँच में हो । (1+1)

(ख) नीत्शे को मनुष्य की भाँति कार्य-कलाप करने वाला, जीवन-रस से भरपूर (नाचने-गाने, हँसने-रोने वाला) ईश्वर नहीं मिला, इसलिए उसने कह दिया कि ईश्वर मर गया है । (2)

(ग) कृष्ण के कर्मों में आसक्ति और अनासक्ति दोनों एक साथ दिखाई देती हैं – वे नाचते-गाते भी हैं और योगी भी हैं; काम पूरे मन से करते हैं, फिर भी उससे अलग रहते हैं । इसलिए 'विरोधाभास' लगता है । (1+1)

(घ) इसका आशय है – कर्म करो, किंतु उसके फल की इच्छा मत करो; मनुष्य का अधिकार केवल कर्म पर है, फल पर नहीं । (1+1)

(ङ) गोपालक (ग्वाला), रसिक बिहारी, सारथी, उपदेशक/उपदेष्टा और मार्गदर्शक की भूमिकाओं का उल्लेख है । (2)

(च) क्योंकि कृष्ण अपनी प्रत्येक भूमिका से जुड़ते भी हैं और अगले ही क्षण उससे अलग भी हो जाते हैं – जैसे कमल के पत्ते पर पड़ा पानी उस पर रहकर भी उससे अलग रहता है । (1+1)

(छ) (1) प्रत्येक भूमिका में अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना; (2) कर्म करना परंतु फल की इच्छा न करना, अनासक्त योगी बनना; (3) अहंकार-रहित जीवन जीना । (कोई दो बिंदु) (1+1)

(ज) 'आदमी जैसा देवता' या 'कर्मयोगी कृष्ण' (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य) । (1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 112 of 122

CBSE 2016 · 2/1 · Q1 | CBSE 2016 · 2/2 · Q2 | CBSE 2016 · 2/3 · Q1 asked 3 times 15 marks

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संवाद में दोनों पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं । प्राय: एक व्यक्ति की संवाद में मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है । यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है । मन से हारे दुखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है ।

बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका, उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते हैं । संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है । बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं । पर संवाद की सबसे बड़ी शर्त है एक-दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ । श्रोता उन्हें कान से सुनें और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम-से-कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या ?

सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है जिसमें हम प्राय: अकुशल होते हैं । दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता । हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं । तब दूसरे पक्ष को झुँझलाहट होती है । वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला । रहीम ने ठीक ही कहा था – "सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है ।

लोग तो पेड़-पौधों से, नदी-पर्वतों से, पशु-पक्षियों तक से संवाद करते हैं । राम ने इन सबसे पूछा था – 'क्या आपने सीता को देखा ?' और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी । इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । (1)

(ख) 'संवादहीनता' से क्या तात्पर्य है ? यह स्थिति मौन भागीदारी से कैसे भिन्न है ? (2)

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए – "यह उतावलापन हमें संवाद की आत्मा तक नहीं पहुँचने देता ।" (2)

(घ) दुखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष कब अधिक लाभकर होता है ? क्यों ? (2)

(ङ) सुनना कौशल की कुछ विशेषताएँ लिखिए । (2)

(च) हम संवाद की आत्मा तक प्राय: क्यों नहीं पहुँच पाते ? (2)

(छ) रहीम के कथन का आशय समझाइए । (2)

(ज) राम का उदाहरण क्यों दिया गया है ? (2)

Solution

(क) 'संवाद का महत्त्व' (या संवाद की अनंत संभावना / संवाद-कौशल) – अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य । (1)

(ख) संवादहीनता का तात्पर्य है – परस्पर बोलचाल न होना, संवाद स्थापित ही न हो पाना । मौन भागीदार संवाद में चुपचाप शामिल रहता है और ध्यान से सुनता है, जबकि संवादहीनता में संवाद स्थापित ही नहीं हो पाता । (1+1)

(ग) दूसरे की बात को धैर्यपूर्वक सुने और समझे बिना बोलने की शीघ्रता (उतावलापन) संवाद की गंभीरता को नष्ट कर देती है; हम बात के मूल भाव तक पहुँच ही नहीं पाते । (2)

(घ) जब दूसरा पक्ष अच्छे श्रोता के रूप में हो, तब वह अधिक लाभकर होता है; क्योंकि दुखी व्यक्ति अपनी बात कह देने से हल्का महसूस करता है और उसे आत्मीयता का अनुभव होता है । (कोई दो बिंदु) (1+1)

(ङ) सुनना कौशल में धैर्यवान होना, मन से जुड़ना, दूसरों के अनुभवों का लाभ मिलना और आत्मीयता प्रकट होना जैसी विशेषताएँ हैं । (कोई दो बिंदु) (1+1)

(च) क्योंकि हम अधीर होते हैं, बीच में बात काटते हैं, समाधान सुझाने को उतावले रहते हैं और अपना ही झंडा गाड़ना चाहते हैं; सुनने की सजगता का अभाव रहता है । (कोई दो बिंदु) (1+1)

(छ) रहीम का आशय है कि लोग दूसरों का दुख-दर्द सुनकर उस पर हँसते और उसका मज़ाक बनाते हैं, उसे बाँटकर कम नहीं करते; इसलिए अपना दुख-दर्द सबके सामने कहने का कोई लाभ नहीं । (1+1)

(ज) संवाद की अनंत संभावनाओं को समझाने के लिए – राम ने पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों से भी सीता के बारे में पूछा और एक पक्षी ने ही उन्हें पहली सूचना दी; अर्थात् प्रकृति और पशु-पक्षियों से भी संवाद संभव है । (1+1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 113 of 122

CBSE 2016 · 2/2/1 · Q1 | CBSE 2016 · 2/2/2 · Q2 | CBSE 2016 · 2/2/3 · Q1 asked 3 times 15 marks

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने जहाँ एक ओर शिक्षा और रोज़गार के लिए अनेक अवसर प्रदान किए हैं वहीं हिंदी भाषा के लिए भी । बाज़ार में अधिसंख्य उपभोक्ता चूँकि हिंदी भाषी हैं इसलिए उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन के लिए हिंदी की आवश्यकता है । देश में भी हिंदी का चलन बढ़ा है । निहित राजनीतिज्ञ स्वार्थों को किनारे कर दें तो हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है । हिंदीतर भाषा-भाषी राज्यों, विशेषकर दक्षिण के राज्यों के प्रमुख नगरों में हिंदी प्रसार का एक कारक 'मार्केट' से हिंदी का जुड़ाव भी है । हिंदी का कारवाँ भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बढ़ रहा है । दुबई, रूस और ब्रिटेन में तो पहले से ही हिंदी अनजान भाषा नहीं थी; आज अमेरिका, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी हिंदी व्यवहार में आ रही है । जिन देशों में साम्राज्यवादी दिनों में भारतीय मज़दूर ले जाए गए थे वे आज भी भारतीय मूल का होने पर गर्व करते हैं और हिंदी को पूरे उत्साह के साथ अपनाए हुए हैं । उनमें मॉरिशस, फिज़ी, ट्रिनीडाड, सूरिनाम जैसे देश हैं । वहाँ हिंदी बाज़ार की ही भाषा नहीं, साहित्य और पत्रकारिता की भाषा भी है । उनकी पीड़ा ये है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है । ये लोग बँधुआ मज़दूर के रूप में ले जाए गए थे परंतु आज हमारे सांस्कृतिक दूत हैं । यह ऐसे ही है जैसे हज़ारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों ने या बाद में बौद्धभिक्षुओं ने समुद्रों, पर्वतों को लाँघकर भारतीयता का प्रचार किया था । भारत हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध है तो उसके साथ यह दायित्व भी उसी का है कि विश्वभर में बिखरे हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधनों से समर्थन प्रदान करे ।

(क) उपर्युक्त अनुच्छेद का एक शीर्षक दीजिए । (1)

(ख) मुक्त बाज़ार के किन लाभों का उल्लेख किया गया है ? (2)

(ग) मुक्त बाज़ार से हिंदी को क्या लाभ हुआ है ? क्यों ? (2)

(घ) दक्षिण भारत में हिंदी की क्या स्थिति है ? क्यों ? (2)

(ङ) साम्राज्यवादी दौर में भारतीय विदेशों में क्यों और कहाँ-कहाँ ले जाए गए ? (2)

(च) उन प्रवासियों की पीड़ा क्या है और कहाँ तक ठीक है ? (2)

(छ) "वे बँधुआ मज़दूर आज भारत के सांस्कृतिक दूत हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए । (2)

(ज) हिंदी के अधिक प्रचार-प्रसार के लिए भारत को क्या करना चाहिए – दो सुझाव दीजिए । (2)

Solution

(क) 'विदेश में हिंदी का बढ़ता कारवाँ' (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य) । (1)

(ख) मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने शिक्षा और रोज़गार के अनेक अवसर प्रदान किए हैं तथा अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ है । (1+1)

(ग) अधिकांश उपभोक्ता हिंदी भाषी होने के कारण उत्पाद-विपणन, व्यापार और विज्ञापन में हिंदी की आवश्यकता बढ़ी, जिससे देश में और भारत के बाहर भी हिंदी का चलन बढ़ा । (1+1)

(घ) दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ी है, क्योंकि बाज़ार (मार्केट) से हिंदी का जुड़ाव है । (1+1)

(ङ) साम्राज्यवादी दौर में मज़दूरी करने के लिए भारतीय मज़दूर विदेश ले जाए गए – मॉरीशस, फ़िजी, ट्रिनीडाड, सूरिनाम आदि देशों में । (1+1)

(च) उनकी पीड़ा यह है कि भारत ने अपने भारतवंशियों को भुला दिया है । उनकी यह पीड़ा उचित है, किंतु धीरे-धीरे स्थितियाँ बदल रही हैं । (अन्य विचार भी स्वीकार्य) (1+1)

(छ) बँधुआ मज़दूर के रूप में ले जाए गए ये लोग आज भी हमारी भारतीय भाषा और संस्कृति के प्रचारक हैं – जैसे प्राचीन काल में ऋषि-मनीषियों और बौद्ध भिक्षुओं ने भारतीयता का प्रचार किया था । (2)

(ज) (1) भारत हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता दिखाए (हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाए); (2) विश्वभर में हिंदी भाषियों को बौद्धिक और संसाधनों से समर्थन प्रदान करे । (अन्य विचार भी स्वीकार्य) (1+1)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 114 of 122

CBSE BOARD PAPER

2026 · Q.P. Code 2/1/1

Time: 3 hours
Maximum marks: 80

खंड – क : अपठित बोध

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **10**

संस्कृति और सभ्यता – ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं । सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है । संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है । एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था । इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं । लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया । यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा । आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं । मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है । वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है । भोजन की सामग्री हम सभ्यता के ज़रिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है ।

(i) संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – (A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है (C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है (D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है (1)

(ii) गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है ? (A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता (B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा (C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम (1)

(iii) कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है । कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है । (A) कथन सही है, कारण गलत है । (B) कथन गलत है, कारण सही है । (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है । (D) कथन और कारण दोनों गलत हैं । (1)

(iv) 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए । (1)

(v) 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे ? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए । (2)

(vi) "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है ।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए । (2)

(vii) सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी ? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए ? (2)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 115 of 122

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 8

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को ।

(i) काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? (A) चाँदी की साड़ी के रूप में (B) फूली सरसों के रूप में (C) मैके में आई बेटी के रूप में (D) हमजोली सखी के रूप में (1)

(ii) फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? (A) धूप (B) हवा (C) बेटी (D) चाँदनी (1)

(iii) खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – (A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की (C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की (D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की (1)

(iv) ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? (1)

(v) नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए । (2)

(vi) काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए । (2)

खंड – ख : अभिव्यक्ति और माध्यम

3. निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : (i) जंक फूड का बढ़ता चलन (ii) महानगरों का बढ़ता आकर्षण (iii) बाज़ारों का बदलता स्वरूप 6

4. **(i)** 'रेडियो मूलत: एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है ।' – कैसे ? (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(ii) एंकर-बाइट से क्या तात्पर्य है ? (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(iii) विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(iv) समाचार और फ़ीचर में क्या अंतर है ? उल्लेख कीजिए । (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(v) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं ? (लगभग 40 शब्द) 2

5. **(i)** 'अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ मजबूत होती है ।' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 80 शब्द) 4

OR

(ii) कहानी के पात्रों के नाट्य रूपांतरण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 80 शब्द) 4

OR

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 116 of 122

(iii) रेडियो नाटक के लिए कहानी का चयन करते समय किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों ? (लगभग 80 शब्द) 4

खंड – ग : आरोह तथा वितान

6. पठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए : 5

भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।

(i) काव्यांश में 'काली सिल' उपमान किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ? (A) अंधकार से युक्त प्रकृति (B) अँधेरे से युक्त आसमान (C) अंधकार से युक्त पृथ्वी (D) रात्रि का अंधकार

(ii) 'बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से' – पंक्ति का सही अर्थ है : (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है । (B) भोर का आकाश काला है । (C) भोर में केसर को धोया गया है । (D) भोर में काली सिल को धोया गया है ।

(iii) इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र प्रस्तुत किया है ? (A) छायाचित्र (B) रेखाचित्र (C) शब्दचित्र (D) भित्तिचित्र

(iv) कवि द्वारा भोर को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहना प्रतिपादित करता है कि भोर का नभ : (A) अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है । (B) प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा रहा है । (C) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है । (D) नए परिवर्तनों व आयामों का प्रतीक है ।

(v) 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह' – का वर्णन किस अनुभूति से संबंधित है ? (A) निर्मलता और उज्ज्वलता (B) कृत्रिमता और पवित्रता (C) कोमलता और सुंदरता (D) विस्मय और रहस्य

7. **(i)** "सब घर एक कर देना" – पंक्ति का बच्चों और कविता के संदर्भ में क्या औचित्य है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए । (लगभग 60 शब्द) 3

OR

(ii) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की ? तर्क सहित उत्तर लिखिए । (लगभग 60 शब्द) 3

OR

(iii) 'तुलसीदास का युग बेरोज़गारी से त्रस्त था' – 'कवितावली' के संदर्भ में इस कथन को सिद्ध कीजिए । (लगभग 60 शब्द) 3

8. **(i)** 'पतंग' कविता में कवि ने भादो के समाप्त होने के बाद प्रकृति में आए परिवर्तनों को कैसे अभिव्यक्त किया है ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(ii) 'बादल राग' कविता में 'जीवन का पारावार' किसे कहा गया है और क्यों ? (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(iii) 'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में 'भाषा में पेंच कसना' के आशय को स्पष्ट कीजिए । (लगभग 40 शब्द) 2

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 117 of 122

9. पठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए : 5

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी । निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी । आकाश में तारे चमक रहे थे । पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं । आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी । अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे ।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी । गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़, 'हरे राम ! हे भगवान !' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी । बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे । पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी ।

कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है । वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे । संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे ।

(i) अँधेरी रात चुपचाप आँसू क्यों बहा रही थी ? (A) जंगली पशुओं की डरावनी आवाज़ के कारण (B) प्रकृति की असमर्थता व विवशता के कारण (C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण (D) रात में व्याप्त अंधकार और सन्नाटे के डर के कारण

(ii) स्तंभ मिलान : क. प्रकाश का नाम नहीं, ख. तारे की ज्योति और शक्ति का शेष होना, ग. चित न होना — (i) हार न मानना (ii) आशा और जिजीविषा का अभाव (iii) पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना । (A) क-(iii), ख-(i), ग-(ii) (B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i) (C) क-(i), ख-(ii), ग-(iii) (D) क-(i), ख-(iii), ग-(ii)

(iii) रात्रि के भयावहपन का उल्लेख किस प्रभाव को दर्शाने के लिए किया गया है ? (A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु (B) निस्तब्धता में मानवीय पीड़ा की झलक दिखाने हेतु (C) रात्रि में भी गाँव में हलकी चहल-पहल बताने हेतु (D) रात में बच्चों के उत्साह व निडरता का प्रदर्शन करने हेतु

(iv) गद्यांश में इनमें से किसका उल्लेख नहीं मिलता है ? (A) रात्रि की निस्तब्धता (B) तारों की भावुकता (C) उत्तेजना युक्त उत्साह (D) आहों का हृदय में दबना

(v) 'पेचक की डरावनी आवाज़' का प्रतीकार्थ है : (A) जीव-जंतुओं की सक्रियता (B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट (C) पक्षियों की स्वाभाविक ध्वनि (D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता

10. **(i)** महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपने संबंध को किस रूप में महसूस किया ? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर लिखिए । (लगभग 60 शब्द) 3

OR

(ii) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किस प्रकार किया गया है ? (लगभग 60 शब्द) 3

OR

(iii) श्रम विभाजन किसे कहते हैं ? सभ्य समाज के लिए इसकी क्या आवश्यकता है ? (लगभग 60 शब्द) 3

11. **(i)** 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर भगत जी के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(ii) 'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर लिखिए कि पाठ में शिरीष के फूल की तुलना किससे और क्यों की गई है ? (लगभग 40 शब्द) 2

OR

(iii) "'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता ।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' में 'दासता' को किन व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है ? (लगभग 40 शब्द) 2

12. **(i)** "'सिल्वर वैडिंग' कहानी वर्तमान युग में बदलते हुए जीवन मूल्यों की कहानी है ।" स्पष्ट कीजिए कि ये जीवन मूल्य कौन-से हैं और क्यों बदल रहे हैं । (लगभग 100 शब्द) 5

OR

(ii) "यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है । पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे ।" – 'जूझ' पाठ से उद्धृत इस कथन के संदर्भ में ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए । (लगभग 100 शब्द) 5

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 118 of 122

OR

(iii) लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए । (लगभग 100 शब्द) 5

Solutions · CBSE 2026 · 2/1/1

Q1

(i) **(B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है ।** – सभ्यता बाहरी उन्नति है, जबकि संस्कृति भीतरी उन्नति है; इसलिए वह अधिक सूक्ष्म है ।

(ii) **(D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम ।** – सभ्यता वह गुण है जिससे मनुष्य घर, खेती, कपड़े, रेल-मोटर जैसी बाहरी उन्नति करता है ।

(iii) **(C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है ।** – दया, ममता, परोपकार और कला का आनंद गद्यांश में संस्कृति के गुण बताए गए हैं; ये मानवीय मूल्य और कौशल ही हैं, इसलिए कारण कथन को ठीक समझाता है ।

(iv) सभ्यता मनुष्य की **बाहरी उन्नति** है और संस्कृति **भीतरी उन्नति** । जैसे – मोटर और मकान सभ्यता हैं, जबकि मोटर बनाने की कला और मकान बनाने की रुचि संस्कृति है ।

(v) सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं । आवश्यक वस्तुओं और सुविधाओं का निर्माण सभ्यता है और उनके उपयोग का ढंग संस्कृति । उदाहरण – भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है, किंतु भोजन तैयार करने और खाने की कला संस्कृति है ।

(vi) संस्कृति मनुष्य की भीतरी उन्नति का गुण है । इसी से मनुष्य दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता प्राप्त करता है । ये गुण शरीर के नहीं, मन और आत्मा के हैं; इसलिए संस्कृति आत्मा का गुण है ।

(vii) **पूर्व की स्थिति** – मनुष्य असभ्य अवस्था में था; वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में रहता था, कंद-मूल खाकर गुज़ारा करता था और निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल, जानवरों की खाल पहनता था ।

परिणाम – वह खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर पहनने लगा; आगे चलकर रेल, मोटर, हवाई जहाज़ जैसे साधन बने ।

Q2

(i) **(C) मैके में आई बेटी के रूप में ।** – 'मैके में आई बेटी की तरह मगन है' पंक्ति में धूप को मायके आई प्रसन्न बेटी जैसा चित्रित किया गया है ।

(ii) **(A) धूप ।** – चाँदी की साड़ी पहने धूप ही फूली सरसों से लिपट गई है, जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हों ।

(iii) **(B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की ।** – अगली पंक्ति में 'दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के' कहा गया है; यही स्वर सारंगी की तरह लगते हैं ।

(iv) काल (समय) की तुलना **कौए** से की गई है; आधार है **काला वर्ण** (रंग की समानता) – कौआ ठूँठ पर गुमसुम बैठा जैसे दिन ढलते देख रहा हो ।

(v) नदी में पड़ता निर्मल आकाश का प्रतिबिंब ऐसा लगता है मानो शिव का नंदी नदी में पानी पी रहा हो; और आकाश धरती के ऊपर सुध-बुध खोकर (बिसुध) खड़ा है ।

(vi) दूर तक खेतों में लहलहाती पीली सरसों और उस पर चाँदी-सी चमकती धूप; खेतों पर उड़ते पक्षियों के झुंड का मधुर कलरव; रंग-बिरंगे फूलों की सुगंध से महकती दिशाएँ; कल-कल बहती नदी और उसमें झाँकता निर्मल आकाश – यह सब ग्रामीण प्रकृति को अत्यंत मनोहर बना देता है ।

Q3

जंक फूड का बढ़ता चलन

आज बच्चे हों या युवा, सबकी पसंद पिज़्ज़ा, बर्गर, चाउमीन और कोल्ड ड्रिंक बन गई है । व्यस्त जीवन-शैली, दोनों माता-पिता का कामकाजी होना, आकर्षक विज्ञापन और ऑनलाइन डिलीवरी ने जंक फूड को घर-घर पहुँचा दिया है । यह झटपट तैयार होता है और स्वाद में चटपटा लगता है, इसलिए इसका चलन तेज़ी से बढ़ रहा है ।

परंतु इसका दुष्प्रभाव गंभीर है । अधिक नमक, चीनी और वसा वाला यह भोजन मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और पेट के रोगों को जन्म देता है । इसमें पोषक तत्व नहीं होते, इसलिए बच्चे कमज़ोर और आलसी हो जाते हैं ।

आवश्यक है कि हम घर के ताज़े, संतुलित भोजन, फल और मोटे अनाज को अपनाएँ । विद्यालयों में जंक फूड पर रोक लगे और माता-पिता स्वयं उदाहरण बनें । स्वाद से अधिक स्वास्थ्य को महत्त्व देना ही समझदारी है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 119 of 122

(विषय-वस्तु 4 · भाषा 1 · प्रस्तुति 1)
अन्य विषयों के बिंदु – (ii) महानगरों का आकर्षण: रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, आधुनिक जीवन; दुष्परिणाम: भीड़, प्रदूषण, झुग्गियाँ, गाँवों का खाली होना; उपाय: गाँवों-कस्बों का विकास । (iii) बाज़ारों का बदलता स्वरूप: हाट और दुकानों से मॉल और ऑनलाइन बाज़ार तक; सुविधा और विविधता, परंतु उपभोक्तावाद, दिखावा और छोटे दुकानदारों पर संकट ।

Q4(i) रेडियो पर समाचार और कार्यक्रम एक निश्चित क्रम में, एक के बाद एक प्रसारित होते हैं; श्रोता अख़बार की तरह आगे-पीछे जाकर अपनी पसंद का अंश नहीं सुन सकता । कार्यक्रम का समय और अवधि निश्चित होती है, श्रोता के अनुसार परिवर्तन संभव नहीं और तत्काल प्रतिक्रिया या संवाद की गुंजाइश नहीं होती ।

Q4(ii) एंकर-बाइट टी.वी. पर ख़बर प्रसारित करने का एक चरण है । इसमें एंकर ख़बर पढ़ता है और साथ में घटना के प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों के कथन (बाइट) दिखाए जाते हैं । इससे ख़बर की पुष्टि होती है और उसे प्रामाणिकता मिलती है ।

Q4(iii) सामान्य लेखन की भाषा-शैली बोधगम्य, सरस और भावात्मक होती है तथा उसमें बोलचाल के शब्दों का प्रयोग होता है । विशेष लेखन की भाषा-शैली औपचारिक, सुस्पष्ट और विषय-केंद्रित होती है; उसमें उस क्षेत्र (खेल, व्यापार, विज्ञान आदि) की विशिष्ट तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है ।

Q4(iv) (1) समाचार तात्कालिक घटनाओं से संबंधित तथ्यात्मक लेखन है, फ़ीचर सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है । (2) समाचार का उद्देश्य सूचना देना है, फ़ीचर सूचना के साथ शिक्षित और मनोरंजन भी करता है । (3) समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है और उसमें पत्रकार की राय नहीं होती; फ़ीचर की शैली निश्चित नहीं होती और उसमें लेखक की राय हो सकती है; समाचार की शब्द-सीमा निश्चित होती है, फ़ीचर की नहीं ।

Q4(v) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट विशेष रिपोर्ट का एक प्रकार है । इसमें किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहन छानबीन और विश्लेषण करके उसके अहम पहलुओं को सामने रखा जाता है और पाठक को उसकी विस्तृत तथा व्यापक जानकारी दी जाती है ।

Q5(i) अप्रत्याशित (नए) विषयों पर लिखने से – (1) हमारी **सृजनात्मक शक्ति** विकसित होती है, क्योंकि रटी-रटाई सामग्री काम नहीं आती । (2) **मौलिक अभिव्यक्ति** का अवसर मिलता है; हम अपने विचार अपने ढंग से रखना सीखते हैं । (3) तर्क, विचार और उदाहरणों से अपनी बात को पुष्ट करने की क्षमता बढ़ती है । (4) कम समय में विचारों को संकलित कर सुसंगत ढंग से प्रस्तुत करने का अभ्यास होता है, जिससे भाषा पर अच्छी पकड़ बनती है और लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है ।

Q5(ii) (1) कहानी के पात्रों की क्रियात्मकता (उनके कार्य और स्वभाव) नाटक के पात्रों से मेल खाए; पात्रों का चरित्र स्पष्ट रूप से उभरे । (2) पात्रों की भाव-भंगिमाओं, वेशभूषा और उनके तौर-तरीकों का उचित ध्यान रखा जाए । (3) पात्रों का अभिनय और संवाद रंगमंच के अनुरूप हों, संवाद छोटे, सरल और पात्रानुकूल हों । (4) पात्रों के मानसिक द्वंद्व को ध्वनि, प्रकाश, स्वगत कथन और वॉयस ओवर द्वारा अभिव्यक्त किया जाए ।

Q5(iii) **ध्यान रखने योग्य बातें** – (1) कहानी केवल घटना-प्रधान न हो, उसमें संवाद और ध्वनि के लिए अवसर हों; (2) उसकी अवधि बहुत लंबी न हो (प्रायः 15–30 मिनट); (3) पात्रों की संख्या सीमित हो (5–6 से अधिक नहीं) ।
क्यों – रेडियो में दृश्य नहीं होते, केवल ध्वनि होती है; इसलिए श्रोताओं की रुचि बनाए रखना ज़रूरी है । लंबी अवधि तक श्रोता जुड़े नहीं रह पाते और अधिक पात्र होने पर केवल आवाज़ से उन्हें पहचानना कठिन हो जाता है ।

Q6 (i) **(B) अँधेरे से युक्त आसमान ।** – भोर के अँधेरे से भरे आकाश को कवि ने 'बहुत काली सिल' कहा है ।
(ii) **(A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है ।** – काली सिल पर ज़रा-सा लाल केसर धुलने का अर्थ है अँधेरे आकाश में लालिमा का फैलना ।
(iii) **(C) शब्दचित्र ।** – कवि ने शब्दों से उषा का दृश्य ऐसे उपमानों में खींचा है कि वह आँखों के सामने चित्र जैसा उभर आता है ।
(iv) **(C) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है ।** – राख से लिपे गीले चौके का मटमैला-सफ़ेद रंग और भोर के आकाश का हलका नीला रंग मिलकर यह चित्र बनाते हैं ।
(v) **(A) निर्मलता और उज्ज्वलता ।** – नीले जल में हिलती गोरी देह की झिलमिल आकाश की स्वच्छता और चमक को प्रकट करती है ।
(कविता : 'उषा', शमशेर बहादुर सिंह)

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 120 of 122

Q7(i) बच्चे खेलते समय अपने-पराए, घर-बाहर का भेद भूलकर सब घरों को एक कर देते हैं; कविता भी शब्दों का ऐसा खेल है जो सबको एकता के सूत्र में बाँध देती है । (1) बच्चे भेदभाव नहीं समझते, कविता भी समाज को जोड़ती है । (2) बच्चे सरल हृदय होते हैं, कविता भी अनुभूति से जन्मती है और कोमल भावों की अभिव्यक्ति है । (3) बच्चों के खेल की कोई समय-सीमा नहीं होती; कविता भी देश, काल और जड़-चेतन की सीमाओं से परे होती है ।

Q7(ii) यह कविता ऊपर से क्रूरता का चित्र है, परंतु उसके मूल में **करुणा** है । कवि मीडिया की **क्रूरता** दिखाता है – कार्यक्रम संचालक अपाहिज से 'आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है' जैसे संवेदनहीन प्रश्न पूछकर उसकी पीड़ा को कुरेदता है और उसे रुलाने की कोशिश करता है, ताकि दर्शकों की भावुकता से व्यावसायिक लाभ कमाया जा सके । अपाहिज की विवशता और अपनी पीड़ा व्यक्त न कर पाने की स्थिति पाठक में करुणा जगाती है । अतः कवि क्रूरता का चित्रण करके करुणा उत्पन्न करता है । (किसी एक पक्ष का तर्कपूर्ण उत्तर स्वीकार्य)

Q7(iii) 'कवितावली' में तुलसीदास बताते हैं कि उस समय किसान के पास खेती नहीं, भिखारी को भीख नहीं, बनिए को व्यापार नहीं और नौकर को नौकरी (चाकरी) नहीं थी । जीविका के साधनों के अभाव में लोग चिंतित होकर पूछते थे – "कहाँ जाई, का करी ?" भूख से बेहाल लोग ऊँचे-नीचे, नैतिक-अनैतिक कर्म करते थे और पेट की आग बुझाने के लिए अपनी संतान तक बेचने को विवश थे । शासक वर्ग प्रजा के प्रति उदासीन था ।

Q8(i) भादो की वर्षा समाप्त होने पर शरद ऋतु आती है । आसमान से बादलों का साम्राज्य समाप्त हो जाता है, आकाश स्वच्छ और मुलायम हो जाता है, दिशाएँ उज्ज्वल हो जाती हैं और सवेरा खरगोश की आँखों जैसा लाल-चमकीला हो जाता है । वातावरण उमंग और उल्लास से भर जाता है और बच्चे पतंग उड़ाने लगते हैं ।

Q8(ii) 'जीवन का पारावार' **बादल** को कहा गया है, क्योंकि बादल गरमी से तपती धरती पर वर्षा करके फसलों और पेड़-पौधों को नया जीवन देता है; उसमें जीवन का अपार सागर भरा है । वह भूख-प्यास से त्रस्त लोगों और सर्वहारा वर्ग में नवजीवन और क्रांति की आशा का संचार करता है ।

Q8(iii) 'भाषा में पेंच कसना' का आशय है – बात को चमत्कारिक बनाने के लिए भाषा के साथ ज़रूरत से ज़्यादा प्रयोग करना; अनावश्यक अलंकार, बिंब और मुहावरे भरकर भाषा को जटिल बना देना । इससे सीधी-सरल बात का अर्थ ही खो जाता है, जैसे पेंच को ज़्यादा कसने से उसकी चूड़ी मर जाती है ।

Q9 (i) **(C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण ।** – रात का चुपचाप आँसू बहाना गाँव में फैली महामारी से पीड़ित लोगों की लाचारी पर दुख का चित्रण है ।
(ii) **(B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i) ।** – 'प्रकाश का नाम नहीं' आशा और जिजीविषा के अभाव को, 'तारे की ज्योति और शक्ति का शेष होना' पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाने की विवशता को और 'चित न होना' हार न मानने को दर्शाता है ।
(iii) **(A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु ।** – सन्नाटा, सियारों का क्रंदन, कराहना और रोना, ये सब महामारी की भयानकता दिखाते हैं ।
(iv) **(C) उत्तेजना युक्त उत्साह ।** – गद्यांश में निस्तब्धता, तारों की भावुकता और दबी हुई आहों का उल्लेख है; उत्साह का नहीं ।
(v) **(B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट ।** – पेचक (उल्लू) की डरावनी आवाज़ को लोग अशुभ मानते हैं; यहाँ वह आने वाली मृत्यु का संकेत है ।
(पाठ : 'पहलवान की ढोलक', फणीश्वरनाथ रेणु)

Q10(i) महादेवी और भक्तिन का संबंध स्वामी-सेवक का नहीं, आत्मीय संबंध था । (1) भक्तिन सेविका होते हुए भी स्वामिनी पर अधिकार-भाव रखती थी और उनकी बात न मानकर अपने ढंग से काम करती थी । (2) वह महादेवी के भ्रमण की एकांत साथिन थी और जेल तक साथ जाने को तैयार थी । (3) लेखिका उसे अपने व्यक्तित्व का ज़रूरी अंश और परिवार की आत्मीय सदस्या मानती थीं; वह उनकी स्नेहपूर्ण हितैषी थी, इसलिए उसे हटाना असंभव था ।

Q10(ii) सूखे के समय गाँव के लड़कों की 'इंदर सेना' इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए घर-घर जाकर पानी माँगती थी और लोग अपने कठिनाई से बचाए हुए पानी को त्याग और दान समझकर उन पर डालते थे । लेखक का वैज्ञानिक मन इसे पानी की निर्मम बर्बादी

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 121 of 122

और अंधविश्वास मानता था । परंतु जीजी का तर्क था कि त्याग और दान से ही फल मिलता है । वैज्ञानिक दृष्टिकोण होते हुए भी सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव और जीजी के प्रति स्नेह के कारण लेखक को परंपरागत मान्यता स्वीकार करनी पड़ी – यही द्वंद्व है ।

Q10(iii) **श्रम विभाजन** – मानवोपयोगी कार्यों का लोगों की रुचि, योग्यता और दक्षता के आधार पर वर्गीकरण (बँटवारा) श्रम विभाजन है । (1)

आवश्यकता – सभ्य समाज में कार्य-कुशलता के लिए, कार्यक्षमता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए तथा आर्थिक समृद्धि के लिए श्रम विभाजन आवश्यक है । आंबेडकर के अनुसार यह विभाजन स्वाभाविक रुचि पर आधारित होना चाहिए, जन्म या जाति पर नहीं । (2)

Q11(i) भगत जी (चूरन वाले) संयमी और संतोषी व्यक्ति हैं । वे संग्रह, तृष्णा, लोभ और धन-संचय से दूर रहते हैं; छह आने से अधिक की कमाई नहीं करते । बाज़ार का आकर्षण उन्हें नहीं लुभाता; वे केवल ज़रूरत का सामान (जीरा, काला नमक) खरीदते हैं । ऐसे लोग बाज़ार को सार्थकता देते हैं ।

Q11(ii) शिरीष की तुलना **कालजयी अवधूत (संन्यासी)** से की गई है । जैसे अवधूत सुख-दुख में समान रहता है, वैसे ही शिरीष भीषण गरमी और लू में भी हरा-भरा और फूलों से लदा रहता है; वह आठों याम अपनी धुन में मस्त, बेपरवाह, सरस और मादक बना रहता है ।

Q11(iii) आंबेडकर के अनुसार दासता केवल कानूनी गुलामी नहीं है । जब कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है, अपनी शक्ति का सक्षम और प्रभावशाली प्रयोग करने की स्वतंत्रता नहीं होती और इच्छानुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती, तो वह भी दासता है ।

Q12(i) **बदलते जीवन-मूल्य** – कहानी में यशोधर बाबू पुरानी परंपराओं, सादगी और सामाजिक संबंधों के प्रतीक हैं, जबकि उनके बच्चे और पत्नी आधुनिक दिखावटी जीवन-शैली अपना चुके हैं । (1) आधुनिकता और पारंपरिक संस्कारों में टकराव है – सिल्वर वैडिंग की पार्टी, केक काटना, अंग्रेज़ी रीति-रिवाज़ यशोधर बाबू को 'समहाउ इंप्रॉपर' लगते हैं । (2) मानवीय मूल्य हाशिए पर हैं; बच्चे पिता की सलाह की परवाह नहीं करते, रिश्तों में अलगाव है । (3) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभुत्व और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है ।

बदलने के कारण – व्यक्तिवादी सोच, वैचारिक मतभेद और पीढ़ी-अंतराल; औद्योगीकरण और शहरीकरण; पाश्चात्य संस्कृति के प्रति बढ़ता आकर्षण और उपभोक्तावाद । इसलिए यशोधर बाबू जैसे लोग अपने ही घर में अकेले पड़ जाते हैं ।

Q12(ii) यह कथन आनंद (लेखक) का है, जो पढ़ना चाहता है जबकि उसका पिता उसे खेती में लगाए रखना चाहता है । इसमें ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति झलकती है – (1) उनकी कृषि-कार्य में रुचि कम या समाप्त हो रही है, क्योंकि खेती कठिन श्रम-साध्य है और उससे अपेक्षित आय नहीं होती । (2) उन्हें लगता है कि खेती से आर्थिक संपन्नता के सपने पूरे नहीं हो सकते । (3) वे अपना जीवन-स्तर बेहतर करना चाहते हैं; शिक्षित होकर नौकरी के माध्यम से अच्छा जीवन जीने की लालसा रखते हैं । (4) शहरी जीवन का आकर्षण और कठोर शारीरिक परिश्रम के स्थान पर मानसिक श्रम से आगे बढ़ने की इच्छा उन्हें गाँव और खेती से पलायन की ओर ले जाती है । आनंद का संघर्ष दिखाता है कि शिक्षा ही उन्हें इस 'गड्ढे' से निकालने का रास्ता है ।

Q12(iii) (1) मुअनजो-दड़ो नगर-नियोजन की अनूठी मिसाल है, जबकि आज के शहरों में नियोजन के नाम पर अराजकता है । (2) वहाँ की योजना ग्रिड प्लान पर आधारित थी – सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं; आज के बड़े शहरों की बसावट ऐसी है कि उनके स्वयं विकसित होने का अवकाश नहीं । (3) इमारतें खंडहर बन चुकी हैं, फिर भी सड़कों और गलियों का विस्तार स्पष्ट है; आज की 'सेक्टर-मार्का' कॉलोनियों में आड़ा-सीधा नियोजन तो है, पर रहन-सहन नीरस है । (4) वहाँ जल की उपलब्धता और ढकी हुई नालियों द्वारा निकासी की समुचित व्यवस्था थी, जबकि आज जल-प्रबंधन और जल-निकासी का अभाव दिखता है । (5) मकानों के दरवाज़े मुख्य सड़क की ओर न खुलकर पीछे की गलियों में खुलते थे, जिससे दुर्घटनाएँ कम होती थीं; आज अधिकांश दरवाज़े मुख्य सड़क पर खुलते हैं । इस प्रकार लेखक प्राचीन नगर-योजना को आज से अधिक व्यवस्थित मानता है ।

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 122 of 122

Notes Bazar

All the best for your boards!

Complete chapter-wise notes, NCERT solutions and more at **notesbazar.in**